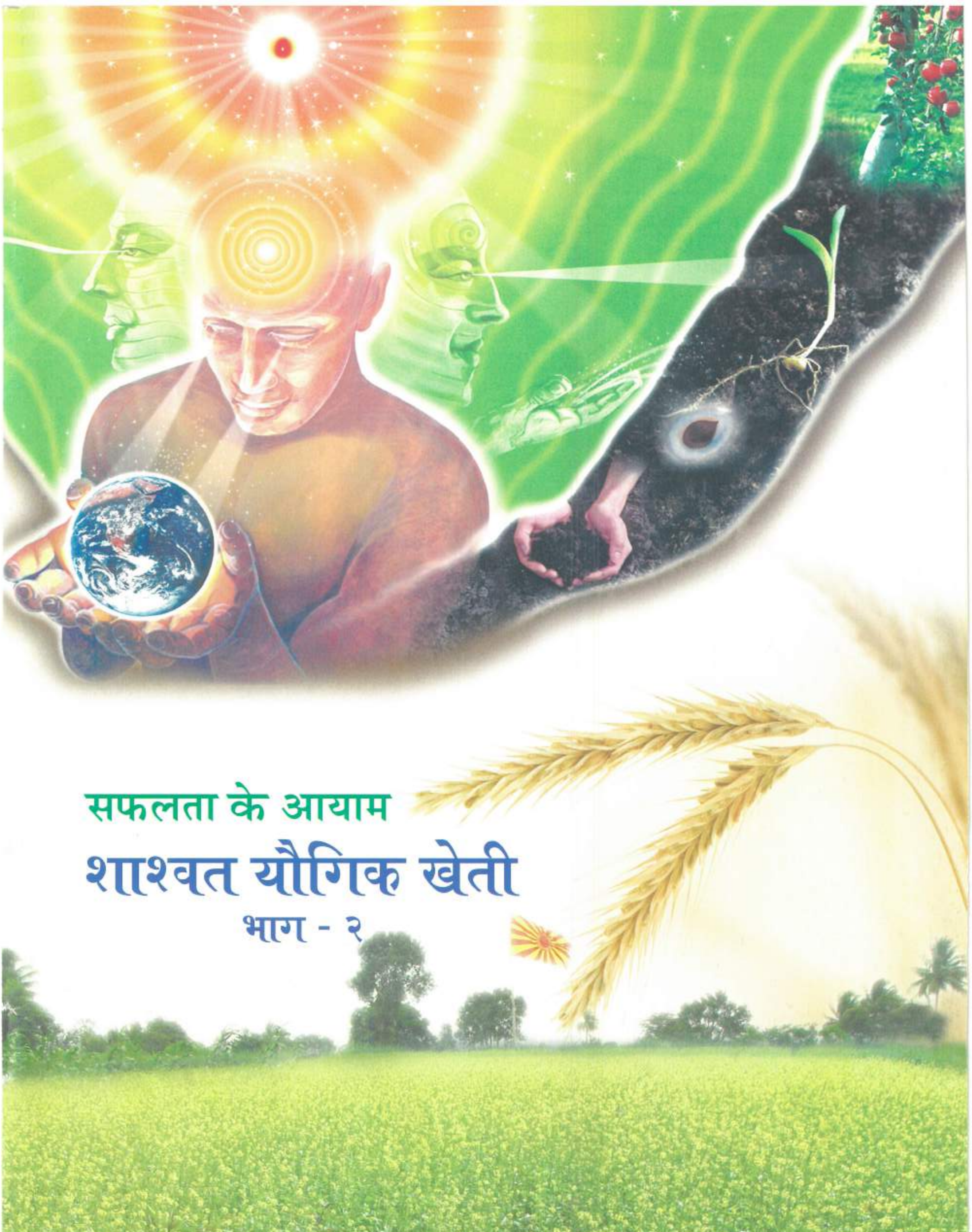

सफलता के आयाम

शाश्वत यौगिक खेती

भाग - २

शाश्वत यौगिक खेती के प्रेरणास्त्रोत

18 फरवरी, 2008 के दिन परमकृषक परमपिता परमात्मा तथा विश्वकर्मा अव्यक्त पिताश्री ब्रह्माबाबा ने आदरणीय दादी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से ग्राम विकास प्रभाग के भाई बहनों को शाश्वत यौगिक खेती के संदर्भ में प्रेरणा देते हुए कहा कि...

"कोई नवीनता कर रहे हैं ना? कर रहे हैं कोई नवीनता? क्या कर रहे हैं? कोई भी बतायें (प्रभाग की अध्यक्षा मोहिनी बहन जी ने सुनाया कि योग के प्रयोग के साथ जैविक खेती का प्लैन बनाया है) अच्छा है, क्योंकि आजकल जो खेती से निकलता है, उसमें भी प्रॉब्लम्स हैं। तो अच्छा कार्य किया है। एक अपना फायदा योग करेंगे और दूसरा जनता की दुआयें मिलेंगी तो अच्छा कर रहे हैं। उमंग-उत्साह से कर रहे हैं और करते रहना। अच्छा-मुबारक हो। अच्छा..."

सफलता के आयाम (किसानों की जुबानी)
शाश्वत यौगिक खेती - भाग 2

भूमिका

किसान भाई बहनों, चाहते हो सुख-शान्ति
तो अपनाओ सेन्द्रिय खेती
सेन्द्रियता में ही रहती है जीवाणुओं की बस्ती
दोनों मिलकर ही मिट्टी को जिन्दा बनाती
यहाँ ही योग लगाकर भरना है शक्ति
तब ही होगी सात्विक और पौष्टिक अनाज की निर्मिती
खुद भी खाओ औरों को भी खिलाओ, यही बनाओ नीति
चिंता छोड़ो, आगे बढ़ो, भगवान है अपना साथी

प्रस्तावना

ग्राम विकास प्रभाग द्वारा समय-प्रति-समय गाँव-गाँव में जाकर स्वच्छता, साक्षरता, व्यसनमुक्ति, अन्धश्रद्धा निर्मूलन विषय पर लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास होता आया है। आज किसानों के जीवन में तथा समाज के हर क्षेत्र में नई-नई समस्यायें बढ़ रही हैं परन्तु हर समस्या कुछ-न-कुछ सिखाकर ही जाती है इसलिए हमें उमंग-उत्साह में रहकर हर समस्या के पीछे क्या कारण है और उसका निवारण कैसे करें, इस पर जागृत रहना आवश्यक है। वर्तमान खेती करने में सबसे ज्यादा समस्याएँ प्रकृति के द्वारा ही निर्माण हो रही हैं और किसान आने वाली परिस्थितियों में स्वयं की स्थिति को सुरक्षित रखने में कमजोर महसूस कर रहा है। उसकी मानसिक शक्ति बहुत ही कम हो गई है। परिस्थिति माना दूसरों के द्वारा आने वाली स्थिति। वह जैसे आती है वैसे ही चली भी जाती है परन्तु हमें अपना मानसिक संतुलन नहीं बिगाड़ना है क्योंकि ईश्वर ने हमको यह बताया है कि स्वयं की अच्छी स्थिति ही परिस्थिति से निपट सकती है और स्वयं की स्थिति अच्छी बनाने के लिये हमें रोज़ कुछ समय योग अभ्यास करना बहुत आवश्यक है। योग अभ्यास द्वारा मिलने वाली शक्ति से हम अपने मनोविकारों को नियंत्रित कर सकते हैं क्योंकि हर समस्या का मूल कारण कोई न कोई मनोविकार ही तो है। क्रोध, ईर्ष्या, घृणा, लोभ, मोह ये सब मनोविकार हैं जिनके कारण परिस्थितियाँ निर्माण हो रही हैं। प्रकृति को भी हमने दु:ख दिया है इसलिए प्रकृति भी हमसे नाराज़ हो गई है। अब हमें प्रकृति को भी राज़ी करना है तो योग अभ्यास द्वारा पहले स्वयं में परिवर्तन करना जरुरी है। खेती में फसल की रक्षा करने के लिए भी पहले प्रकृति की रक्षा करना आवश्यक है तब प्रकृति खुद फसल की रक्षा करेगी इसलिए हमारा सुधरना जरूरी है।

आज खेती में उपज की तुलना में खर्चा बहुत हो रहा है और अगर खर्चा कम करना है तो प्रकृति के नियम अनुसार खेती में प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करना आवश्यक है। वर्तमान समय इस विधि को अमल में लाना थोड़ा मुश्किल लगता होगा परन्तु ध्यान के अभ्यास से हम अपने मनोबल को बढ़ायेंगे तो ये सब बातें सहज लगेंगी। हम शान्ति से, प्रेम से, बड़े उमंग-उत्साह से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके खेती करते हैं तो प्राप्त होने वाला अनाज भी सात्विक और पौष्टिक ही मिलेगा जिसकी वर्तमान में सबको बहुत ही आवश्यकता है। आप सभी परिचित हैं कि कैसे केमिकल्स के अधिक इस्तेमाल से प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है और शरीर की बीमारियाँ भी बढ़ रही हैं। आज किसान अपनी मत से, अपनी-अपनी समस्या का हल खुद ढूँढ़ रहा है, साथ ही साथ दूसरों को दोषी समझने लगा है। ऐसे में आवश्यकता है किसानों के संगठित होने की और संगठन के लिये आवश्यकता है सत्यता, ईमानदारी, विश्वास, धैर्य आदि मूल्यों की, जो आध्यात्मिकता से ही प्राप्त

होते हैं। संगठन में ही अनुभवों की लेन-देन होती है और कर्म करने में विश्वास बढ़ता है। संगठन द्वारा खेती के बारे में नवीनता को समझ सकते हैं और संगठन के द्वारा ही हम प्राप्त अनाज का सही मूल्य (दाम) प्राप्त कर सकते हैं। समूह में एक-दूसरे के सहयोगी बन सकते हैं। ध्यान के माध्यम से ही आध्यात्मिक ऊर्जा मिलती है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में हजारों किसान भाई-बहनें प्रत्यक्ष रूप में आध्यात्मिकता को अपनाकर संगठित रूप से चल रहे हैं। समय प्रमाण हर एक को अपने मनोबल को बढ़ाकर उमंग-उत्साह में रहना है। चिड़चिड़ापन नहीं करना है, प्रकृति हमारी सहयोगी बने, समय पर आवश्यक वर्षा हो, खेती में खर्चा कम हो, उत्पादन भी गुणवत्ता वाला हो, हमारा एक संगठन हो जिसमें अनुभवों की लेन-देन हो, नवीनता के बारे में जानकारी मिले, उत्पादन को उचित दाम मिले। इसके लिए जरूरत है पहले स्वयं को सशक्त बनाने की। अत: राजयोग की विधि को अपनायें और स्वयं के साथ खेती को भी सशक्त बनायें।

सहज राजयोग के प्रयोग द्वारा प्रकृति के पांचों तत्वों को सहयोगी बनाकर यौगिक खेती/जैविक खेती में सफलता प्राप्त करने के अनुभव जो अत्यन्त प्रेरणादायक हैं, वे इस शाश्वत यौगिक खेती पुस्तक के दूसरे भाग में ''सफलता के आयाम'' नाम से लिखे जा रहे हैं।

भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के हजारों राजयोगी किसान भाई बहिनें इस प्रकार की यौगिक खेती द्वारा पौष्टिक एवं स्वादिष्ट अन्न, फल आदि तैयार कर रहे हैं। इस पुस्तक में किसानों के ऐसे अनेक हृदयस्पर्शी अनुभवों को दर्शाते हुए प्रकृति को अपना सहयोगी बनाने, बीज वा धरती माँ को शक्तिशाली, निरोगी बनाने की भिन्न-भिन्न विधियां बताई गई हैं।

आशा है सभी प्रकृति प्रेमी, कृषि वैज्ञानिक तथा कृषक भाई बहिनें इस पुस्तक को ध्यान से पढ़कर योग के प्रयोग करने की यथार्थ विधि को स्वयं भी अपनायेंगे तथा अन्य किसानों को भी इसकी प्रेरणा देकर अपनी-अपनी खेती में 100 प्रतिशत सफलता प्राप्त करके अपने देश को धन-धान्य सम्पन्न बनायेंगे।

इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. सरला
बी.के. राजू

जैसा अन्न वैसा मन

संसार में हरेक मनुष्य चाहता है कि मेरा जीवन सात्विक हो, मैं अच्छे कार्य करूँ, महान बनूँ और मेरे जीवन में शान्ति बनी रहे, परन्तु इच्छा होना एक बात है और उस इच्छा को साकार करने के लिए पुरुषार्थ करना दूसरी बात है। देखा गया है कि लोग चाहते कुछ है और करते कुछ और...। चाहते हैं शान्ति परन्तु परिस्थिति वश, संस्कार वश कर्म ऐसे कर बैठते हैं जिस कारण उनके अपने और दूसरों के जीवन में अशान्ति ही पैदा हो जाती है। चाहते हैं स्नेह और प्रेम लेकिन बात ऐसी कर लेते हैं जिससे गलतफहमी, मनमुटाव, संघर्ष और नफरत को बढ़ावा मिलता है। चाहते हैं कि स्वास्थ्य अच्छा हो परन्तु सात्विक अन्न की कमी के कारण शरीर में स्वास्थ्य नाशक, रोगोत्पादक तथा उत्तेजनात्मक विषैले तत्व इकट्ठे होने लगते हैं। जो न केवल शरीर के लिए हानिकारक होते हैं बल्कि मानसिक सन्तुलन को भी बिगाड़ते हैं। निर्णयशक्ति को विचलित कर देते हैं, मानसिक आवेग को अनियंत्रित, असन्तुलित, अमर्यादित या दिशा भ्रष्ट कर देते हैं इसलिए मनुष्य के आहार का उसके आचार विचार और व्यवहार से गहरा सम्बन्ध है।

प्राचीनकाल से यह कहा जाता है कि अन्न का मन पर प्रभाव पड़ता है और मन का स्वास्थ्य व रोगों से गहरा सम्बन्ध है। कहते हैं, "जैसा अन्न वैसा मन", "जैसा मन वैसा तन" इसलिए तनावमुक्त, व्यसनमुक्त, चरित्र सम्पन्न जीवन जीने के लिए भोजन का अकथनीय महत्व है। सभी मनुष्यों का लक्ष्य यही है कि हम शान्त, शीतल और सात्विक वृत्ति को धारण कर सुखमय व आनंदित जीवन जीये और इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मन को वश करना आवश्यक है। मन को वश करने के लिए हमें अन्न की परहेज पर ध्यान देना बहुत जरुरी है। ऐसे समय पर सात्विक और पौष्टिक अन्न का निर्माण करने के लिए शाश्वत यौगिक खेती पद्धति बहुत ही लाभदायक है।

भारत के प्राचीन योग के बारे में हम सब सुनते आये हैं परन्तु इस योग की अनुभूति अथवा प्राप्ति करने का समय अभी ही है। वर्तमान समय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक स्वयं सृष्टि के रचयिता बीजरूप शिव परमात्मा पिता ने अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सहज राजयोग की शिक्षा दी है तथा उस योग द्वारा होने वाली प्राप्तियों के बारे में भी समझाया है, जिसका आज लाखों लोग लाभ ले रहे हैं। सभी का अनुभव कहता है कि सर्व समस्याओं का समाधान राजयोग ही है। योग युक्त होकर भोजन बनाने व खाने से तन और मन दोनों स्वस्थ हो जाते है।

चित्रों के माध्यम से
यौगिक खेती का स्पष्टीकरण

भावनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए आवश्यकता है

स्वयं की पहचान

सर जगदीशचंद्र बोस

मनुष्यात्मा जो भी विचार या भावना उत्पन्न करती है, उसका सीधा प्रभाव पेड-पौंधे और वातावरण पर पडता है ।

क्लिव बॅकस्टर

वनस्पति में मनुष्यों के मन के भावों को समझने की क्षमता है।

1

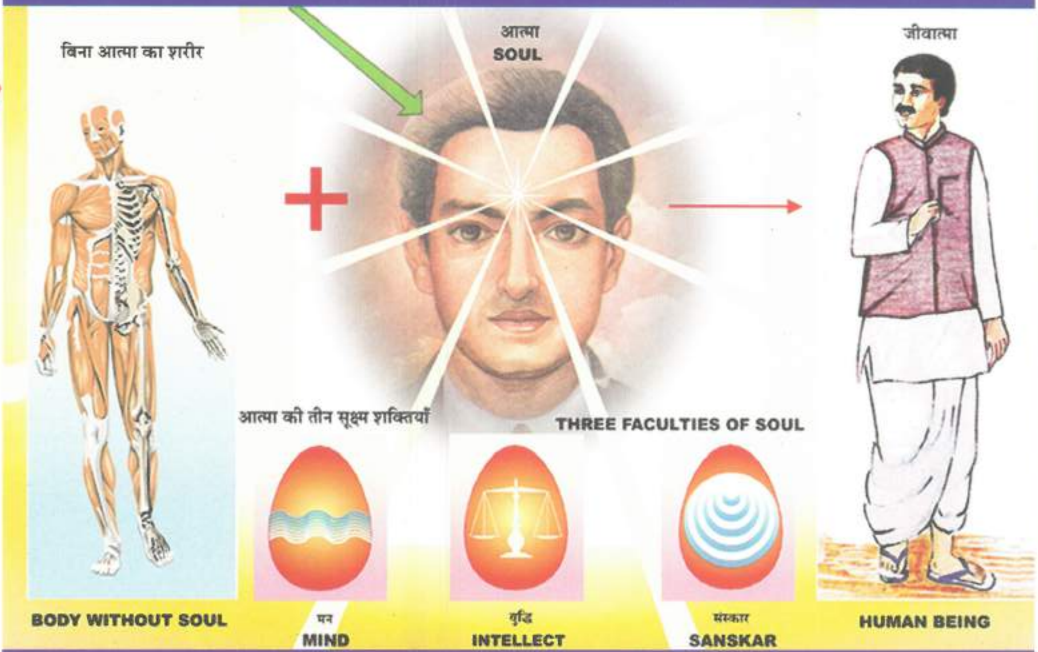

आप आत्मा हैं शरीर नहीं। जिस तरह ड्राइवर गाडी को चलाता है, उसी प्रकार आत्मा शरीर को चलाती है।

चित्र नं. 1 – 'स्वयं की पहचान'

सर जगदीश चन्द्र बोस और क्लीव बैकस्टर के अनुसार वनस्पतियां मनुष्य के विचार और भाव को समझती है। विचार और भाव मनुष्य के मन से निर्माण होते हैं। मन आत्मा की एक शक्ति है और शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति को आत्मा कहते हैं।

आत्मा अति सूक्ष्म प्रकाशमय चैतन्य बिन्दु रूप है। आत्मा ही देह की आँखों से देखती है, कानों से सुनती है, मुख से बोलती है, हाथों से कर्म करती है, पैरों से चलती है। आत्मा की तीन मुख्य शक्तियाँ हैं - मन, बुद्धि, संस्कार। मन विचार करता है, बुद्धि निर्णय करती है और निर्णय अनुसार जो कर्म होते हैं वे संस्कार बन जाते हैं।

आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है। आत्मा देह के मस्तिष्क में भृकुटी के बीच में निवास करती है और पूरे शरीर पर नियन्त्रण करती है। जैसे एक गाड़ी को चलाने के लिए ड्राईवर की जरूरत होती है, ऐसे ही यह शरीर भी एक गाड़ी है और आत्मा ही उसका ड्राईवर है।

आत्मा के मुख्य सात निजी गुण हैं – ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्ति। मनुष्यात्मा जो भी कर्म करती है उस कर्म के संस्कार बनते हैं, फिर उस संस्कार अनुसार ही उनको नया जन्म मिलता है। ऊंच-नीच; गरीब-साहूकार; स्त्री-पुरुष इत्यादि पिछले जन्म के अच्छे वा बुरे कर्म के फल भी उनको इसी जन्म में भुगतने को मिलते हैं।

मनुष्य का शरीर पाँच तत्वों से बनता है और शरीर को तन्दुरुस्त रखने के लिए रोज़ इन तत्वों की आवश्यकता होती है जैसे कि भोजन, हवा, पानी, प्रकाश इत्यादि। ऐसे ही आत्मा जब सत्य ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्ति इन मूल गुणों से सम्पन्न है तो वह शक्तिशाली है। जब उसके निजी गुणों में कमी आती है तभी रोग (बीमारियाँ) आदि प्रवेश करती हैं। उन शक्तियों को पुन: बढ़ाने वा भरने का साधन है राजयोग। सर्वशक्तिवान परमात्मा को मन-बुद्धि से याद करते हुए उनकी सारी शक्तियाँ और गुण अपने अन्दर समाना, यह अनुभव करने की विधि ही राजयोग है।

चित्र नं. 2 – 'परमात्मा का सत्य परिचय'

'हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में सब भाई-भाई' यह घोषणा तो सभी लोग करते हैं परन्तु हम आपस में भाई-भाई हैं तो हमारा पिता कौन है, यह भी समझना जरूरी है। हम सबके शरीर का पिता तो अलग-अलग है और हम सब शरीर नहीं परन्तु आत्मा हैं और आत्मा का पिता एक ही है परमपिता परमात्मा। स्वयं परमात्मा ने ही अपना परिचय ब्रह्मा तन के द्वारा बताया है कि वह निराकार ज्योति बिन्दु रूप और प्रकाशमय है।

निराकार ज्योति बिन्दु परमपिता परमात्मा को ही हिन्दू लोग भगवान, ईश्वर, प्रभु कहते हैं और ज्योतिर्लिंग के रूप में उनकी पूजा, आराधना करते हैं। अमरनाथ, विश्वनाथ, सोमनाथ, पशुपतिनाथ (नेपाल) इत्यादि मन्दिरों में शिव परमात्मा के ही स्मरण चिन्ह ज्योतिर्लिंग के रूप में हैं। गोपेश्वर, रामेश्वर के मन्दिरों में भी शिवलिंग की ही पूजा होती है।

'मक्का' के मुख्य तीर्थ स्थान में भी एक बड़ा पाषाण है जिस पर ज्योति का प्रतीक चिन्ह है जिसे सभी बड़े प्यार व आदर से चूमते हैं। इसी को वे 'संग-ए-असवद' कहते हैं, जिसकी स्थापना मोहम्मद ने की, ऐसा मानते हैं।

क्रिश्चियन धर्म के स्थापक जीसस क्राईस्ट और सिक्ख धर्म के स्थापक गुरुनानक ने भी परमात्मा को निराकार ज्योति के रूप में ही माना है।

जापान में बौद्ध धर्म के लोग भी ज्योति के रूप में ही एक छोटा पत्थर सामने रखकर उस पर अपना मन एकाग्र करते हैं।

इससे यह सिद्ध होता है कि परमात्मा, भगवान, अल्लाह, ईश्वर, गॉड ये शब्द अलग हैं परन्तु वो परमात्मा एक ही है और वह निराकार ज्योति बिन्दु रूप है जिसके मन्दिर भारत में और भारत के बाहर भी अनेक देशों में हैं।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टाईन अपने सापेक्षता के सिद्धांत के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इस सृष्टि में जो भी ऊर्जा है, उस ऊर्जा का स्रोत इस सृष्टि के बाहर एक और ऊर्जा का केन्द्र बिन्दु हो सकता है। उसी ऊर्जा के बिन्दु को उन्होंने भगवान कहा था। परमपिता परमात्मा रूप में बिन्दु तथा गुण और शक्तियों में सिन्धू हैं, वो परमज्योति हैं।

परमात्मा का सत्य परिचय

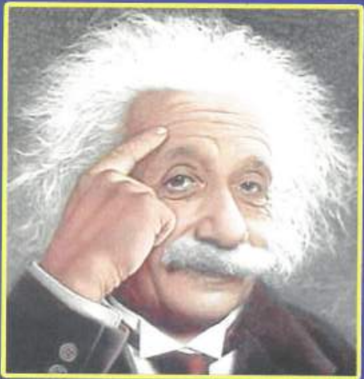

अल्बर्ट आइनस्टाइन

अपने सापेक्षता के सिद्धांत के आधार पर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि इस सृष्टि में जो भी ऊर्जा है, उस उर्जा का श्रोत इस सृष्टि के बाहर और एक ऊर्जा का केन्द्र बिंदु हो सकता है। विज्ञान और अध्यात्म जब एक होते हैं, तो कोई भी बात असम्भव नहीं रहती है।

सर्व आत्माओं के पिता परमपिता शिव परमात्मा ईश्वर, अल्लाह, गॉड, खुदा, भगवान

2

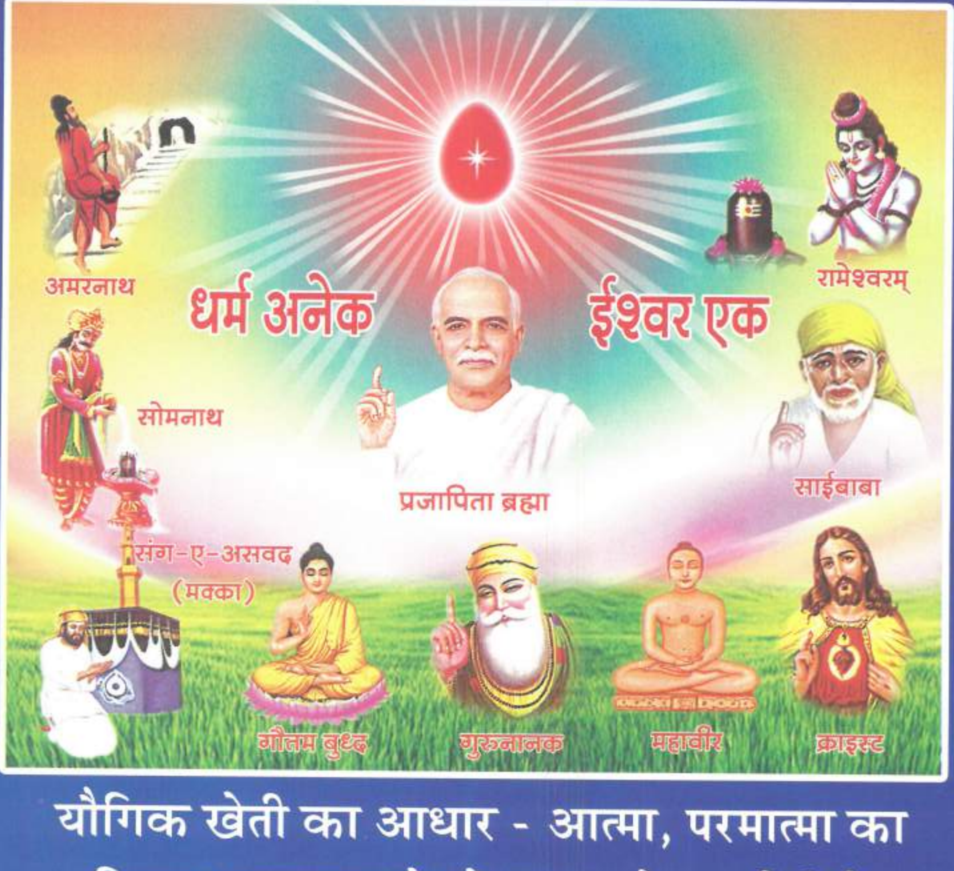

यौगिक खेती का आधार - आत्मा, परमात्मा का मिलन। परमात्मा से योगयुक्त होकर खेती में कर्म करने की पद्धति को यौगिक खेती कहते हैं।

योग के प्रयोग की विधी

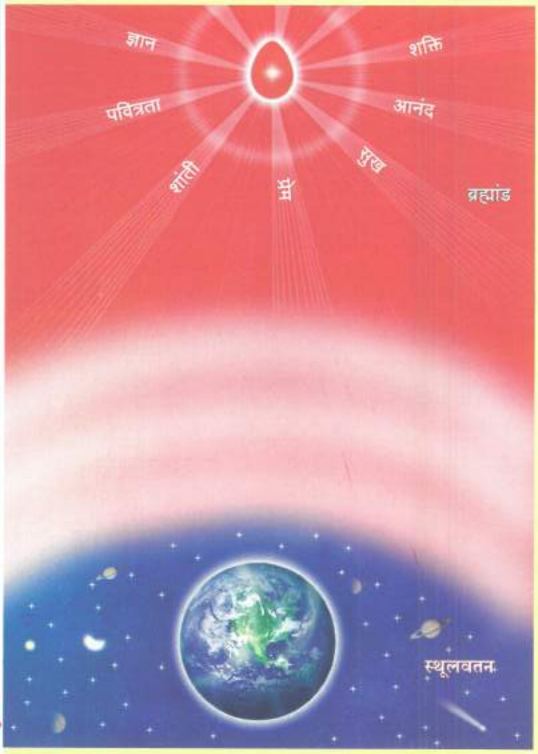

3

रुडाल्फ स्टायनर

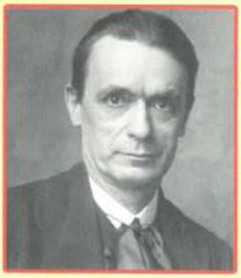

सेंद्रिय खेती पद्धति में जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए ब्रह्माण्ड की ऊर्जा आवश्यक है।

जमीन को योगदान देते हुए

लाखोव्हस्की

पौधों की बढ़त या प्रतिकार क्षमता, उत्पादन क्षमता, पौधों में जो पेशियाँ हैं, उनकी ऊर्जा पर अवलंबित होती है। बाह्य परिस्थिति के समय इन पेशियों की ऊर्जा कम ज्यादा होती है। जब पेशियों की ऊर्जा असन्तुलित होती है, तब बीमारी बढ़ती है तो पेशियों की ऊर्जा का सन्तुलन रखने के लिए वैश्विक उर्जा अथवा ब्रह्माण्ड की ऊर्जा बहुत मदद करती है।

फसल को योगदान देते हुए

WITHOUT MEDITATION

WITH MEDITATION

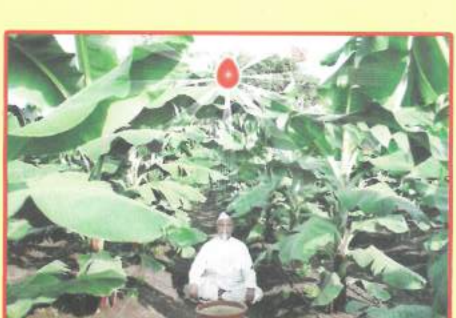

बीज को योगदान देते हुए

चित्र नं. 3 – 'योग के प्रयोग की विधि'

परमपिता परमात्मा ने ही इस गुह्य राज़ को स्पष्ट किया है कि हम आत्मा और परमात्मा का निवास स्थान ऊपर में है, जिसको परमधाम, शान्तिधाम कहते हैं। अल्बर्ट आइन्स्टाईन ने भी कहा है कि भौतिक ऊर्जा को नियंत्रित करने वाली परम शक्ति इस सृष्टि से पार ऊपर में रहती है जिसको ब्रह्माण्ड कहते हैं।

परमपिता परमात्मा ज्ञान के सागर हैं, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्तियों के सागर हैं, सर्व गुणों के भण्डार हैं। ये सब सूक्ष्म शक्तियाँ हैं जिनको हम देख नहीं सकते पर राजयोग के अभ्यास से अनुभव कर सकते हैं।

भौतिकता के इस युग में इन्हीं सूक्ष्म शक्तियों की कमी है, यही आध्यात्मिक शक्ति है। आइन्स्टाइन ने भी कहा है कि भौतिकता माना विज्ञान और सूक्ष्मता माना आध्यात्म, जब यह दोनों एक साथ होते हैं तो कोई भी बात असम्भव नहीं होगी।

राजयोग के अभ्यास में हम आत्मा, परमात्मा से योगयुक्त होकर शान्ति, प्रेम, आनंद इन सूक्ष्म शक्तियों का अनुभव करते हैं और श्रेष्ठ शक्तिशाली विचारों के माध्यम से जमीन, बीज और फसल को योगदान देते हैं। इस विधि से बहुत ही सुन्दर और चमत्कारिक परिणाम देखने को मिलते हैं क्योंकि यह एक सम्पूर्ण विज्ञान है।

रुडाल्फ स्टायनर नाम के वैज्ञानिक ने जैव ऊर्जा खेती पद्धति में स्पष्ट कहा है कि सेन्द्रिय खेती पद्धति में जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिये ब्रह्माण्ड की ऊर्जा बहुत आवश्यक है।

उत्तराखण्ड में जी.बी.पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी, पंतनगर कृषि विद्यापीठ में और सरदार कृषिनगर, दांतीवाड़ा, एग्रीकल्चरल युनिवर्सिटी, गुजरात में बीज को योगदान पद्धति से चार्ज किया तो बीज की अंकुरण क्षमता 8% बढ़ गई।

लाखोव्हस्की नाम के वैज्ञानिक ने सिद्ध किया है कि वनस्पतियों को वैश्विक शक्ति (ब्रह्माण्ड की शक्ति) से चार्ज करने से पौधों का विकास, रोगप्रतिकार क्षमता और उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

प्रत्यक्ष रूप में कई किसान राजयोग के प्रयोग से अपनी फसल की प्राकृतिक आपदाओं से, जंगली प्राणी, पंछियों से रक्षा करने में सफल हुए हैं।

इस विधि से सिद्धि प्राप्त करने के लिये राजयोग सीखना जरूरी है, जो ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेन्द्रों पर नि:शुल्क सिखाया जाता है।

चित्र नं. 4 – 'परिवर्तन चक्र - सृष्टि चक्र'

इस सृष्टि की हर चीज़ परिवर्तनशील है जैसे हद के परिवर्तन चक्र में दिन के बाद रात, रात के बाद दिन, गर्मी, बरसात, ठण्डी... फिर गर्मी, ऐसे ही जन्म-मृत्यु-पुनर्जन्म का चक्र इत्यादि। इसी प्रकार सृष्टि के परिवर्तन का भी एक चक्र है। जैसे स्वास्तिका में चार भाग समान रूप से दिखाये जाते हैं, ऐसे सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, इन चारों युगों की आयु भी समान है। सतयुग, त्रेता में आधाकल्प तक आत्मायें सर्वगुणों, सर्व कलाओं से सम्पन्न, सम्पूर्ण पावन, मर्यादा पुरुषोत्तम रहती हैं। वहाँ एक धर्म, एक भाषा, एक राज्य चलता है। उस समय के मनुष्य देवी देवता कहलाते थे लेकिन पुनर्जन्म लेते-लेते जब उन आत्माओं में शक्ति और गुण कम होने लगते हैं, आत्मा अपने मूल स्वरूप को भूलकर देह अभिमान में आने के कारण विकारों के अधीन हो जाती है, तब दु:ख अशान्ति, तनाव के कारण द्वापरयुग में भक्तिकाल प्रारम्भ होता है, लोग भगवान को पुकारना, ढूंढना शुरू कर देते हैं।

विश्व में तीन शक्तियां शाश्वत हैं - आत्मा, परमात्मा और प्रकृति। इस सृष्टि रंग-मंच पर परिवर्तन का खेल इन तीनों द्वारा ही चलता है। इस बेहद के सृष्टि नाटक में हर एक का पार्ट समय पर निश्चित है। दु:ख अशान्ति के समय श्रेष्ठ कर्म द्वारा सुख शान्ति सम्पन्न जीवन जीने की विधियां बताने लिए अनेक धर्म स्थापक, पैगम्बर आदि अवतरित होते हैं। उस समय तप, व्रत, उपवास भक्ति, प्रार्थना आदि कई साधन अपनाये जाते हैं परन्तु आत्मायें सुख-शान्ति से वंचित ही रहती और धीरे-धीरे सृष्टि अपनी तमोप्रधान स्टेज पर पहुंच जाती है।

इस परिवर्तन चक्र में सृष्टि को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का यह समय चल रहा है और इस महापरिवर्तन में परमात्मा पिता का मुख्य पार्ट है, वे प्रजापिता ब्रह्मा के मानवीय तन का आधार लेकर व्यक्ति परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं। इस कल्याणकारी समय को संगमयुग कहा जाता है। इस युग में श्रेष्ठ कर्म करने से श्रेष्ठ दुनिया की स्थापना होती है और श्रेष्ठ कर्म करने के लिए आवश्यक है ज्ञान, गुण और शक्तियां जो हमें राजयोग के अभ्यास द्वारा परमात्मा पिता से प्राप्त होती हैं।

जॉर्ज वाशिंगठन कार्हर नाम के वैज्ञानिक ने कहा है कि जो परमात्मा में विश्वास रखते हैं और प्रकृति तथा वृक्ष, वनस्पतियों से स्नेह का रिश्ता जोड़ते हैं, तो उनके लिए खेती करने में कोई भी बात असम्भव नहीं है। प्रकृति के साथ मधुर सम्बन्ध जोड़ने से वृक्ष, वनस्पतियों की भावनायें सहज ही समझ में आती हैं।

थॉमस तामहेल्म नाम के चीन के वैज्ञानिक ने भी इस बात को स्पष्ट किया है कि जो व्यक्ति संगठित रूप में आपस में मिलजुलकर खेती करते हैं उनके द्वारा उपजाये हुए अनाज का सेवन करने से खाने वालों के मन में भी एक दूसरे के प्रति प्रेम भावना बढ़ती है। जो किसान अकेले आधुनिक यंत्रों द्वारा खेती करते हैं, जिनमें प्रेम भाव नहीं है, जो केवल पैसा कमाने हेतु खेती करते हैं, वह अनाज खाने से खाने वालों के मन में भी प्रेम भावना कम हो जाती है।

मसारो इमोटो नाम के वैज्ञानिक ने भी एक ग्लास में पानी भरकर उसके प्रति प्यार भरा संकल्प किया ''आई लव यू'' (मैं तुमसे प्यार करता हूँ) तो वो पानी क्रिस्टल डायमण्ड जैसे चमकने लगा। दूसरे ग्लास में पानी भरकर संकल्प किया ''आई हेट यू'' (मैं तुमसे घृणा करता हूँ) तो उस पानी के क्रिस्टल काले हो गये। इससे यह सिद्ध होता है कि प्रकृति के तत्व (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) भी प्रेम भावना को समझते हैं, भावनाओं का असर प्रकृति पर होता है।

यह सारी सृष्टि ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, आनंद और शक्ति - इस गुणों रूपी सूक्ष्म ऊर्जा के एक जाल में बंधी हुई है, जिसको वैश्विक शक्ति कहते हैं और वैश्विक शक्ति का स्रोत परमपिता परमात्मा हैं। आज वर्तमान मनुष्यों के विकर्मो (मनोविकारों) के कारण इस वैश्विक शक्ति में अवरोध आ गया है। राजयोग के अभ्यास से इन सूक्ष्म आध्यात्मिक शक्तियों से स्वयं को भरपूर करना है और प्रकृति को भी चार्ज करना है। इस भौतिकता की दुनिया में बस इन्हीं सूक्ष्म शक्तियों की कमी है। अब आध्यात्मिक सशक्तिकरण का समय चल रहा है। आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा भौतिकता को उपयोग में लाना है।

परिवर्तन चक्र - सृष्टि चक्र

4

जॉर्ज वॉशिंग्टन कार्व्हर

परमात्मा में विश्वास रखना और प्रकृति तथा वृक्ष वनस्पतियों से स्नेह से रिश्ता जोड़ना बहुत जरूरी है।

प्रकृति और वृक्ष वनस्पतियों से स्नेह से रिश्ता जोड़ने से उनकी भावनायें सहज ही समझ में आती हैं।

थॉमस ताल्महेल्म

खेती की उत्पादन पद्धाति अनुसार समाज की मानसिकता बनती है। (जैसा अन्न वैसा मन) (14-5-2014 एग्रोवन)

मसारो इमोटो

प्रार्थना द्वारा पानी के प्रति सकारात्मक संकल्प तथा प्यार भरा संकल्प करने से परिणाम- क्रिस्टल स्पष्ट

पानी के प्रति नकारात्मक संकल्प तथा खराब संकल्पों का परिणाम- क्रिस्टल अस्पष्ट

यह आध्यात्मिक सशक्तिकरण का समय है - अब मनमत, परमत छोड़ ईश्वरीय मत पर चलना आवश्यक है ।

कर्म सिध्दांत

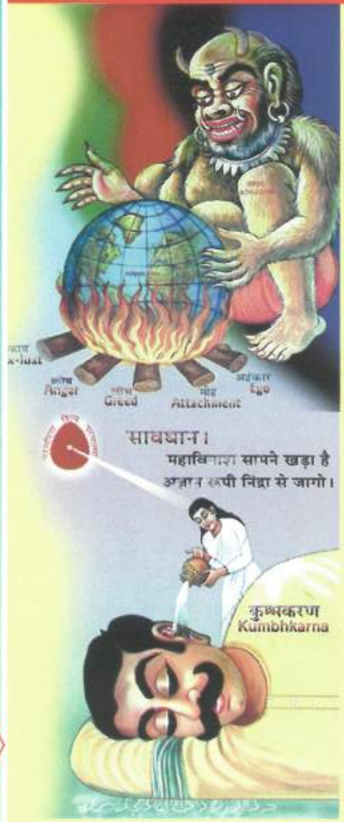

कर्मों की खेती

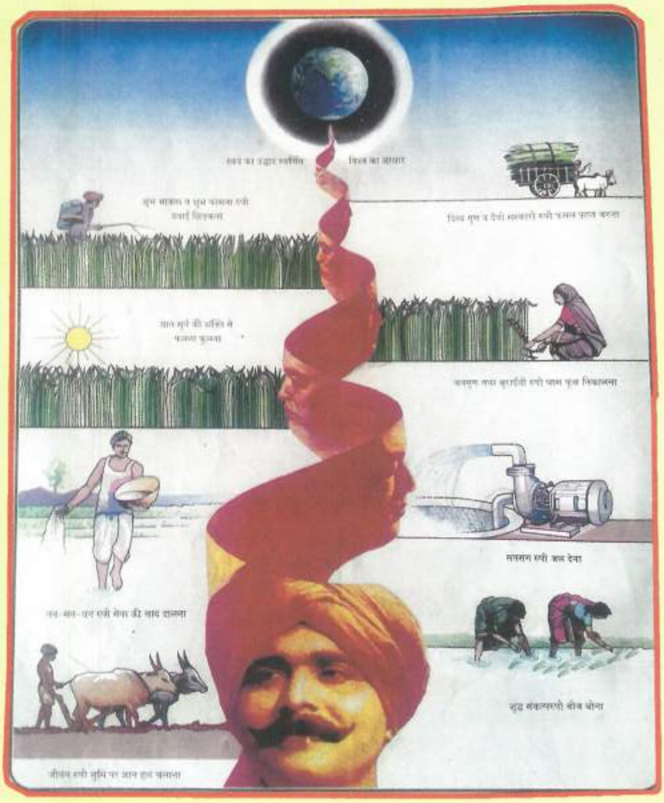

जो करेगा सो पायेगा।
अब नहीं तो कब नहीं।

ल्यूथर बरबैक

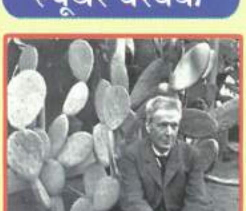

प्रकृति के साथ मिल-जुलकर रहने से प्रकृति भी हमारी रक्षा करती है।

बाणों की शैया पर भीष्म पितामह

जैसा करोगे वैसा पाओगे

चित्र नं. 5 – 'कर्म सिद्धांत'

वर्तमान समय मनोविकारों के कारण पूरे विश्व में दु:ख, अशान्ति, भय बढ़ता जा रहा है। परमपिता परमात्मा अपने ब्रह्मा वत्सों द्वारा सत्य ज्ञान विश्व की सर्व आत्माओं तक पहुँचाने की सेवा कर रहे हैं जिससे हम दु:खदाई भवसागर से मुक्त हो सकें। अब हमें सुना-अनसुना कर कुम्भकर्ण (अज्ञान, भ्रम) की निद्रा में नहीं रहना है। अभी सृष्टि की अन्तिम श्वांसें चल रही हैं। इतनी तमोप्रधानता बढ़ गई है जो कभी भी कुछ भी हो सकता है। इससे स्वयं को बचाने के लिये अब मनमत, परमत छोड़ ईश्वरीय मत पर चलना आवश्यक है।

ईश्वरीय मत कहती है, पहले अपने जीवन रूपी खेती में ज्ञान का हल चलाओ।
शुद्ध संकल्प रूपी बीज की बुआई करो।
अपने ही पवित्र तन, मन, धन की खाद का उपयोग करो।
रोज़ सत्संग रूपी जल ग्रहण करो।
रोज़ ज्ञान सूर्य परमात्मा की दिव्य शक्तियों की लाइट से आत्मा को शक्तिशाली बनाओ।
अवगुण और बुराइयों रूपी घास (खरपतवार) को निकालते जाओ।
शुभ भावना, शुभ कामना की दवाई अपने प्रति, विश्व के प्रति छिड़कते रहो।
दिव्य गुण और दैवी संस्कार रूपी फसल को प्राप्त करो।

जब हम खुद अपने जीवन को दिव्य गुण, दैवी संस्कारों से सुशोभित करते हैं तभी खेती में भी पौष्टिक और सात्विक अनाज का निर्माण कर सकते हैं। कहते हैं जो करेगा सो पायेगा, जितना करेगा उतना पायेगा, जैसा करेगा वैसा ही मिलेगा...। परमपिता परमात्मा कहते हैं, अब नहीं तो कब नहीं।

वनस्पतियों के जादूगर ल्यूथर बरबैक ने प्रयोग द्वारा केकतास (निवडूंग) की वनस्पति को अर्जी डाली कि वे अपने कांटे निकाल लेवें। बरबैक के प्यार के खातिर उस वनस्पति ने भी उनका कहना मान लिया और अपने संरक्षण हेतु जो कांटे थे वे निकालने के लिए तैयार हो गई। उनके पास पेड़-पौधों के साथ संवाद करने की शक्ति थी, प्रेम और स्नेह था। उन्होंने प्रकृति के नियम विरूद्ध एक भी कर्म नहीं किया। इसी कारण 18 अप्रैल, 1906 के भूकम्प में जब सैनफ्रांसिस्को का विध्वंस हुआ तब बरबैक का मकान भूकम्प केन्द्र बिन्दु के पास ही था, फिर भी उनके मकान के झरोखे का एक काँच भी नहीं टूटा। बरबैक का कहना यह था कि नैसर्गिकता के साथ विलक्षण दोस्ती का सम्बन्ध जुटाने का यह परिणाम है।

महाभारत में भी एक दृष्टांत आता है कि भीष्मपितामह जी ने अपने रथ के नीचे आने वाले साँप को बचाने के लिये उसे उठाकर बाजू में फेंक दिया, तो वह साँप काँटे के पेड़ पर गिरा और वहाँ ही मर गया। फलस्वरूप भीष्म जी को भी अन्त में बाणों की शैय्या पर लेटना पड़ा। अब इस गुह्य गति को समझकर हमें स्वयं को विकर्मों से बचाना है और श्रेष्ठ कर्म करने हैं।

अनुक्रमणिका

1 प्रकृति के पांचों तत्वों के शुद्धिकरण की विधि 11
2 यौगिक खेती के लिए कुछ आवश्यक बातें 19
3 जमीन को शक्तिशाली बनाने के कुछ भौतिक उपाय 19
4 नॅडेप पद्धति से कम्पोस्ट खाद बनाने की विधि 21
5 केंचुएँ की खाद निर्माण करने की पद्धति 21
6 खाद बनाने की पद्धति में भी योग का प्रयोग 22
7 फसल संरक्षण 23
8 बी. के. प्रह्लाद भाई - टोंक, राजस्थान (मो. 08107670589) 27
9 बी.के. हर्षा बहन दवे, भरुच, गुजरात (मो. 09969263936) 30
10 बी.के. चेतना बहन राजकोट, गुजरात (मो. 07698576264) 32
11 बी.के. जयश्री बहन शाहपुर, जि. गांधीनगर, गुजरात (मो. 09426702723) 33
12 बी.के. हसमुख भाई शाहपुर, जि. गांधीनगर, गुजरात (मो. 09898631601) 35
13 ब्र.कु. दलजी भाई पालनपुर, गुजरात (मो. 09737752721) 37
14 बी.के. हीरा भाई ऊंझा, गुजरात (मो. 09904511623) 38
15 बी.के. खोड़ा भाई अमरेली, गुजरात (मो. 09427263984) 39
16 बी.के. बालासो रूगे इचलकरंजी, कोल्हापुर (मो. 09405560030) 41
17 बी.के. भोलानाथ चौगुले मु.पो. टाकवड़े, इचलकंरजी (मो. 09762433740) 43
18 बी.के. अशोक माली अंबप, कोल्हापुर (मो. 08698314929) 43
19 बी.के. वसंत बालकृष्णा चौगुले हुपरी, जि. कोल्हापुर (मो. 09673274303) 45
20 बी.के. रघुनाथ भाई अक्कलकोट, सोलापुर (मो. 09922161355) 46
21 ब्र.कु. गेंदलाल गंगाधर मोहने रामटेक, जि.नागपुर (मो. 09960806831) 48
22 बी.के. अशोक भाई - उमरेड़ जि. नागपुर (मो. 09226002949) 49
23 ब्र.कु. उज्जवला संभाजी पाटील मु.पो. मोरले, ता. शिरोल, जि. कोल्हापुर 50
24 बी.के. श्रीकांत भाई (नरगट्टे सर) कादरगा-हुपरी, कोल्हापुर (मो. 09731607484) 51
25 बी.के. दत्ता भाई सम्पत राव नेटके लासूरगांव, ता. वैजापुर, जि. औरंगाबाद मो. : 08055759459 53
26 बी.के. दर्शना कारापुरकर मापसा, गोवा (मो. 09881287201) 54
27 बी.के. इनाशुयो फर्नांडिस गोवा, मडगांव (मो. 09423058643) 59
28 बी.के. महेन्द्र ठाकुर, माइक्रोबायोलॉजिस्ट गोंदिया, महा0 (मो. 08550925000) 60
29 ब्र.कु. ज्ञान सिंह भाई गगसीना गाँव, हरियाणा (मो. 09416138161) 61
30 बी.के. बलवीर सिंह यादव नारनौल, हरियाणा (मो. 09717432955) 63
31 बी.के. उद्धव भाई - पिपराटा जि. खरगोन, मध्य प्रदेश (मो. 09754705539) 64
32 बी.के. देवराज भाई शास्त्र कठौली, ता. कुरुद, जिला धमतरी, छत्तीसगढ़ (मो. 08889292796) 66
33 बी.के. बसन्त भाई कटक, हरिपुर, ढेंकानल, उड़ीसा (मो. 09438308976) 68
34 बी.के. सौमगौड़ा भाई पांडवपुरा, जि.मण्ड्या, कर्नाटक (मो. 09481442612) 69
35 बी.के. शेखर भाई जमखंडी मधुरखंडी, कर्नाटक (मो. 09008818099) 71
36 बी.के. लक्ष्मण भाई - बेलगाम ऐनापुर, कर्नाटक (मो. 09980618827) 72
37 चित्तुर (आन्ध्र प्रदेश) सेन्टर के अन्तर्गत किसानों के अनुभव (टीचर बहन : 09440420866) 75
38 बी.के. ज्ञानसौंदरी बहन थंजावुर, तामिलनाडू (मो. 09442431859) 77
39 बी.के. तेमसेन, यू.एन. (संयुक्त राष्ट्र) इमेल : tamasin.ramsay@gmail.com 77
40 बी.के. ज्योति बहन बीजापुर , बेलगाम, कर्नाटक (मो. 09036876418) 79

प्रकृति के पांचों तत्वों के शुद्धिकरण की विधि

शाश्वत यौगिक खेती अपनाने के लिए हमें कुदरत के नियमानुसार चलकर विज्ञान के आधार से निसर्ग तथा प्रकृति के पाँचों तत्वों सहित सर्व जीव-जंतुओं, पशु-पंछियों, जमीन, बीज, वृक्ष एवं वनस्पतियों से स्नेह और प्रेम से रिश्ता जोड़ना है। इसके लिए आवश्यकता है आध्यात्मिक शक्तियों की, जो हमें राजयोग से मिलती हैं। राजयोग के अभ्यास में अपनी विशेषताओं द्वारा प्रकृति के पाँचों तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) गृह, तारे, जीव, जंतु, पशु, पंछियों को परमात्मा की शक्ति और गुणों के प्रकम्पन देकर सहयोग लेना है।

आज तक हमने अज्ञानता वश प्रकृति को बहुत दु:ख दिया है। पृथ्वी तत्व में केमिकल फर्टिल[illegible], फंफूदीनाशक और खरपतवार नाशक दवाइयों के इस्तेमाल से जमीन की उर्वरक शक्ति [illegible] हो गई है। आवश्यकता से ज्यादा गहरा हल चलाना, आवश्यकता से ज्यादा पानी का इस्तेमाल करना आदि इन सब कारणों से पृथ्वी को बहुत चोट पहुँची है इसलिए पृथ्वी तत्व भी हमारे ऊपर नाराज है, अब उस पृथ्वी को राज़ी करने के लिए प्रकृतिपति परमात्मा के सम्मुख आत्मिक स्थिति में स्थित होकर मन ही मन, दिल से उनसे माफी मांगना है कि हे धरती माँ! मुझे माफ करो, परमात्मा से सर्व शक्तियों की प्रकाशमय किरणें ज्ञान की, पवित्रता की, प्रेम, सुख, आनंद, शक्ति और गुणों की किरणें मुझ आत्मा में आ रही हैं...। जो मेरे द्वारा पृथ्वी तत्व में प्रकाश की किरणों के रूप में प्रवाहित हो रही हैं...। पूरा पृथ्वी तत्व शुद्ध, पवित्र, शान्त हो रही है..., सुखमय और शक्तिशाली बनती जा रहा है... धरती माँ आनंदित होकर परमात्मा प्रत्यक्षता के लिए सम्पूर्ण सहयोगी बनती जा रही है... और परमात्मा पिता को वचन दे रही है कि यौगिक खेती में फसल की बढ़त के लिए सम्पूर्ण सहयोगी बनकर रहूँगी। आपके सहयोग के लिए अब मैं खुद भी श्रेष्ठ कर्म करूँगा और दूसरों को भी श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा दूँगा... हे माँ, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद...। मुझे श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति परमात्मा से मिल रही है...। बहुत प्यार से पृथ्वी तत्व को दृष्टि देते हुए 5 मिनट एकाग्र हो जाओ...।

ऐसे ही जल तत्व को भी जिस प्रकार से दु:ख दिया है, उसे स्मृति में रखते हुए पिता परमात्मा के सम्मुख माफी मांगनी है। हर प्रकार से जल तत्व की सुरक्षा अर्थ प्रतिबद्ध रहना है और आवश्यक मात्रा में ही सहयोग लेना है। परमात्मा से सर्व शक्तियों की किरणें मुझ आत्मा में उतरकर जल तत्व में प्रवाहित हो रही है...। जल तत्व पावन शुद्ध बनता जा रहा है...। परमात्मा से शक्तियों की किरणें जल तत्व में प्रवाहित हो रही है...। मुझ आत्मा से नयनों द्वारा शान्ति,

पवित्रता, शक्तियों की किरणें समुद्र में, नदियों में, कुएं में, ट्यूबवेल में उतर रही हैं... और जल पावन बन रहा है, ऐसा अनुभव करें...। इसी अनुभूति में एकाग्र हो जाएँ 5 मिनट तक...। संकल्प करें कि हे जल देवता... आप कितने श्रेष्ठ हो... जल माना जीवन... आप सदियों से सबकी प्यास बुझाते आये हो... आपने हरेक को सन्तुष्ट किया है... आपके कारण ही सब जीव-जंतु, पशु-पंछी तृप्त हो जाते हैं... हे जल देवता, अब हमारी फसल को निरोगी और शक्तिशाली होकर बढ़ने में सहयोगी बनो...।

ऐसे ही अग्नि तत्व (सूर्य) को देवता के रूप में परमात्मा के सम्मुख देखते हुए उनसे भी माफी मांगनी है। हे सूर्य देवता! मुझे समझ नहीं थी, मैंने आपको दु:ख दिया है इसलिए तो मुझे गर्मी सहन नहीं होती है। जाने-अनजाने में मेरे से जो भी गलतियाँ हुई हैं, उसके लिए आप मुझे माफ करना। मैं परमात्मा पिता के सम्मुख आपसे माफी माँग रहा हूँ। आपको अन्न निर्माण के लिए आवश्यक ऊर्जा देने की सेवा करनी है। परमात्मा से सर्व शक्तियों की किरणें मुझ आत्मा में उतर रही हैं... और मेरे मस्तक से अग्नि तत्व में प्रवाहित हो रही हैं...। प्रखर सूर्य, चन्द्रमा जैसा शीतल बन रहा है... यह अनुभव 5 मिनट तक करना है।

मन ही मन बातें करें आप इस जगत् में... रोशनी देने का काम करते हो... आपके द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि को रोशनी और ऊर्जा मिलती है... आपकी किरणों से सृष्टि के सभी जीवों को शक्ति मिलती है... गन्दगी नष्ट हो जाती है... आपका काम बहुत ही सुन्दर है... आपके बिना इस सृष्टि के सारे कार्य अधूरे हैं... आपके द्वारा इस सृष्टि में उजाला है... सुन्दरता है... आप अपनी तेजोमय किरणों के द्वारा... अनेक जीवों में जीवन शक्ति भर देते हो... आपकी अनुपस्थिति में जीवन शक्ति कम हो जाती है... आप कितने महान हो! परमात्मा कह रहे हैं कि इस यौगिक खेती के अन्दर आपको आवश्यक किरणें देनी हैं... आपकी किरणों से भरपूर मात्रा में हरित द्रव्य, अन्न द्रव्य तैयार होने चाहिए... साथ ही सूक्ष्म अन्न द्रव्य को बनाने में मदद करना है... अपनी शक्ति से धरती के पौधों में बल भरना है... मुझे विश्वास है कि आप परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनेंगे...।

अब वायु तत्व को देवताओं के रूप में परमात्मा के सम्मुख उपस्थित देखते हुए अपनी गलतियों को महसूस करते हुए माफी मांगना है। परमात्मा से सारी शक्तियां वायु तत्व में प्रवाहित हो रही है... और वायु तत्व के सारे दु:ख नष्ट हो रहे हैं...। वायु तत्व पावन, शुद्ध बनते-बनते, शक्तिशाली बन रहा है... पेड़-पौधों की कटाई के कारण वायु तत्व का सन्तुलन बिगड़ रहा है। अब मुझे परमात्मा से कई सारे पेड़-पौधे लगाने की प्रेरणा मिल रही है...। हे वायु देवता! अब मैं

बहुत सारे पौधे लगाकर उनकी पालना अच्छी तरह से करके आपको सुखदाई बनाने के लिए पूरा पुरुषार्थ करूँगा... आप कितने महान हो... आपके कारण इस सृष्टि में चैतन्यता है... आपके बिना एक सेकेण्ड भी जीवित रहना कठिन है... हर जीव-जंतु, पशु-पंछियों के दिल की धड़कन हो आप... अब तक की गलतियों को माफ करो और परमात्मा की प्रत्यक्षता के कार्य में यौगिक खेती में पूरा सहयोगी बनो। यह मेरी प्रार्थना है...। परमात्मा से शान्ति, प्रेम, आनन्द, सुख की किरणें मुझ आत्मा में आ रही हैं और मेरे नयनों से वायु तत्व में प्रवाहित हो रही है...। वातावरण एकदम शान्त, पवित्र, शक्तिशाली बनता जा रहा है...। कम-से-कम 5 मिनट यह अनुभव करें...। फसल की बढ़त के लिए और फूल-फल की उत्पत्ति के लिए पोषक वातावरण बनता जा रहा है.... ऐसे अनुभव करें... हे पवन देवता आपको धन्यवाद...।

ठीक इसी तरह आकाश तत्व को भी परमात्मा की शक्तियों से भरपूर करना है। पूरा आकाश तत्व परमात्मा के सम्मुख उपस्थित है। परमात्मा ब्रह्मा तन के आधार से आकाश तत्व को नज़र से निहाल कर रहे हैं..., बहुत ही प्रेम से शक्तियाँ प्रदान कर रहे हैं... साथ में आकाश तत्व एकदम शान्त हो रहा है..., चाँद, सितारे, सारे ग्रह एकदम शान्त हो गये हैं...। अब परमात्मा को देखते मैं सबसे माफी मांग रहा हूँ...। मन ही मन संकल्प कर रहा हूँ कि आज के बाद कुदरत के कोई भी नियमों का उल्लंघन नहीं करूँगा..., ताकि किसी भी तत्व को दु:ख न पहुँचे...। अब मेरे द्वारा होने वाले हर श्रेष्ठ कार्य में आकाश तत्व से बहुत-बहुत सहयोग मिलेगा और मैं परमात्मा के कार्य में, परमात्मा के प्रत्यक्षता में सहज सफलता प्राप्त करूँगा...। परमात्मा से आने वाली सर्व शक्तियों की किरणें मुझ आत्मा से आकाश तत्व में प्रवाहित हो रही हैं...। हे आकाश देवता! आपके बिना तो कोई भी कार्य नहीं हो सकता है... आपकी छत्रछाया के बिना मिट्टी से लेकर सभी जीव-जन्तु, पशु-पंछी, वृक्ष, वनस्पतियों की वृद्धि कैसे होगी? विशालता आपका निजी गुण है... आप सबको सहयोग देते हो... आपका कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है... आपको मेरी फसल की रक्षा हर हालत में करनी है... 5 मिनट तक यह अनुभव करें...।

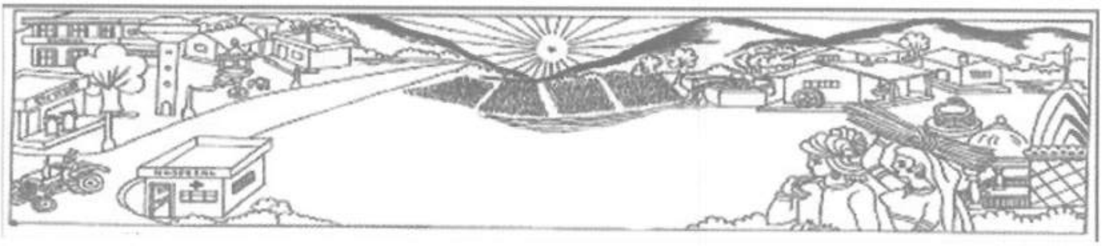

प्रकृति के पाँचों तत्वों को योग प्रकम्पन से शक्तिशाली बनाते समय, 'मैं आत्मा मास्टर प्रकृतिपति हूँ', इस स्वमान में रहना आवश्यक है।

(अ) जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिये योग विधि:- आत्म-अभिमानी होकर परमात्मा को आह्वान करके खेती में जो कार्य करना है उसके लिये परमात्मा से स्वीकृति लें... अनुभव करें परमात्म आदेश अनुसार पाँचों तत्व उपस्थित हो गये हैं... सर्वशक्तिवान परमात्मा पाँचों तत्वों को अपनी शक्तियों से श्रृंगारित कर रहे हैं... पाँचों तत्व सम्पन्न बनकर अपनी जमीन को उपजाऊ बनाने के लिये अपनी-अपनी शक्ति प्रदान कर रहे हैं... मिट्टी शक्तिशाली बन रही है... वातावरण शुद्ध और शक्तिशाली बन रहा है... परमात्म छत्रछाया में और तत्वों के सहयोग से इस खेती में बहुत अच्छी फसल आयेगी... अनाज सात्विक और पौष्टिक मिलेगा...।

बीज बुआई के पहले जमीन को योगदान देने की विधि:- स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिवान के स्वमान में स्थित करके परमात्मा की याद में सर्व शक्तियों को अपने अन्दर समाकर भौतिक रूप से अपनी जमीन को सम्मुख रखते हुए परमात्मा की शक्तियों को जमीन में प्रवाहित करें...। अनुभव करें कि परमात्मा पिता की याद की शक्ति से धरती माँ बहुत ही शक्तिशाली बनती जा रही है...। अब धरती माँ से विनंती करें कि हे धरती माँ! जो भी बीज मैं आपकी गोदी में बुआई करने जा रहा हूँ, वे सभी बीज अच्छी तरह से उगाने की सेवा आपको करनी है...।

बीज उगने के बाद भी जमीन को योगदान देने की विधि:- रोज़ 10 मिनट परमात्मा की शक्तियों की किरणें देना है...। संकल्प करें कि फसल की अच्छी बढ़त के लिए यह खरपतवार निकालना आवश्यक है। खरपतवार की जड़ों में जो जीवाणु हैं वे जड़ों से दूर हो रहे हैं... और हम बहुत ही हल्के रूप से खरपतवार को जमीन से निकाल रहे हैं...। मुख्य फसल की बढ़त के आवश्यक जीवाणु जमीन में सुरक्षित हैं... और अनावश्यक जीवाणु खरपतवार के साथ निकलते जा रहे हैं...।

फसल काटने के बाद तुरंत ही जितना जल्दी हो सके जमीन में हल चलाना आवश्यक है। हल चलाने से पहले योगयुक्त अवस्था में परमात्मा की शक्तियों से जमीन को चार्ज करते समय धरती माता का शुक्रिया अदा करें... अगली फसल लेने तक हम आपको विश्रांती दे रहे हैं...। पाँचों तत्व जमीन और जीव-जंतुओं को शक्ति के प्रकम्पन प्रवाहित करें – 10 मिनट तक...।

(ब) बीज संस्कार के लिए योग विधि :- जो बीज आपको खेत में बुआई करने हैं उन पर योग का प्रयोग करना है, उस बीज को सामने रखें। अगर वह बीज जैसेकि गन्ना, अदरक, आलू आदि बड़ी मात्रा में होते हैं तो बुद्धि के नेत्र से बीज को देखना है, स्वयं को मास्टर बीजरूप के स्वमान में स्थित कर परमात्मा से शक्तियों की अनुभूति करते हुए बीज के अंकुर पर उन परमात्म किरणों को प्रवाहित करें.... और संकल्प करें कि यह बीज के उगने की क्षमता बढ़ा रही हैं...। संकल्पों से ही बीज के बाहर जो कवच होता है उसे परमात्मा की पवित्र किरणों से लपेटना है...। जिससे बीज की कीट और फफूंदीजन्य रोगों से सुरक्षा हो...। बीज के अन्दर शक्तियों की किरणें भरकर बीज को संकल्प देना है कि आपको निरोगी और शक्तिशाली पौधों का निर्माण करना है...। यही संकल्पों का प्रयोग हम वतन में भी कर सकते हैं। इस योगाभ्यास में जब मन पूरा एकाग्र हो जाता है तब 10 मिनट तक योगदान देना है।

जो बीज बुआई करने हैं... रोज़ पहले एक सप्ताह के लिए योगकक्ष में रख दें... बीज संस्कार विधि... विशेष अमृतवेले की जाती है... रोज़ सवेरे अमृतवेले योगाभ्यास करते समय उन बीज़ों को... सामने लेकर जायें... संकल्प करें कि मैं एक परम पवित्र... शुद्ध आत्मा हूँ... मैं आत्मा शान्ति का पुँज हूँ... अनुभव करें...। भृकुटी के मध्य मैं बहुत ही तेजस्वी आत्मा चमक रही हूँ... मेरे चारों ओर शक्तिशाली किरणें... शान्ति की किरणें फैल रही हैं... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... मैं फरिश्ता बीजों को लेकर परमात्म सानिध्य में जा रहा हूँ... परमात्मा पिता बहुत प्यार से बीजों को देख रहे हैं... अनुभव करें, ईश्वर की परम ज्योति से... ज्ञान... पवित्रता... सुख... शान्ति... प्रेम... आनन्द एवं शक्ति की किरणें... बीजों के अन्दर जा रही हैं... एक-एक बीज़... सात गुणों से प्रकाशित, तेजोमय बनता जा रहा है... लाइट-माइट होता जा रहा है... बीजों के अन्दर की... सर्व कार्य प्रणाली क्रियान्वित हो रही है... एक-एक बीज को देखिए... जो हीरे जैसा चमक रहा है... चारों तरफ प्रकाश फैल रहा है... एक-एक बीज शक्तिशाली हो रहा है... सृष्टि के बीजरूप हमारे प्यारे परमपिता परमात्मा बीजों को सर्व शक्तियाँ प्रदान कर रहे हैं... हर बीज शक्तिशाली हो रहा है... परमात्मा की और पाँचों तत्वों की शक्ति से बीज शक्तिशाली बन गया है... अनुभव करें कि परम ज्योति से... उन बीजों पर... एक सुन्दर लाइट का, पवित्र ऊर्जा का ओरा बन गया है... जिससे बीजों को निरोगी और शक्तिशाली पौधों के निर्माण के लिये शक्ति मिल रही है... यह अनुभव करते हुए बीज को वापस अपने भौतिक स्थान पर ले आयें।

बीज अंकुरित होने के बाद भी रोज़ प्रेम के सागर परमात्मा पिता की याद में प्रेम-स्वरूप

आत्मा अनुभव करते हुए अंकुरित पौधों को प्रेम के प्रकम्पन 10 मिनट देना है... अनुभव करें कि बीज में जो अन्न है उसके आधार से पौधों की बढ़त बहुत ही अच्छी हो रही है... साथ-साथ पौधों की जड़ें जमीन में गहराई में उतरकर पौधों की बढ़त के लिये मूल द्रव्यों को जमीन से पोषित कर रही हैं... अनुभव करें यह छोटे-छोटे पौधे परमात्मा की छत्रछाया में बहुत ही सुरक्षित और शक्तिशाली होकर बढ़ रहे हैं...।

पौधों में 5-6 पत्ते आने के बाद:- पौधों में 5-6 पत्ते आने के बाद भी रोज़ 10 मिनट तक पौधों को प्रेम के प्रकंपन प्रवाहित करें। (जैसे छोटे बच्चों से सभी का प्यार होता है इसी प्रकार) पाँचों तत्वों को भी देवता के रूप में अपने खेती में परमात्मा के साथ आह्वान करें... फसल की बढ़त के लिए वह भी सहयोगी बन रहे हैं...। पाँचों तत्व अपनी शक्तियों को फसल में भर रहे हैं... पौधों से मन ही मन बातें करें कि कोई भी कीट अथवा बीमारी आये तो आपको अपनी प्रतिकार शक्ति को बढ़ाना है... इसके लिये हम आपको टॉनिक भी देंगे... अनुभव करें सभी तत्वों के सहयोग से फसल में प्रकाश संष्लेशण का कार्य बहुत ही सहज हो रहा है... पौधे शक्तिशाली बनकर बढ़ रहे हैं...।

वनस्पति की पूरी बढ़त होने तक आने वाले हर परिस्थिति को समझकर योग के प्रयोग करते रहना है।

पानी पर योग के प्रयोग की विधि:-

योगाभ्यास में अपने विचारों का प्रभाव सबसे ज्यादा जल तत्व पर होता है। स्वयं को पहले अपने सत्य स्वरूप पवित्रता की शक्ति का अनुभव करें...। परमात्मा पवित्रता के सागर को याद करते उनकी पवित्र किरणों को अपने अन्दर समा लें... मैं आत्मा बहुत ही शुद्ध पवित्र बन रही हूँ... परमात्मा से मिलने वाली पवित्र किरणें मेरे द्वारा पानी में उतर रही हैं... पानी बहुत शुद्ध पवित्र बन रहा है... यह पानी फसल की बढ़त के लिये आवश्यक मूल द्रव्यों को लेकर फसल को बढ़ाने में मदद करेगा... परमात्म पवित्र ऊर्जा पानी के साथ पूरे पौधों में पहुँच गई है... इससे फसल में कोई भी बीमारी नहीं आयेगी... यही प्रयोग बारिश के समय भी करने से अच्छे परिणाम दिखाई देते हैं। बारिश के बूँद-बूँद में परमात्मा से पवित्र ऊर्जा मिलकर होकर जमीन में उतर रही है... पवित्र ऊर्जा के कारण जमीन में जो अनावश्यक अथवा हानिकारक जीवाणु हैं वह नष्ट हो रहे हैं... उपयुक्त जीवाणुओं की कार्यक्षमता बढ़ रही है...।

भगवानुवाच : पवित्रता की शक्ति असम्भव कार्य को भी सम्भव करने वाली है।

फ्लावरिंग के समय:- ऊपर की योग विधि के साथ-साथ प्रेम के साथ आनंद की भी किरणें परमात्मा से लेकर पौधों में प्रवाहित करें... पौधे बहुत ही खुश हो रहे हैं... और परागीकरण का कार्य बहुत ही सुलभ रीति से हो रहा है...। पौधों में फूल और फल भरपूर निकल रहे हैं, ऐसा अनुभव करें....। यह अनुभव रोज 10 मिनट करें।

जब भी खेती पर जायें तो अपने प्रकाश के सूक्ष्म शरीर में... अपने फरिश्ता स्वरूप की स्मृति में रह... खेत के चारों ओर चक्कर लगायें... और बड़े प्यार से... खेती को निहारते हुए... खुशी का एहसास करें... साथ ही महसूस करें... यह प्रकृति, यह पौधे, यह फसल सब देख खुशी में झूम रहे हैं... नाच रहे हैं, लहरा रहे हैं... तन-मन में प्रसन्नता की लहर हो... सन्तुष्टता के वायब्रेशन हों... क्योंकि हमारी खुशी के प्रभाव से पौधे अच्छी तरह से बढ़ेंगे... उनमें चमक आयेगी... हमारी खेती... सुजलाम् सुफलाम् होगी...।

अनाज में दूध भरने के समय:-

ऊपर की विधि के साथ, अनाज में दूध भरने का समय जब होता है तब मास्टर सुखदाता बन सुख के सागर परमात्मा से सुख की, खुशी की, प्रेम की किरणें फसल में प्रवाहित करें...। संकल्प करें कि यह अनाज परमात्मा की शक्तियों से बहुत ही सात्विक और पौष्टिक बन रहा है...। अनाज सही समय पर एक साथ तैयार हो रहा है...। परमात्मा की शक्तियों से इतना शक्तिशाली बन रहा है जो खाने वालों का तन और मन निरोगी और शक्तिशाली बनेगा...।

अनाज को निकालने के समय पौधों से स्पर्श करते हुए धन्यवाद करना है। प्रकृति के पाँचों तत्व और परमात्मा को धन्यवाद करते फिर अनाज को निकालना है। यह योग विधि सर्व प्रकार के फसल के लिए है।

गन्ने जैसे फसल में उपरोक्त योग की विधि के साथ टनेज़ और शुगर की मात्रा बढ़ने में भी हम संकल्प कर सकते हैं जैसे एक एकड़ खेती में 80 टन गन्ने का वज़न होगा और शुगर की मात्रा 12 परसेन्ट रहेगी। गन्ने की वैराइटी अनुसार 12 से 15 मास में टनेज और शुगर पर्सेन्टेज अच्छी मिल रही है... ऐसा संकल्प करें।

केले की फसल में भी ऊपर की योग की विधि से रोज 10 मिनट एकाग्रता के साथ योगदान करना है।

केले के पौधे लगाने के 4 मास बाद रोज़ 10 मिनट परमात्मा के शक्तियों को प्रवाहित करते संकल्प करें कि सभी पौधों में एक साथ सूक्ष्म केले का निर्माण (गर्भधारण) हो रहा है...।

फिर जब केले बाहर निकलते हैं तब भी खेती में बहुत पवित्र और शक्तिशाली वातावरण बनायें। परमात्मा की सर्व शक्तियाँ केले की फसल में किरणों के रूप में प्रवाहित हो रही हैं... जो सात्विकता और पौष्टिकता को बढ़ा रही हैं... ऐसा अनुभव करें।

इसी प्रकार जो भी फसल, वृक्ष, वनस्पति हों उन सबको कम से कम रोज़ 10 मिनट योग का प्रयोग करके स्नेह से बातें करनी है।

जब जंगली जानवर या पंछी आकर फसल को नुकसान पहुँचाते हैं तब योग विधि :-

स्वयं को स्वमान में स्थित करें... मैं आत्मा परम पवित्र हूँ...। पवित्रता के सागर परमात्मा से मैं आत्मा भरपूर हो रही हूँ... ये पवित्र किरणें फसल वाली खेती में प्रवाहित हो रही हैं...। खेती का वातावरण बहुत ही शुद्ध पवित्र बन रहा है...। खेती के चारों ओर तथा ऊपर भी पवित्र ऊर्जा का ओरा (कवच) बन गया है... और इस ओरा के अन्दर कोई भी नुकसान करने वाले पंछी अथवा जानवर प्रवेश न करें...। अगर आयेंगे भी तो उनको जितना आवश्यक है उतना एक ही जगह खाकर निकल जायें... पूरे खेती में थोड़ा थोड़ा खाकर नुकसान न करें...।

प्राकृतिक बदलाव के कारण होने वाले नुकसान से फसल को सुरक्षित रखने के लिए :-

मैं आत्मा प्रकृति का मालिक हूँ... प्रकृतिपति परमात्मा से सर्व शक्तियों की किरणें मुझ आत्मा में समा रही हैं...। मेरे नयनों से प्रकृति के पाँचों तत्वों में प्रवाहित हो रहे हैं...। पाँचों तत्व शान्त, शुद्ध और शक्तिशाली बनते जा रहे हैं...। मैं आत्मा मास्टर प्रकृतिपति हूँ, मेरे मस्तक एवं नयनों से परमात्मा की सारी शक्तियों की किरणें निकलकर खेती के ऊपर और चारों ओर छत्रछाया के रूप में ओरा बनाकर खड़ी हैं... इस छत्रछाया के अन्दर यह फसल तेज धूप, अथवा तेज बरसात अथवा जोर से बहने वाली हवा में भी सुरक्षित है...। प्रकृति के पाँचों तत्व को भी इमर्ज करके फसल की सुरक्षा के लिए आह्वान करके सकाश देकर सहयोगी बनायें...।

यौगिक खेती के लिए कुछ आवश्यक बातें :-

1. खेती में काम करने वाले सम्पूर्ण निर्व्यसनी हों।
2. परमात्मा के प्रति अटूट श्रद्धा वा खेती के कार्य से दिल का प्यार और भावना हो।
3. जहाँ मुख्य खेती है, वहाँ परमात्मा का झण्डा भी अवश्य हो और वहाँ जाते समय चप्पल आदि पहनकर न जायें तो अच्छा है।
4. खेती में काम करते समय पौधों के साथ बच्चों जैसा बर्ताव करें। बहुत भावना और प्रेम के साथ उन्हें चैतन्य महसूस करते हुए उनसे व्यवहार करें।
5. पौधों के बीच से खरपतवार निकालते समय विशेष ध्यान रखें कि पौधे रूपी बच्चे को कोई चोट न आये। उन्हें कोई नुकसान न हो। अगर भूल से पौधों को किसी प्रकार से धक्का लग जाये तो मन से माफी मांग लें।
6. फूल व फल को तोड़ते समय पौधों को पूछ करके ही तोड़ें और तोड़ने के बाद उसका आभार प्रकट करें।

जमीन को शक्तिशाली बनाने के कुछ भौतिक उपाय:-

अच्छी उपजाऊ जमीन के लिए जमीन में 2.5 प्रतिशत सेंद्रिय घटक हो, 25 प्रतिशत हवा, 25 प्रतिशत पानी और प्रतिशत 45-48 खनिज पदार्थ आवश्यक है।

1. कोई भी फसल से अनाज निकालने के बाद जो बचा हुआ व्यर्थ भाग रहता है उसे जमीन के ऊपर आच्छादित करें या हल चलाकर जमीन के अन्दर मिला दें। जैसे फसलों की जड़ें, तना, घास-फूस, धान का भूसा, गेहूँ का भूसा, मूँगफली के टरफल, गन्ने के पत्ते, पेड़-पौधों के पत्ते इत्यादि। इससे जमीन में सेंद्रिय पदार्थों का प्रमाण बढ़ता है।

2. उपलब्ध हो तो प्रति एकड़ कम से कम 6 टन गोबर की खाद डालना जरुरी है, इससे जमीन में जीवाणु स्थिर होते हैं।

3. अगर गोबर की खाद उपलब्ध नहीं है तो हरी खाद जमीन को देना आवश्यक है। इसमें - ताग (सन) 5 किलो, ढैंचा 5 किलो, मूँग 1 किलो, उड़द 1 किलो, चना 1 किलो, मेथी 1 किलो, ज्वार 1 किलो, धनिया 1 किलो, चौलाई 2 किलो, पटसन 1 किलो, राजगिरा 200 ग्राम।

यह सब बीज मिक्स करके एक एकड़ खेती में बुआई करें। 45 से 55 दिन में इस फसल को काटकर जमीन के अन्दर मिला दें। गन्ने और केले की फसल में हरियाली (हरी खाद) की फसल काटकर ऊपर से आच्छादित कर सकते हैं।

उपरोक्त बीजों में से कोई 2-3 प्रकार के बीज़ न मिलें तो भी चल सकता है।

4. जीवामृत :- देशी गाय का ताजा गोबर 10 किलो, गोमूत्र 5 लीटर, गुड बिना केमिकल 2 किलो, देशी गाय का दही 2 लीटर, चना या चौलाई या मूँग या उड़द का आटा 2 किलो, बरगद के पेड़ के नीचे की मिट्टी एक किलो 200 लीटर पानी मिलाकर एक सीमेंट या प्लास्टिक टंकी में 5 से 8 दिन तक, मोटे कपड़े से टंकी का मुख बांधकर छाँव में रखिए। रोज दो बार मिश्रण को डंडे से घड़ी की दिशा में हिलायें, इससे जीवाणु की मात्रा बढ़ने में ऑक्सीजन की उपलब्धि होती है। यह मिश्रण एक एकड़ जमीन में गीली हो तब शाम के समय छिड़काव करें या फसल को पानी देते समय पानी में मिलाकर छोड़ दें, इससे सभी सूक्ष्म जीवाणु बढ़ेंगे।

हर फसल को कम से कम मास में एक बार जीवामृत देना आवश्यक है।

5. फसल पर छिड़कने के लिए टॉनिक:- देशी गाय का दूध 3 लीटर, गोमूत्र 3 लीटर, नारियल का पानी 3 लीटर, बिना केमिकल गुड 1 किलो, 200 लीटर पानी में मिलाकर कोई भी फसल पर आवश्यकता अनुसार स्प्रे करें।

6. बीजामृत :- देशी गाय का ताजा गोबर 1 किलो, गोमूत्र 1 लीटर, देशी गाय का दूध 200 मिली, बिना बुझा हुआ चूना 50 ग्राम, हींग 10 ग्राम, 10 लीटर पानी में दो दिन भिगो दें, मोटे कपड़े से मुख बांधकर छांव में रखें। प्रतिदिन मिश्रण को दो बार डंडे से घड़ी की दिशा में हिलायें। दो दिन बाद इस बीजामृत को बीज संस्कार के लिए इस्तेमाल करें। यह मिश्रण बीज पर छिड़ककर भिगो दें, फिर उस बीज को छाँव में सुखाकर बुआई करें। शाखीय बीज जैसे आलू या कोई भी प्रकार के पौधों की जड़ों को 10 मिनट बीजामृत में डुबोकर रोपण करें।

नॅडेप पद्धति से कम्पोस्ट खाद बनाने की विधि

नॅडेप पद्धति से कंपोस्ट खाद बनाने के लिए 15 फिट लंबाई, 5 फिट चौड़ाई और 3 फिट ऊंचाई का ईटों का चेम्बर बनाना आवश्यक है। दीवार की चौड़ाई 9 इंच मोटी हो। चारों तरफ की दीवारों में ईट की चौड़ाई जितना सुराख रखना आवश्यक है जिससे हवा अन्दर आयेगी। ईटों की दीवारों को अन्दर बाहर से गोबर और पानी का मिश्रण बनाकर लेप करे और सूखने के बाद इस चेम्बर का इस्तेमाल करें।

नॅडेप पद्धति में चेम्बर भरने के लिए खेती में से वेस्ट मटेरियल जैसे फसलों की जड़ें, तना, घास-फूस या धान का भूसा, गेहूँ का भूसा, मूँगफली के टरफल, सोयाबीन का भूसा, गन्ने के पत्ते या गाय का गोबर इत्यादि का इस्तेमाल करें। चेम्बर में पहले गोबर और पानी का मिश्रण बनाकर दीवार और नीचे भी छिड़काएं। फिर 6 इंच मोटी साइज का खेती के वेस्ट मटेरियल का थर दें। इस पर कड़वे नीम, अडुळसा, ग्लेरिसीड़ीया के हरे पत्ते मिलायें। इसके ऊपर 4 किलो देशी गाय का गोबर, 150 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। इसके ऊपर खेती में से 50-60 किलो मिट्टी समान रूप से आच्छादित करें और मिट्टी गीली होने तक पानी छिड़काव करें। यह एक थर (स्तर) पूरा हो गया, अब ऐसे ही इसके ऊपर और थर चढ़ाएं और चेम्बर में डेढ़ फुट ऊंचाई तक भरते चलें। चेम्बर भरने के बाद 400-500 किलो मिट्टी गीली बनाकर, 3 इंच जितनी मोटी साइज का लेप चढ़ाएं और ऊपर से गोबर का लेप चढ़ाएं। धूप से मिट्टी फट जाती है तो इसे गोबर के पानी से पैक करें। ज्यादा धूप हो तो ऊपर से वेस्ट मटेरियल से आच्छादित करें। 90 से 120 दिनों में कम्पोस्ट खाद तैयार हो जायेगी। इस खाद को पूरा सूखने न दें, 20 प्रतिशत गीला रहने दें।

इसमें 3.5 से 4 टन कम्पोस्ट मिलता है। इस खाद में 0.5 से 1 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.5 से 0.8 प्रतिशत स्फूरद और 1.2 से 1.4 पोटाश मिलता है।

केंचुएँ की खाद निर्माण करने की पद्धति

केंचुएँ की खाद निर्माण करने के लिए छांव की आवश्यकता है। सूर्य प्रकाश और बारिश से संरक्षण के लिए छप्पर का शेड बनाकर उसके नीचे 3 फीट चौड़ाई और 8 से 9 फीट लंबी जगह में डेढ़ फीट ऊंचाई की 4 इंच मोटी दीवार बनाकर चेम्बर बनाएं। पहले पानी जमीन पर छिड़क कर जमीन गीली करें। फिर पहले वेस्ट मटेरियल जैसे धान का भूसा, गेहूँ का भूसा,

गन्ने के पत्ते इत्यादि, जो जल्दी सड़ते नहीं है ऐसे पदार्थों का 15 से 20 सेमी. मोटा थर बनाइये। इस पर पानी छिड़ककर गीला करके इसके ऊपर तैयार गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट खाद अथवा बगीचे की मिट्टी का 5 सेमी. का थर लगाएं। इससे केंचुएँ सुरक्षित होते हैं। इसके ऊपर पूर्ण केंचुएं छोड़ दें। प्रति 10 स्क्वेयर फीट में 2 हजार केंचुये छोड़ दें। इसे बारदाने से ढक देवें। 40 से 45 डिग्री सेंटीग्रेड गीलापन रहे, इसकी सम्भाल रखें। शेड में 20 से 30 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान रखें। केंचुये की रक्षा के लिए अन्दर कोई कीट वा चींटी न आये, यह ध्यान रखना जरुरी है। एक-दो दिन में आवश्यकता अनुसार पानी छिड़कें। 50-60 दिन में पूरी तरह से केंचुवा खाद तैयार हो जायेगी। केंचुएँ अलग करके, खाद को गीली जमीन में मिलाएं।

खाद बनाने की पद्धति में भी योग का प्रयोग

गोबर की खाद, केंचुवा खाद तथा जीवामृत का खेती में उपयोग करने से पहले कम से कम 10 मिनट तक परमात्म शक्तियों से चार्ज करना आवश्यक है। मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ...। अनुभव करें कि परमात्मा की सर्व शक्तियाँ मुझ आत्मा में उतर रही हैं...जो मेरे से खाद में किरणों के रूप में प्रवाहित हो रही है...। संकल्प करें कि आपको फसल को निरोगी और शक्तिशाली रूप से बढ़ने में इन शक्तियों की सहयोगी बनना है...। परमात्म शक्तियों से यह खाद शुद्ध और शक्तिशाली बन रही है... इसमें कोई भी अशुद्धता नहीं है... परमात्म शक्तियों से इसमें से जीवाणु बहुत ही कार्यक्षम हो रहे हैं... आवश्यक मूल द्रव्य पौधों को समय पर तुरंत उपलब्ध हो रहे हैं... ऐसा अनुभव करें।

फसल संरक्षण

प्रकृति में होने वाले बदलावों को और प्रहारों को सहने व सामना करने की शक्ति कुदरत ने सभी प्रकार की वनस्पति को दी हुई है। अगर जमीन शक्तिशाली है तो वनस्पति भी शक्तिशाली बनती है। उसकी रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है, कोई भी कीट या फफूंदी जैसी बीमारी आयेगी तो भी वह ठहरेगी नहीं। यदि जमीन शक्तिशाली नहीं होगी तो वनस्पति कमजोर बनती है और कीट तथा बीमारी का प्रतिकार नहीं कर पाती है इसलिए कीटनाशक दवाइयों का इस्तेमाल करना पड़ता है।

कुदरत का यह नियम है कि जब कोई कीट फसल पर आता है तो उसे नष्ट करने के लिए परभक्षी कीटक भी आते हैं लेकिन उन परभक्षी कीटों के लिए जो पर्यावरण चाहिए वह हमने ही नष्ट कर दिया है। अभी ऐसा पर्यावरण तैयार करना बहुत आवश्यक है। इसके लिए हमारा लक्ष्य यह रहे कि जमीन को शक्तिशाली बनायें और पर्यावरण निर्माण के लिए खेती में पेड़-पौधे लगायें। इसके साथ ही हमें प्रकृति के नियम अनुसार जिस मौसम में जो फसल लेनी है उस मौसम में वही फसल लें। वनस्पतियाँ भी योग्य वातावरण में ही अपना सरंक्षण कर सकती हैं, इससे कम खर्च में ज्यादा उपज मिलती है। इसमें मिक्स फसल पद्धति भी बहुत लाभदायक है। मिक्स फसल पद्धति में अलग-अलग पौधे एक दूसरे को निरोगी और शक्तिशाली बनाने में सहयोगी बनते हैं।

अगर हमने जमीन को शक्तिशाली बनाया है, पर्यावरण निर्माण भी कर रहे हैं फिर भी अचानक वातावरण बदलने से कोई कीट या बीमारी आती है तो उसके लिए निम्नलिखित कीट-निरोधक और फफूंदी-निरोधक दवाइयों का इस्तेमाल करना आवश्यक है। इन दवाइयों के साथ हम योग के प्रयोग करते हैं तो कीट रोकने में अच्छी सफलता मिलती है।

1) दशपर्णी दवाई बनाने की विधि :-

1. कड़वे नीम के पत्ते - 5 किलो
2. कन्हेर के पत्ते - 2 किलो
3. पपीते के पत्ते - 2 किलो
4. करंजी के पत्ते - 2 किलो
5. पार्थेनियम (सफेद फूल) घास के पत्ते - 1 किलो
6. धतूरा के पत्ते - 2 किलो

7. शरीफा (सीताफल) के पत्ते - 3 किलो
8. रूई के पत्ते - 2 किलो
9. एरंडी के पत्ते - 2 किलो
10. गुडवेल के पत्ते - 2 किलो
11. हरी मिर्च कुटी हुई - 2 किलो
इन पत्तों में से एक दो प्रकार के पत्ते नहीं मिलेंगे तो भी चल सकता है।

सीमेंट या प्लास्टिक की टंकी में 200 लीटर पानी में मिलाकर 30 से 40 दिन तक सड़ने दें। टंकी का मुख मोटे कपड़े से बांधकर छांव में रखें। प्रतिदिन मिश्रण को दो बार डंडे से घड़ी की दिशा में हिलायें, 30-40 दिन बाद उसे छानकर, 15 लीटर पानी में एक या दो लीटर (कीट की तीव्रता देखकर) मिश्रण मिलाकर, कोई भी फसल पर किसी भी प्रकार की कीट के लिए छिड़के। एक बार तैयार हुआ यह मिश्रण 6 मास तक इस्तेमाल कर सकते हैं। इस मिश्रण में 2 प्रतिशत प्रति लीटर गोमूत्र मिलाना आवश्यक है।

2) नीम अर्क :- 5 किलो कड़वे नीम के बीज़ों को कूटकर, 10 लीटर गोमूत्र में रातभर भिगो दें और इसमें 500 ग्राम हरी मिर्च कूटकर मिलायें, इससे नीम अर्क अधिक प्रभावी बनता है। साथ ही एक लीटर पानी में 200 ग्राम कोई भी वाशिंग पाउडर भिगो दें। दूसरे दिन यह दोनों मिश्रण हिलाकर छान लें और 200 लीटर पानी में मिलायें। जिस दिन इस्तेमाल करना है उससे दो दिन पहले इसे तैयार करें। इससे कई प्रकार के कीट और फफूंदी जैसी बीमारी पर भी नियंत्रण होता है।

3) लिफ माइनर (नाग अली) नियंत्रण के लिए :- 250 मिली. देशी गाय का छाछ, 50 ग्राम नींबू सत्व, 100 ग्राम गुड़, 100 मिली. इमली का जूस, 10 ग्राम कपूर, 15 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। इससे कई प्रकार के कीट भाग जाते हैं। विशेष लिफ माइनर के लिए यह बहुत ही प्रभावी दवा है।

4) मिलीबग्ज और थ्रीप्स (रस चुसनेवाली कीट तथा सफेद मक्खियों के नियंत्रण के लिए):- 200 लीटर पानी में 5 किलो देशी गाय का ताजा गोबर, 5 लीटर गोमूत्र यह सब 24 घण्टे भिगोकर, छानकर स्प्रे करें। इससे डाऊनी, थ्रीप्स भी कम होती है और सभी प्रकार के अन्न द्रव्य भी फसल के लिए मिलते हैं। अथवा 5 प्रतिशत नीम अर्क का छिड़काव कर सकते हैं।

5) फफूंदी के लिए (फफूंदी रोधक) :- एक किलो ट्रायकोडर्मा, 200 लीटर पानी में **अथवा** 50 किलो गोबर की खाद या 50 किलो गीली मिट्टी में मिलाकर शाम के समय जब गीली हो तब एक एकड़ जमीन पर छिड़कें (हो सके तो नीम के पत्तों की डाली से छिड़काव करें) **अथवा** 200 ग्राम वायविडंग कुटकर (आटा बनाकर), 3 लीटर गोमूत्र, 200 लीटर पानी में मिलाकर दो दिन तक टंकी में रखें। टंकी का मुख मोटे कपड़े से बांधकर रखें। प्रतिदिन इस मिश्रण को दो बार डंडे से घड़ी की दिशा में हिलाएं और इसे छानकर छिड़काव कर सकते हैं। अथवा 5 लीटर देशी गाय के दही की छांछ 2 दिन तक तांबे (कॉपर) के बर्तन में (ज्यादा खट्टा बनने के लिए) रखकर, 200 लीटर पानी के साथ, 100 ग्राम हींग, 100 ग्राम हल्दी मिलाकर फसल पर स्प्रे कर सकते हैं।

6) फफूंदी के प्रकार और उसके किये गये उपाय :-

(1) करपा (पत्तों का जलना) के नियंत्रण के लिए :-

(ए) सवेरे सूर्योदय के पहले जिस दिशा से हवा आती है उस दिशा में देशी गाय के गोबर की गोणियां (कण्डे) जलाकर धुआँ कर दें। बाद में वह राख फसल पर छिड़क दें।

(बी) 5 लीटर देशी गाय के दही की छाछ दो दिन तक तांबे (कॉपर) के बर्तन में रखकर 200 लीटर पानी के साथ 100 ग्राम हींग, 100 ग्राम हल्दी मिलाकर फसल पर छिड़क दें।

(2) तांबेरा (जंक चढ़ना) :- (धान, सोयाबीन, गेहूँ जैसी फसल पर आने वाली बीमारी)

(ए) कड़वे नीम का तेल 100 मि.ली., करंजी का तेल 100 मि.ली., गोमूत्र 100 मि.ली., स्टीकर 10 मि.ली. अथवा 50 ग्राम साबून पाउडर, 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़क दें।

(बी) 5 लीटर देशी गाय का छाछ दो दिन तक तांबे (कॉपर) के बर्तन में रखकर 200 लीटर पानी के साथ 100 ग्राम हींग, 100 ग्राम हल्दी मिलाकर फसल पर छिड़क दें।

(3) भूरी और डाऊनी मिल्डयू के नियंत्रण के लिये :-

(ए) देशी पपीते के पत्ते 2 किलो, सहजन के पत्ते 2 किलो, 4 लीटर गोमूत्र, 200 लीटर पानी में मिलाकर 3 दिन तक टंकी में सड़ने दें। इस मिश्रण को रोज़ दो बार डंडे से घड़ी की दिशा में हिलाएं और छानकर स्प्रे करें। टंकी के मुख को मोटे कपड़े से बांधकर छांव में रखें।

(बी) 5 लीटर देशी गाय का छाछ दो दिन तक तांबे (कॉपर) के बर्तन में रखकर 200 लीटर पानी के साथ 100 ग्राम हींग, 100 ग्राम हल्दी मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।

उपरोक्त दवाइयों की कार्यक्षमता बढ़ाने हेतु योग विधि :- जो भी दवाई बनाते हैं उसे भी परमात्मा की याद में पवित्र और शक्तिशाली किरणों से चार्ज करना है... अनुभव करें... परमात्म शक्तियों की किरणें... पवित्रता की किरणें... इसमें उतर रही है... यह दवा अधिक कार्यक्षम हो रही है... इससे रोग प्रतिकारक क्षमता बढ़ेगी... कोई भी कीट अथवा बीमारी इससे तुरंत निकल जायेगी... 10 मिनट तक यह अनुभव करें... फसल पर स्प्रे करते समय भी अनुभव करें कि यह दवा परमात्म शक्तियों के साथ फसल में प्रवाहित हो रही है... और फसल निरोगी, शक्तिशाली होकर बढ़ रही है...।

शाश्वत यौगिक खेती करने वाले कुछेक किसान भाई-बहनों के अनुभव

बी. के. प्रहलाद भाई - टोंक, राजस्थान (मो. 08107670589)

मैं धाकड़ समाज से एक किसान हूँ, ग्राम खातौला, तहसील उनियारा, जिला टोंक का निवासी, वर्ष 1973 से राज्य सेवा में कृषि उत्पादन बढ़ाने की सेवा करते हुए, सन् 2001 में स्वैच्छिक सेवानिवृत्त होकर आध्यात्मिक वैज्ञानिक बनकर ईश्वरीय कार्य में श्रेष्ठ कर्मयोगी जीवन सफल कर रहा हूँ। मैं ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का नियमित विद्यार्थी हूँ।

ग्राम विकास प्रभाग की ओर से 2013 में ज्ञान सरोवर में कृषि अधिकारियों, वैज्ञानिकों व प्रगतिशील किसानों का सम्मेलन था जिसमें टोंक से मेरे साथ एक प्रगतिशील किसान गंगाराम रघुवानी का आना हुआ। परमात्मा ने उनको निमित्त बनाया, उन्होंने मुझसे कहा कि मेरा 5 हैक्टेयर का कृषि फॉर्म है उसे आप सम्भालो। मैं आपको निमित्त बनाकर शाश्वत यौगिक खेती के लिये ब्रह्माकुमारीज़ को गोद देता हूँ। हमने उस स्थान पर विधिवत 22 दिसम्बर 2010 को शाश्वत यौगिक खेती का शुभारम्भ किया।

प्रोजेक्ट की 2 वर्ष की प्रगति

इस खेती प्रोजेक्ट पर अमरूद, नींबू, आंवला, अनार के बगीचे हैं। साथ में खाली जगह पर जैविक पद्धति के साथ धान्य फसलें व सब्जियाँ भी उगाई जाती है। मैं यहाँ अमरूद के फल के उत्पादन के लाभ का विवरण देना आवश्यक समझूँगा जिसकी प्रगति निम्न प्रकार है -

प्रोजेक्ट पूर्व में उत्पादन का शुद्ध मुनाफा राशि – प्रोजेक्ट के बाद में उत्पादन राशि विवरण शुद्ध मुनाफा लाभ राशि

वर्ष 2012-13	वर्ष 2013-14	वर्ष 2014-15
15,000/-	1,80,000/-	3,40,000/-

रासायनिक पद्धति के अमरूदों के बगीचों की प्रति वर्ष उनकी ग्रोथ के अनुसार 10 से 15 प्रतिशत लाभ वृद्धि प्राप्त की जाती है लेकिन शाश्वत यौगिक खेती में प्रति वर्ष 50 से 60 प्रतिशत तक की लाभ वृद्धि पायी गयी जिसके कारण निम्न प्रकार हैं -

पंछियों से फसल की सुरक्षा :- हमारे अमरूद की खेती में तोते बहुत आते थे और कई अमरूदों को चोंच मारकर नीचे गिराते थे। वे खाते बहुत कम थे और नुकसान ज्यादा करते थे तब मैंने भगवान की याद में खेती में बैठकर योग का प्रयोग किया कि मेरी खेती में जो भी तोते

आते हैं, वे जिस अमरूद को चोंच मारते हैं वह पूरा खाकर ही जायेंगे, ऐसा संकल्प करके मैंने वहाँ का वातावरण भी शक्तिशाली बनाया। जब से मैंने यह प्रयोग किया तब से बगीचे में अमरूद का नुकसान बहुत ही कम होने लगा और तोतों से बगीचे की रक्षा करने की भी जरूरत नहीं पड़ी। इसके कारण मजदूरों का खर्चा भी कम हो गया। साथ ही मैं रोज़ अमृतवेले उस बगीचे को इमर्ज कर योगदान देकर संकल्प करता था कि इस बगीचे के फल बहुत ही बड़े और स्वादिष्ट, मीठे बन रहे हैं। हमने खेती में सिर्फ देशी खाद का ही इस्तेमाल किया था, तो फल भी बड़े और स्वादिष्ट मिलने लगे।

इस प्रकार अन्य फसलों व फलों में प्रगति पाई गई। इस अलौकिक कल्याणकारी खेती को देखकर कृषि वैज्ञानिकों ने गेहूँ की फसल के लिए रासायनिक, जैविक व शाश्वत यौगिक पद्धति के अलग-अलग प्लॉट बनाकर तुलनात्मक परिणाम देखें। प्रथम वर्ष से ही शाश्वत यौगिक खेती का परिणाम रासायनिक खेती की तुलना में बराबर-सा प्राप्त हुआ जिसका अनुसंधान आगे भी चलता रहेगा।

इस प्रोजेक्ट द्वारा किसानों को आर्थिक दृष्टि से भी लाभान्वित किया जा रहा है। सभी सरकारी योजनाओं के साथ वर्मी कम्पोस्ट उद्योग का इस जमीन में प्रदर्शन किया जा रहा है ताकि किसान सरकारी योजनाओं द्वारा कम खर्च करते हुए मुनाफा अधिक ले सकें।

यहाँ पर खेतीकर्ता दो राजयोगी परिवार रहते हैं जिनकी समस्त दिनचर्या ईश्वरीय नियमानुसार रहती है। महीने में एक बार खेती को शुभ वायब्रेशन देने के लिये संगठित रूप से सभी भाई-बहनों का योग यहाँ रखा जाता है। इस परमात्म खेती के फलीभूत होने के लिये करनकरावनहार परम कृषक परमात्मा के साथ, हम निमित्त श्रेष्ठ कर्मयोगी कृषक पाँचों तत्वों का भी सहयोग लेते हैं। विशेष नित्य अमृतवेले भूमि को शुभ, श्रेष्ठ संकल्प देते हैं कि अब हम आपके लाल आपको जहर नहीं देंगे। जल, वायु को भी संकल्प देते हैं कि जहरीली दवा प्रयोग कर आपको दूषित नहीं करेंगे। इस तरह आकाश तथा सूर्य को भी कहते हैं, अब आपको रचता परमात्मा मालिक के कार्य में सहयोगी बनकर परम कृषक परमात्मा का नाम बाला करना है।

इसी प्रकार पंछियों को भी कहते हैं कि जीवनयापन के लिये खेती से 10 प्रतिशत पाने का आपको अधिकार है लेकिन अधिक नुकसान नहीं करना है। नुकसान पहुँचाने वाले कीट-जंतुओं को भी कहते हैं, रचता पिता की पावन अमृत खेती में आपको अपना संस्कार परिवर्तन करके सहयोगी बनना है। इन संकल्पों के नित्य प्रयोग से प्रकृति, पशु, पंछी, जीव, जंतु, वनस्पति सकारात्मक परिणाम देते हैं और शाश्वत यौगिक खेती में सहयोगी बनते हैं। समय प्रति समय

फसल की स्थिति के अनुसार श्रेष्ठ सकारात्मक संकल्प व शुभ भावनाओं के प्रकम्पन सकारात्मक रीति से सहयोगी बनते हैं।

इस स्थान पर जो भी राजयोगी एक बार आ जाता है वह अमृतवेले प्रात: 4.00 बजे परमात्म प्यार, पवित्रता व शान्ति की ऊर्जा पाँचों तत्वों व वनस्पति को देते हैं। इस प्रकार सर्व के सहयोग से यह खेती फलीभूत हो रही है। प्रति हजार वर्ग मीटर क्षेत्र पर खेती में शिव ध्वज लगाया गया है। बीजों को अमृतवेले 4 दिनों तक सकारात्मक चिंतन व शुभ संकल्पों द्वारा ध्यान कक्ष में ऊर्जावान व निरोगी बनाया जाता है व संकल्प दिया जाता है कि आपको सशक्त व निरोगी होकर खूब फलना, फूलना है। जैविक खाद व पानी के प्रयोग के समय भी परमात्म याद के साथ श्रेष्ठ शुभ भावनायें भरी जाती है। स्वदेशी गौ सेवा के साथ-साथ उसके गोमूत्र व गोबर से जीवामृत बनाकर खेती में प्रयोग किया जाता है।

समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम किये जाते रहे हैं

* प्रोजेक्ट फॉर्म पर आने वाले किसानों व कृषि अधिकारियों को पावन पद्धति से की जा रही खेती का अवलोकन करवाकर उन्हें किसान हित में इस कारगर खेती की शिक्षा भी दी जाती है।
* यहाँ पर लगाई गई शाश्वत यौगिक खेती प्रदर्शनी व परमात्म परिचय प्रदर्शनी का अवलोकन कराकर परमात्म ध्यान-कक्ष में ध्यान भी करवाया जाता है।
* 23 जून, 2015 को अन्न महोत्सव व परमात्म ध्यान-कक्ष का उद्घाटन माननीय कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, राजस्थान द्वारा किया गया। आपने भी इस खेती की सराहना करते हुए, ब्रह्माकुमारीज़ किसानों को इसका प्रशिक्षण दें, ऐसी इच्छा जाहिर की। इस कार्यक्रम में 200 से अधिक प्रगतिशील किसानों, कृषि अधिकारियों व कृषि वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

मेरी विश्व प्रति शुभ इच्छा

यह प्रोजेक्ट ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग के तत्वावधान में विश्व विख्यात हो। अन्नदाता किसानों, कृषि अधिकारियों व कृषि वैज्ञानिकों के साथ विश्व की मानव आत्माओं को परमात्म अवतरण का पैगाम मिले। यही एक शुभ इच्छा है कि अन्नदाता किसान सभी को शुद्ध सात्विक आहार खिलाकर उनके मन व तन को दुरूस्त रखे।

बी.के. हर्षा बहन दवे

भरुच, गुजरात (मो. 09969263936)

मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझाती हूँ जो सन् 1996 से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में पूरे परिवार के साथ जुड़कर राजयोग का अभ्यास करते हुए योगी जीवन जी रहे हैं। सन् 2004 में गुजरात के भरूच जिले के झगडिया में 7 बीघा जमीन खरीदी जो बिल्कुल बंजर और उबड़-खाबड़ थी। सालों से उसमें खेती ठीक से नहीं हो पाई, उसमें हमने आम के बाग का संकल्प किया। मेरे पति की भी इच्छा थी कि इस जमीन में जहर अर्थात् रासायनिक खाद व कीटनाशक न डालें सिर्फ जैविक खाद का प्रयोग करें। कोई भी विशेष कार्य करने से पहले परमात्मा का ध्यान करना हमारे जीवन का हिस्सा है। तो आम के पौधों को लगाने से पहले हमने परमात्मा का आह्वान किया तथा पवित्र ब्रह्माकुमारी बहनों के हस्त-कमलों से पौधे लगवाने शुरू किये।

पानी की सुविधा करने के लिए बोर खुदवाया तो 30 फीट नीचे ही पानी मिल गया। जैसे ही पानी की पहली धारा निकली तो हमने शिव परमपिता परमात्मा को धन्यवाद दिया। उसी समय अचानक आकाश से बूँदें गिरने लगी जैसे हमें प्रकृतिपति परमात्मा आशीर्वाद दे रहा हो, यह बेमौसम बरसात थी।

हमने आम के 200 कलम लगाये जिसमें केसर, राजापुरी और दशहरी आदि आम की किस्में थी। आम के पेड़ बड़े होने तक पपीते लगाये। हमने खेत का नाम 'प्रभु उपवन' रखा है क्योंकि इसका मालिक स्वयं परमपिता परमात्मा है। हम खेत में विशेष राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ पर पैदा होने वाले चीकू, केले, पतीते, अमरूद काफी स्वादिष्ट होते हैं। हमें योग के फलस्वरूप उत्तम क्वालिटी की पैदावार प्राप्त होती है।

हमने देखा कि हमारी शुभ भावनाएं और शुद्ध श्रेष्ठ विचार वातावरण के साथ-साथ वनस्पतियों को भी प्रभावित करते हैं। जब हम खेती में बैठकर परमात्मा को याद करते हैं, तो हमें परमात्म शक्तियाँ और दिव्य गुण प्राप्त होते हैं जो हमसे पूरे वातावरण में फैल जाते हैं। हमने महसूस किया कि पेड़-पौधे सजीव होने के कारण हमारी भावनाओं को ग्रहण करते हैं।

यौगिक कृषि एक ऐसा सूक्ष्म विज्ञान का विषय है जिस पर बहुत ही अनुसंधान किये जा सकते हैं जिसके परिणाम हमेशा आश्चर्यजनक ही होंगे। हमारे मन की सच्ची शान्ति पौधों को सुकून देती है। एक सकारात्मक शुद्ध सोच-विचार से वातावरण में पेड़-पौधे खुश नज़र आते हैं जिससे पैदावार भी बढ़ती है। जब हमसे सुख, शान्ति, आनन्द की भावनाएं वायब्रेशन्स के रूप में

प्रस्फुटित होती हैं तो पौधों की ग्रोथ पॉवर बढ़ती हुई महसूस होती है तथा योगबल से फल में मिठास तथा गुणवता आ जाती है।

जो भी इस यौगिक खेती में आते हैं, खुशी के इस वातावरण में पिकनिक करके फल खाकर दिल से दुआयें देकर जाते हैं। जो एक बार इस यौगिक खेती के उगाये हुए फल खाता है तो अगले वर्ष के लिए वह एडवान्स बुकिंग कर लेता है। कई ग्राहक अपने आप ही गाड़ी लाकर आपेही भारी मात्रा में लेकर जाते हैं। सीधा ग्राहकों को जागृत करने के कारण हमें मार्केट में जाना नहीं पड़ता है, जिससे मुनाफा भी ज्यादा मिलता है क्योंकि ट्रांसपोर्ट का जाने-आने का खर्चे वा कई प्रकार की परेशानियों से भी बच जाते हैं।

जब पौधों में कोई बीमारी आती है तो हम उस समय विशेष योगाभ्यास करते हैं। जब हमसे योग के शक्तिशाली वायब्रेशन फैलते हैं तो पौधे भी शक्तिशाली हो जाते हैं। जब हमसे पवित्रता के वायब्रेशन फैलते हैं तो नुकसान पहुँचाने वाले फंगस, वायरस से प्रतिकार करने की शक्ति पौधों में बढ़ती है। जब बेमौसम आंधी, तूफान के साथ वर्षा होती है अथवा फॉग आता है तो भी खेती सुरक्षित रहती है। दूसरों की खेती से तुलना करें तो हमारी यौगिक खेती का नुकसान कम ही होता है, यह देखने में आया है।

पहले बताई गई योग कॉमेन्ट्री अनुसार अमृतवेले हम प्रकृति को योगदान देते हैं और खेती में भी योगदान देते हैं। सबसे पहले हम स्वमान में स्थित होते हैं, जैसेकि मैं आत्मा परम पवित्र हूँ... पवित्रता के सागर परमात्मा से पवित्र किरणें मुझ आत्मा में समा रही हैं... मेरे नयनों से पूरी खेती में वे किरणें प्रवाहित हो रही हैं...। वातावरण बहुत ही शुद्ध बनता जा रहा है...। इस पवित्र वातावरण में कोई भी बीमारी अथवा कीट नहीं होगा... फसल सुरक्षित है... इन्हीं संकल्पों का परिणाम मैं प्रत्यक्ष रूप में देख रही हूँ।

यौगिक खेती करने के लिये हमने 5 देशी गाय पाली हैं क्योंकि गौ-उत्पाद यौगिक खेती के लिए बहुत ही उपयोगी होता है। गोबर गैस का प्लांट भी चलाते हैं। प्रभु उपवन की देख-रेख के लिए तथा इस खेती एवं गायों की सुरक्षा के लिए हमने एक आदिवासी परिवार का सहयोग लिया है। संयोग से यह आदिवासी परिवार भी बहुत ही संस्कारी, निर्व्यसनी, ईमानदार और प्रकृति प्रेमी है। यह परिवार भी ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के साथ जुड़ गया है। उनके जवान बच्चे भी नियमित रूप से इस राजयोग का अभ्यास करते हैं तथा ईश्वरीय नियम-मर्यादाओं का पालन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करने के साथ-साथ इस प्रभु उपवन की जिम्मेवारी को भी ईश्वरीय सेवा समझ करके करने लगे हैं।

जैविक खेती करने वाले अनेकों किसान हमारे फॉर्म को देखने आते रहते हैं और वे आश्चर्य से पूछते हैं कि आपने इस खेत में ऐसी क्या खाद डाली है जिससे यह खेती इतनी अच्छी है। हम उन्हें राजयोग के अभ्यास के बारे में बताते हैं एवं इस यौगिक खेती की पद्धति को अपनाने की प्रेरणा देते हैं। इसी अनुभूति के चलते हमें भारत के विभिन्न राज्यों में जाकर शाश्वत यौगिक खेती की प्रेरणा देने एवं प्रचार करने का सौभाग्य समय प्रति समय प्राप्त होता रहता है जिससे हमारे किसान भाई-बहनों के जीवन में सुख-शान्ति के साथ समृद्धि भी आ जाये, यही हमारी सबके लिये शुभ आश है क्योंकि यही सच्ची ईश्वरीय सेवा है या कहें जन सेवा है।

बी.के. चेतना बहन

राजकोट, गुजरात (मो. 07698576264)

हमने राजकोट में एक एकड़ जमीन में यौगिक खेती की ट्रायल की। हमने एक एकड़ जमीन में 2 किलो अमेरिकन मकई के बीज बोये थे, उसमें हमें बहुत अच्छी सफलता मिली।

हम सबसे पहले एक सप्ताह तक अमृतवेले क्लास के सभी बी.के. परिवार के सदस्य खेती को योग में पवित्रता की किरणें देते थे। फिर बीज बुआई से लेकर फसल काटने तक खेती का सब काम हम राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहनें सब मिलकर किया करते थे। उसमें हमने कोई जहरीली खाद वा अन्य कोई भी दवाई नहीं डाली, सिर्फ दो बारी जीवामृत दिया और एक बारी गोमूत्र डाला था लेकिन हर 15 दिन में एक बारी वहाँ सभी योग करने जरूर जाते थे और खेत में चक्र लगाने के साथ सभी पौधों से बातें करते थे। जैसेकि हे धरती माता! हे पौधों! आपको क्या चाहिए... हम आपसे रोज़ मिलते रहेंगे, रोज़ बातें करेंगे, आपको स्नेह-प्यार देंगे। आपको तो कई लोगों की पेट की क्षुधा को शान्त करना है, उनकी भूख को दूर करना है। हम परम पवित्र आत्मायें आपको संकल्प से रोज पवित्र किरणों का प्रकाश देते हैं, परमात्म याद की शक्तियों का जल देते हैं। तुम्हें और क्या चाहिए! हम तुमसे दोस्ती चाहते हैं, आप हमारे दोस्त हो ना, आपकी दोस्ती से हमें बहुत खुशी मिलती है। तो आप भी जिसके पेट में जाओ उन्हें खुशी, शान्ति और शरीर का सुख देना है। आज तक हमने अनजाने में आपको रासायनिक खाद द्वारा जैसेकि जहर पिलाया लेकिन अब हम आपसे माफी मांगते हैं, हे धरती माता! आपको भी हमने विष पिलाकर दूषित कर दिया। आप हमें माफ कर देना क्योंकि अब हम कभी भी आपको इस

तरह से दु:ख नहीं देंगे। ऐसे हम रोज़ अमृतवेले योग में संकल्प करते थे और मन से खेत में चक्र लगाते थे और पौधों से सूक्ष्म रूप से मिलकर संवाद करते थे। और एक बात कि पहले उस खेती में कुत्ते आकर के फसल को बहुत बिगाड़ते थे लेकिन योग करने पर वो समस्या भी खत्म हो गयी। इन सबका बहुत अच्छा परिणाम यह देखने को मिला कि सब पूछते थे कि आपने ऐसी कौन-सी खाद डाली है जो फसल इतनी प्रफुल्लित होकर बढ़ती जा रही है! तो हमने उन्हें अपनी इस यौगिक पद्धति की जानकारी दी। वे भी हमारी इस अलौकिक विधि को सुनकर अवाक् रह गये। अभी वर्तमान समय उसी में गुलाब के फूलों की खेती कर रहे हैं, वह भी बहुत ही अच्छी है।

बी.के. जयश्री बहन

शाहपुर, जि. गांधीनगर, गुजरात (मो. 09426702723)

सन् 2000 से पहले मैं (बी.के. जयश्री बहन, टीचर) साधना भवन, अहमदाबाद में सेवायें देती थी। बाबा ने मुझ से गार्डन की सेवायें करवाई। पौधे लगाना, उनकी संभाल करना, उनसे बातें करना, अपने हाथों से उन्हें सँवारना मेरा जैसेकि शौक बन गया। ये पौधे मुझे अपने परिवार के सुखद सदस्य लगने लगे थे। जब भी मैं उनके पास जाती थी तो मेरा मन खुशी से, प्यार से नाचने लगता था। ऐसा लगता था कि मुझे कोई अपने मिल गये हो। एक दिन भी यदि मैं मिस करती तो मुझे अजीब-सी कशिश महसूस होती थी। जैसे कोई किसी को पुकारता हो और दिल उनसे मिलने के लिये बेताब हो। कुदरत के बीच रहने से सिर्फ पौधे ही नहीं किन्तु पशु, पंछी भी मुझे अपने दोस्त महसूस होते हैं। मोर, गाय, साँप ये तो मेरे अपने लगते हैं। मोर को आवाज देते ही वे मेरे पास आ जाते हैं। साँप से कभी भी मुझे डर नहीं लगा, कई बार तो मेरे पास कमरे में आ जाते थे, मेरे पैरों के नजदीक से गुजरते थे। मुझे हमेशा यह महसूस होता है कि ये सभी अपने है। यह कमाल परमात्मा की ही है।

सन् 2000 में गांधीनगर जिले में शाहपुर गाँव में सेन्टर खुला। शाहपुर तथा उसके आस-पास के गाँवों की सेवा निमित्त शाहपुर आना हुआ। बाबा की कमाल कि सन् 2008 में ग्राम विकास प्रभाग की ओर से शाश्वत यौगिक खेती अभियान शुरू हुआ था। शाहपुर सेवाकन्द्र खोलने के निमित्त हंसमुख भाई को संकल्प आया कि हमें भी इस नयी पद्धति का प्रयोग हमारे

खेत में करना चाहिए, तब से लेकर आज तक यहाँ पर शाश्वत यौगिक खेती का प्रयोग हम करते आये हैं और वर्तमान समय में भी यह प्रयोग चल रहा है।

हमें इस बात की खुशी है कि भारत की प्राचीन शाश्वत यौगिक खेती करने का सुअवसर हमें प्राप्त हुआ है। जब भी बीज बोना होता है तो हम परम प्यारे शिवबाबा के कमरे में 3 या 7 दिन तक बीज को रखते हैं। अमृतवेले (ब्रह्म मुहूर्त प्रात: 4 से 4.45), नुमाशाम (शाम 7 से 7.30) बीज में विशेष योग के प्रयोग द्वारा शक्तियाँ भरते हैं। जब भी धरती में हल जोतना होता है तो हम धरती माँ से क्षमा मांगते हैं कि आज हम आपकी गोदी में हल चला रहे हैं, इससे आपको दर्द होगा, हमें क्षमा करना। फिर जब भी बीज बुआई होती है तो अमृतवेले शिव परमात्मा, पिताश्री ब्रह्मा एवं दादियों का आह्वान करते हैं। बीज बोने से पहले खेती में काम करने वाले भाई बहनें 5 मिनट योग कक्ष में जाकर परमात्मा शिव को याद करते हैं। प्रभु पिता की याद के गीत सुनते-सुनते बीज की बुआई होती है। बीज बुआई के समय बीज को वायब्रेशन देते हैं कि हे बीज, तुम्हारा जन्म स्वयं परमात्मा की खेती में हो रहा है। तुम कितने भाग्यशाली हो कि अनेक मनुष्य आत्माओं के तन को निरोगी, तन्दुरूस्त बनाने की सेवा के लिये तुम्हारा जन्म हो रहा है। तुम्हें स्वयं परमात्मा से प्यार की, शक्तियों की किरणें प्राप्त होंगी। स्वयं भगवान की पालना में पलोगे। तुम्हारी पवित्र ब्राह्मण आत्माओं के हाथों से पालना होगी। तुम्हें यहाँ कोई जहर या रासायनिक खाद नहीं दी जायेगी। तुम बड़े प्यार से निश्िंचत होकर बढ़ना, तुम्हारा जन्म महान सेवा कार्य के लिये होने वाला है। तुम तो भगवान के खेत की शोभा हो।

जब पौधे निकलना शुरू होते हैं तब प्रात: 4.00 से 4.45 या शाम 7.00 से 7.30 बजे तक योगदान देते हैं। साथ-साथ खेती में सुबह-शाम गीत भी बजाते हैं।

एक बार टमाटर के पौधों को गोमूत्र का छिड़काव करते समय मात्रा ज्यादा हो गयी, जिसकी वजह से पौधे जल गये। फिर हमने परमात्मा की याद में सिर्फ पानी का स्प्रे किया, 4-5 ब्राह्मण आत्माओं ने लगातार 6 दिनों तक सुबह शाम पौधों को विशेष योगदान दिया। उनके पास जाके विशेष हाथों से उन्हें सहलाते हुए संवारते रहे। 6 दिनों के बाद वे पौधे जैसे थे वैसे हो गये। सचमुच यह परमात्म शक्ति की अद्‌भुत कमाल थी।

टमाटर के खेत में मीलीबग बहुत आते थे। पौधों को सुखा देते थे। हमने योग के प्रयोग किये तथा वायब्रेशन भी दिये। साथ-साथ खेत में गोमूत्र, नीम ऑयल, मिर्च पाउडर का छिड़काव किया। पिछले दो साल से मिलीबग आते ही नहीं है। खेत में नुकसान करने वाले और पशु-पंछियों के लिये भी शुभ वायब्रेशन का प्रयोग किया गया था। बन्दर, मोर आदि आते थे, खाते भी

थे लेकिन खेत में बिना नुकसान के। जो भी नुकसान पहुँचाने वाले कीट थे उन्हें भी वायब्रेशन देने से उनका आना बन्द हो गया।

हमें इस बात की खुशी है कि यौगिक खेती को अपनाने से धरती माँ को, पौधों को कोई कीटनाशक (जहर) नहीं दिया और रासायनिक खाद भी नहीं दिया। यौगिक खेती के कारण भगवान से योग भी बढ़ गया, प्रकृति के पाँचों तत्वों से संवादिता भी बढ़ी और मनुष्यात्माओं की सेवा भी हो रही है। स्वास्थ्य भी मिलता, खुशियाँ भी रहती और परमात्मा से शक्तियाँ भी प्राप्त होती। दुआयें भी मिलती, स्थूल धन की कमाई के साथ-साथ आत्मा की भी कमाई होती है।

बी.के. हसमुख भाई

शाहपुर, जि. गांधीनगर, गुजरात (मो. 09898631601)

सभी लोग जिस तरीके से खेती करते हैं उससे भिन्न रूप से खेती करना, नई-नई तकनीक अपनाना और सबके लिये प्रेरणास्रोत बनना, यह मेरा शुरू से ही विशेष लक्ष्य था। मुझे पहले ही यह नाज़ था कि मैं धरती पुत्र हूँ, अन्नदाता हूँ। खेती सभी के जीवन का आधार है, उसके आधार स्रोत हम हैं, यह बात मुझे ब्रह्माकुमारीज़ में आने से और अधिक स्पष्ट रूप से समझ में आ गई।

सन् 2009 में मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आया। मुझे यहाँ का ज्ञान बहुत अच्छा लगा, बोध हुआ कि सच्चा ज्ञान क्या है? फिर बाबा ने मुझे शाहपुर, गांधीनगर सेन्टर के निमित्त बनाया। हमारा घर और खेती की जमीन दोनों बाबा की सेवा में सफल हो रहे हैं, इसकी मुझे बहुत खुशी है। थोड़े समय के बाद मुझे आबू में ग्राम विकास प्रभाग की मीटिंग में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जहाँ शाश्वत यौगिक खेती की जानकारी प्राप्त हुई। इसके फायदे सुनकर मुझे उमंग आया और तभी से मैंने यह निश्चय कर लिया कि अब बाबा के घर (सेन्टर) के आगे जो खेत है उसमें यौगिक विधि से ही खेती करनी है, तब से आज तक शाश्वत यौगिक पद्धति से खेती कर रहे हैं।

इस मीटिंग से मुझे यह जानकारी प्राप्त हुई कि मैं किसान हूँ तो हमारे द्वारा बिना रसायनों के पैदा हुआ अन्न वा सब्जी सात्विक, पौष्टिक होना चाहिए ताकि सभी निरोगी बनें। उनके मन को शान्ति और शक्ति भी प्राप्त हो।

सबसे पहले हमने दो एकड़ जमीन में गेहूँ की बुआई की। इसके पहले दीमक से बचाव के लिए जहरीली दवाई मिक्स करके गेहूँ की बुआई करते थे। इस बार हमने बाबा के कमरे में 7 दिन तक संस्करण के लिये गेहूँ के बीज रखे, फिर बाबा की याद में, बाबा के बच्चों के द्वारा ही बुआई की। पहली बार में ही बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले। बिगर दवाई के भी उसमें एक भी दीमक नहीं आई और गेहूँ की चमक भी अच्छी थी, उपज भी अच्छी हुई। उस गेहूँ की रोटी खाने में बहुत नरम भी थी, इस प्रकार गेहूँ की फसल में सफल प्रयोग के बाद हमने उसी जमीन में बैंगन और टमाटर की भी फसल ली। एक एकड़ बैंगन की फसल में हमें 80 हजार का फायदा हुआ और टमाटर की विशेषता यह देखी कि उसकी चमक बहुत अच्छी थी, खटाई भी बहुत कम थी, टॉमेटो सॉस बनाने में हमें चीनी भी कम डालनी पड़ती थी। जब कभी टमाटर को हम थोड़े दिन बाहर रखते थे तो वह वैसे ही नरम रहते थे यानी खराब नहीं होते थे। दूसरे टमाटर बहुत थोड़े समय में खराब हो जाते हैं।

टमाटर और बैंगन की खेती करते समय शुरू में उसमें मीलीबग नाम की कीट लगी थी पर हमने उसके ऊपर मिर्च पाउडर का छिड़काव किया और मुख्य तो प्रतिदिन सुबह और शाम योग का प्रयोग करते ही थे। तब से मीलीबग कीट आता ही नहीं है। यह भी एक चमत्कार के रूप में हमने परिणाम देखा। हमारे में और उत्सुकता बढ़ती गई। हमारे लिये योग के प्रकम्पन फैलाना बहुत सहज है क्योंकि सेन्टर के सामने ही बाबा की खेती है।

इफ्को कम्पनी द्वारा इस जमीन की मिट्टी का परीक्षण (सोइल टेस्ट) करवाया तो रिपोर्ट को देखकर अधिकारी कहने लगे कि आपकी जमीन और पानी दोनों बहुत ही अच्छे हैं। जमीन की उर्वरक शक्ति बहुत ही फलदायक है। हमें इस बात की खुशी है कि यह भी सेवा का एक साधन बन रहा है। इस खेती को देखने के लिये पूरे भारत वर्ष से कई लोग आ चुके हैं, इतना ही नहीं बल्कि विदेशों से भी कई लोग आते हैं और प्रेरणायें लेकर जाते हैं। सचमुच बाबा ने यह यौगिक पद्धति की खेती का एक मॉडल बना दिया है, नई विधि से सेवा करने का स्थान बना दिया है। हमें भी बहुत अच्छा लगता है जब ऐसे रूहानी अलौकिक माहौल में आकर कोई सुकून महसूस करके खुश हो जाता है।

यौगिक खेती में बुआई के पहले 50 ग्राम गुड़, देशी गाय का एक किलो गोबर, एक लीटर देशी गाय का गोमूत्र इन तीनों का मिश्रण करके तीन दिन तक रखते हैं और दिन में तीन बार घड़ी की दिशा में हिलाते हैं। तीन दिन के बाद गीले खेत में फंवारते हैं। उसके बाद फिर स्वेड कर बुआई करते हैं, अगर कोई कीट आ भी जाता है तो गोमूत्र और पानी का स्प्रे करते हैं। साथ

में रोज़ योग तो करते ही हैं। विशेष करके बुआई बाबा के बच्चों के द्वारा ही होती है। सुबह शाम खेत में बाबा के गीत बजाते हैं और क्लास के सभी भाई-बहनें अमृतवेले उसे विशेष सकाश भी देते हैं। हमें इस बात की भी बहुत खुशी है कि आने वाले समय में सशक्त जमीन द्वारा ही अन्न पैदा होने वाला है, ऐसे धरती माँ को हम अभी से ही योग बल से, जैविक खाद और जीवामृत से सशक्त बना रहे हैं। पाँचों ही तत्वों को योगदान देते हैं। उसका असर भी होता है। हमने इस बार देखा कि कई किसानों की करेले की फसल नष्ट होने लगी लेकिन बाबा के खेत के करेले हरे ही थे।

24 मई 2015 को हमने बड़े रूप से किसान सम्मेलन का आयोजन किया। सभी कहते थे, इतनी गर्मी में कौन आयेंगे? आयेंगे तो भी 5 हजार नहीं आयेंगे लेकिन अमृतवेले के योग की कमाल 5 हजार किसान भी आ गये, प्रकृति ने भी शीतलता का साथ दिया, सभी प्रेरणा लेकर गये, अधिकारीगण भी प्रेरणायें लेकर गये। इन सबका श्रेय तो हमारे प्यारे बाबा को ही जाता है क्योंकि उनकी अनुकम्पा से ही यह सब सम्भव हो पाया है। रोज़ योग करने की शक्ति से ही यह कमाल देखने को मिला है इसलिए ऐसे मीठे बाबा के प्रति दिल से धन्यवाद निकलता है कि वाह बाबा वाह! वाह मेरा भाग्य वाह! ऐसी सूक्ष्म एवं स्थूल सेवा के निमित्त बनाकर हमारा भाग्य बना रहे हैं, बढ़ा रहे हैं। फिर से दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया... वाह ड्रामा वाह! वाह बाबा वाह! वाह ब्राह्मण परिवार वाह!

अन्त में खास बी.के. किसान भाइयों से तो यही अनुरोध करना चाहूँगा कि जिसके पास अपनी खुद की खेती है, पहले उसमें से कुछेक हिस्से में अवश्य ही इस सहज राजयोग के प्रयोग से खेती करके देखना चाहिए, करना ही चाहिए। इसमें स्व सहित सर्व की सेवा साथ-साथ प्रकृति की भी सेवा हो जाती है। अच्छा अन्न खाने से मन भी अच्छा रहता है। ऐसे अन्न की पूर्ति करने से सबकी दुआयें भी मिल जाती हैं।

ब्र.कु. दलजी भाई

पालनपुर, गुजरात (मो. 09737752721)

हम खेती में जब बुआई करते थे तो बीज को रासायनिक दवाई से भिगोकर बोते थे क्योंकि खेती में दीमक बहुत थी। अगर बिना दवाई से भिगोये बुआई करते तो पूरी फसल को दीमक खा जाती थी और पैदावार नहीं होती थी।

सन् 2008 में पालनपुर सेवाकन्द्र पर किसानों की ट्रेनिंग रखी गई, उस ट्रेनिंग को कराने के लिये कोल्हापुर से बालासाहेब भाई और मनीषा बहन आये थे। उसके दौरान उनसे मार्गदर्शन मिला और हमने निश्चय किया कि हम जैविक, यौगिक खेती ही करेंगे।

जब हम बाबा को साथ रखकर सन् 2009 में 11 गूंठा (1 गुंठा = 33 स्क्वैयर फूट) जमीन में गेहूँ की बुवाई की और जैविक यौगिक पद्धति का प्रयोग किया तो अच्छी सफलता मिलने लगी। आधा किलो गाय का गोबर, आधा लीटर गोमूत्र, एक लीटर पानी, एक तोला हींग, 50 ग्राम चूना इन सबको इकट्ठा करके, उसे मिलाकर दूसरे दिन इनमें बीज को भिगोकर पवित्र संकल्प का वायब्रेशन देकर, बाबा की याद में बोया और प्रतिदिन सुबह योग करता था। 21 दिन के बाद पहली बार पानी दिया तो जीवामृत के साथ दिया।

अक की लकड़ी और पत्ते इकट्ठे कर, एक इंच के टुकड़े करके पानी में उबाले, फिर ठण्डे करके पानी के साथ खेत में छोड़े तो देखा कि फसल को कोई नुकसान नहीं हुआ और दीमक भी चली गई बल्कि फसल में और ही बहुत अच्छी सफलता मिलने लगी।

20 किलो गेहूँ की बुआई में हमें 511 किलो का उत्पादन हुआ। आधा बीघा जमीन में 26 टन अनाज मिला और दूसरे के खेत में रासायनिक खाद की खेती थी, उसमें भी आधा बीघा में 26 टन ही अनाज निकला था। तो इस प्रकार पहली बार में ही रासायनिक के बराबर फसल प्राप्त हुई लेकिन दोनों की फसल के अनाज की गुणवत्ता में बहुत फर्क था। हमने निश्चय से इस प्रकार से खेती की है और आगे भी निश्चय और भावना से यौगिक पद्धति से ही खेती करते रहेंगे। अभी तो पालनपुर सेवाकेन्द्र की ओर से एक किसान मण्डल बनाया गया है, जिसमें करीब 20 किसान भाई जुड़े हैं, सभी अलग-अलग प्रकार की खेती पर योग के प्रयोग करके बहुत अच्छी सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

बी.के. हीरा भाई

ऊंझा, गुजरात (मो. 09904511623)

मैंने सन् 2002 में जीरे की फसल ली थी। उसमें मैंने योग का प्रयोग किया। उस समय जीरे में कालिया रोग आना प्रारम्भ हो गया था। उस समय मैंने बाबा के सामने जीरे के खेत को इमर्ज किया और बाबा से श्वेत प्रकाश की किरणें लेकर खेत को देना प्रारम्भ किया। योग के शक्तिशाली वायब्रेशन से रोग आगे नहीं बढ़ा और अच्छी फसल पैदा हुई। यह मेरा पहला अनुभव रहा कि योग में

रहकर हम जो संकल्प करते हैं उसमें बाबा जरूर सफलता दिलाते हैं।

योग का प्रयोग मैंने बाजरे की फसल पर जून, 2008 में किया। कोई भी प्रकार की रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाई का उपयोग किये बिना खेत में योग के प्रकम्पन देता रहा। रोज़ खेत में जाकर योग करता था। अमृतवेले भी फसल को बाबा के सामने इमर्ज कर सकारात्मक चिंतन करता था। इस तरह सतोगुणी याद के वायब्रेशन से फसल में भी ताकत भरती गई और सूक्ष्म में प्रकृति की भी सेवा हुई।

फसल अच्छी तैयार होकर लहराने लगी। फसल तैयार होने में 10-15 दिन बाकी थे कि प्रकृति का तूफान आया। जोर-शोर से हवा का तूफान आया, खूब बारिश भी आयी। कई वृक्ष गिर गये लेकिन मेरी बाजरे की फसल वैसी की वैसी खड़ी रही, कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। एक बीघा खेत में 30 मन बाजरा हुआ। वह बाजरा खाने में स्वादिष्ट था। यौगिक खेती से उत्पादित बाजरा दो साल के बाद आज भी खाने के योग्य है। इसमें कोई भी कीट नहीं आया।

फिर मैंने योग का प्रयोग सौंफ की फसल पर किया। सबसे पहले सौंफ के बीज को बाबा के (घर) सेन्टर पर भेजा। वहाँ राजयोगी ब्रह्माकुमारी बहनों ने योग शक्ति से चार्ज किया। उसके बाद बीज की खेत में बुआई की गई। जब यह फसल 3-4 इंच की हुई तब प्रकृति का वातावरण ठीक नहीं था। बादल छाये हुए रहते थे। प्रकृति को ऊर्जा देने वाली सूर्य की किरणें फसल को नहीं मिल पा रही थी जिससे फसल पर सफेद दाग दिखाई देने लगे। उसके पत्ते भी सफेद दाग वाले हो गये। उस समय ज्ञानसूर्य शिवबाबा से शक्तिशाली किरणें ले फसल को सकाश व शक्ति दी तो 4-5 दिन के बाद पत्तों के सफेद दाग निकल गये और फसल एकदम चमकदार और हरी हो गयी।

उसके बाद 2-3 फुट की फसल होने पर ऊंझा सेवाकेन्द्र तथा हमारे गाँव की पाठशाला के राजयोगी भाई-बहनों ने मिलकर खेती में आ करके बाबा का झण्डा लहराया और संगठित रूप से योग किया। इस तरह रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाइयों का उपयोग किये बिना फसल में आये हुए रोग को योग शक्ति से दूर किया जा सकता है।

बी.के. खोड़ा भाई

अमरेली, गुजरात (मो. 09427263984)

मैं अमरेली में जैन इरिगेशन कंपनी की डीलरशिप प्राप्त करके ड्रिप इरिगेशन और फुहारे (फव्वारों) की पाइप लाइन का बिजनेस कर रहा हूँ। करीब 14 साल से मै पूरे परिवार सहित ब्रह्माकुमारीज़ विद्यालय का रेग्युलर स्टूडेन्ट हूँ। मेरी सबसे बड़ी बेटी राजकोट सेवाकेन्द्र

पर समर्पित होकर सेवारत है। मेरा लौकिक परिवार अमरेली जिले के हामापुर गांव में हमारे पुरखों की खेतीबाड़ी सम्भाल रहा है। हामापुर गांव बगसरा इलाके में पड़ता है। अमरेली से करीब 45 कि.मी. की दूरी पर है, वहीं पर हमारा खेती का कारोबार चलता है।

मैंने सन् 2012 में ब्रह्माकुमारी ग्राम विकास प्रभाग द्वारा शाश्वत यौगिक खेती के प्रयोग के बारे में जानकारी प्राप्त की। तब से मैं ग्राम विकास प्रभाग का सदस्य बन गया और सोचा कि क्यों न अपनी ही जमीन पर शाश्वत यौगिक खेती का प्रयोग किया जाये। मैंने ठान लिया और परिवार में प्रस्ताव रखा तो सबने अनुमति दे दी और शिवबाबा से भी स्वीकृति अमृतवेले के योग के समय ले ली। सन् 2012 की ग्रीष्म में तिल की फसल पर प्रयोग शुरू किया।

सेन्द्रिय खाद खेत में डालकर बीज बोने के लिये जमीन तैयार कर लिया। बीज को शिवबाबा के कमरे में 48 घण्टों तक खुला रखकर, मैं और मेरी युगल दोनों मिलकर अमृतवेले योगदान देते थे। बापदादा की याद में बीज को सकाश देते थे। बीज अच्छी तरह अंकुरित हो और उनका पौधा भी अच्छा तन्दुरुस्त बनें। परिवार के और सदस्यों ने भी अच्छे वायब्रेशन दिये और सभी ने यह शुभ संकल्प किया कि फसल अच्छी हो और उनका उपयोग करने वाले हर एक व्यक्ति का कल्याण हो। हमारा यह प्रयोग सफल हो, पैदावार भी ज्यादा हो।

सामान्यतया तिल की उपज एक बीघा जमीन में 150 से 200 कि.ग्रा. होती है। हमारा संकल्प था, इस प्रयोग से उपज यानी पैदावार दो गुना ज्यादा मिलनी चाहिए। खेत पहले से ही तैयार किया गया था, बीज बोने का समय हुआ तब भी हमने योग का प्रयोग किया। शिवबाबा की याद में बीज बोया गया। इसके बाद रोज अमृतवेले (प्रात: 4 से 5 बजे तक) हम खेती को योगदान देते थे। इसके अलावा सप्ताह में एक दिन खेत में बैठकर पौधों को 3 घण्टे तक योगदान देते थे। गांव के किसान लोग हमारे इस प्रयोग पर हंसते थे लेकिन हमारा निश्चय था कि शिवबाबा की शक्ति इन पौधों पर उतरेगी और हमारी मेहनत रंग लायेगी। हुआ भी ऐसा ही जैसा हमने सोचा था, पौधों में नई जान आने लगी मानो बाबा की शक्ति उन पर उतर रही थी। पौधों की ग्रोथ तीव्रगति से हो रही थी। दिन दुगुनी रात चौगुनी वृद्धि हो रही थी।

ग्रीष्म की सीजन में सामान्यतया पौधों की लम्बाई लगभग डेढ़ से दो फीट की रहती है लेकिन शाश्वत यौगिक पद्धति के प्रयोग से लंबाई 5-6 फीट तक परिपक्व होने पर पहुँच गई थी। प्रत्येक छोर में तिल की फलियां पर्याप्त मात्रा में लगी हुई थी। हमारे संकल्प और मेहनत के परिणाम को देख हमारा मन प्रफुल्लित हो रहा था। मन ही मन बाबा का शुक्रिया अदा करते थे। हर एक छोर में 160 से भी ज्यादा फलियां लगी हुई थी। यौगिक प्रयोग के साथ-साथ खाद और

समय पर पानी दिया जाता था। पानी देने का समय भी निश्चित किया गया था। प्रकृति का भी आह्वान किया गया था, तो प्रकृति का सहयोग भी हमें मिल रहा था। लहलहाते खेत को देख गांव के अन्य किसान आश्चर्यचकित हो जाते थे। जो पहले हंसते थे वही अब वाह! वाह! करने लगे थे, यह तो शिवबाबा का ही कमाल था।

मेरी खेती की जमीन रिजर्व फॉरेस्ट एरिया के नज़दीक होने के कारण जंगली जानवरों से नुकसान होने का डर था, हुआ भी ऐसा ही। रात को पशुओं ने थोड़ा-सा फसल का नुकसान किया। तो मैंने बाबा से अमृतवेले योग में कहा कि बाबा इन जंगली जानवरों से फसल को कैसे बचाया जाये? तब बाबा ने मुझे ऐसी टचिंग करवायी कि देखो भाई! जमीन (खेत) में जो पैदावार होती है उसमें सबका हिस्सा होता है, इसमें 10 प्रतिशत पशुओं का होता है इसलिए डरो मत, तुम्हारा कुछ ज्यादा नुकसान नहीं होगा। तब से मैं निश्चिंत हो गया और बाबा से कहा कि ऐसा हो तो 15 प्रतिशत पशु जानवर खा जावें तो भी मुझे कोई हर्जा नहीं। ऐसा मैंने बाबा से कहा लेकिन आश्चर्य की बात तो यह थी कि तब से मेरे खेत में पशुओं ने आना ही बन्द कर दिया। खेत के नजदीक से चले जाते थे लेकिन हमारे खेत में नहीं आते थे तो यह भी बाबा का ही कमाल कहेंगे और शक्तिशाली याद के प्रयोग का भी नतीजा प्रैक्टिकल में देखने को मिला।

फसल पक जाने पर मुझे ऐसा लगा कि मेरे संकल्प शिवबाबा की याद के प्रयोग से सिद्ध हो रहे हैं। आमतौर पर ग्रीष्मकालीन तिल की फसल अच्छी परवरिश और उचित समय पर पानी और खाद देने से एक बीघा जमीन में से 150 से 200 कि.ग्रा. पैदावार होती है, लेकिन इस शाश्वत प्राचीन योग के प्रयोग से और शिवबाबा की याद में अच्छे, शुद्ध एवं शुभ वायब्रेशन देने से इतने अच्छे नतीजे देखने को मिले कि एक बीघा जमीन में से 360 कि.ग्रा. उत्पादन हुआ जो मेरा संकल्प पूरा हुआ। इस तरह से योग के प्रयोग से अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। यह मेरा और मेरे परिवार का पूरा भरोसा है। अत: ज्ञानसूर्य और पवित्रता के सूर्य शिवबाबा की किरणों से ही इतनी अच्छी फसल सम्भव हुई है, यह मेरा दृढ़ निश्चय है।

बी.के. बालासो रूगे

इचलकरंजी, कोल्हापुर (मो. 09405560030)

मैं 14 साल से राजयोग का अभ्यास और 11 साल से यौगिक खेती कर रहा हूँ। मैं सबसे पहले पहले प्रात: 3.30 बजे उठते ही परमात्मा पिता से गुडमार्निंग करके, फ्रेश होकर योग कक्ष

में बैठकर योग करता हूँ। पहले स्वयं को अनुभव करता हूँ कि मैं एक अति सूक्ष्म प्रकाशमय बिन्दूरूप आत्मा हूँ...। शान्त हूँ, पवित्र हूँ, शक्तिशाली हूँ...। फिर परमात्मा को बुद्धि रूपी नेत्र से देखते हुए उनकी शक्तियों को अपने अन्दर समाने का अनुभव करता हूँ...। परमात्मा से पवित्रता की, शक्तियों की किरणें मुझ में आ रही हैं... मेरे अन्दर की कमजोरियाँ और पाप नष्ट हो रहे हैं...। मैं आत्मा और ही प्रकाशित हो रहा हूँ...। कुछ समय यह अनुभव करने के बाद मैं आत्मा शरीर से बाहर निकलकर परमधाम में परमात्मा के पास जाकर उनकी सारी शक्तियों को अनुभव करते हुए उन्हीं शक्तियों को नीचे सृष्टि पर सकाश के रूप में प्रवाहित करता हूँ...। इससे प्रकृति के पाँचों तत्व, चन्द्र, तारे, ग्रह, नक्षत्र, जीव-जंतु, वृक्ष, वनस्पति सब चार्ज हो रहे हैं... ऐसा अनुभव करता हूँ। शान्ति, प्रेम, आनन्द से भरपूर हो रहे हैं...। 4 से 4.30 बजे तक इसी प्रकार योग करने के बाद मैं अपनी खेती को इमर्ज कर योगदान देता हूँ 5 मिनट तक। उसके बाद फसल को भी 5 मिनट तक एकाग्र होकर योगदान देता हूँ। इस तरह से प्रतिदिन योग के प्रयोग से प्रकृति के तत्वों का बहुत अच्छा सहयोग मिलता है और फसल निरोगी, शक्तिशाली होकर बढ़ती है।

जब भी मैं अपने खेत में पहुँचता हूँ तो पहले 5 मिनट योग करता हूँ, स्वयं को निमित्त समझकर परमात्मा की खेती में कर्म करने के लिए परमात्मा से प्रेरणा लेता हूँ, फिर कर्म करना आरम्भ करता हूँ। इस विधि से कई बार खेती में कितनी भी समस्यायें आती हैं फिर भी कभी मन हताश उदास नहीं होता है। हर मुसीबत नया उमंग बढ़ाने में मदद करती है। किसी प्रकार का भय नहीं रहता है क्योंकि हम परमात्मा के आदेश अनुसार कर्म करते हैं तो जिम्मेवार भी वही है। खर्चे की तो बात ही नहीं क्योंकि मैंने एक देशी गाय को पाला है, उसका जो भी गोमूत्र, गोबर मिलता है उससे ही 3 एकड़ खेती के लिये खाद और दवाई बनाने में उपयोग करता हूँ। खेती के चारों ओर आवश्यक वृक्षारोपण किया है, उसी से दवाई बनती है। खेती में ही एक कुटिया बनाई है, जब भी समय मिलें उसमें बैठकर योग करता हूँ। अब मुझे दुनियावी बातों में ज्यादा ध्यान देने की जरूरत नहीं है क्योंकि स्वयं भगवान मेरे मार्गदर्शक बने हैं। जो भी किसान आते हैं, पूछते हैं तो उनको समझाता हूँ कि कैसे खेती में आध्यात्मिकता का महत्व है। अपने विचार शुद्ध होते हैं तो खेती में भी कीट नहीं आते। मुझमें अगर कोई अवगुण नहीं तो मेरी फसल में भी कोई बीमारी नहीं आयेगी। जब अपने अन्दर बुराइयाँ वा कोई व्यसन हैं तो खेती में भी जरूर होंगी, इसलिए राजयोग के अभ्यास से जो भी आध्यात्मिक शक्तियाँ मिलती हैं वे सभी समस्याओं के लिये समाधान स्वरूप में एक दवाई का काम करती हैं।

बी.के. भोलानाथ चौगुले

मु.पो. टाकवड़े, इचलकंरजी (मो. 09762433740)

मैंने पहली बार गन्ने की फसल पर मेडिटेशन का प्रयोग करना शुरू किया। पहले बताये गये योग कॉमेन्ट्री अनुसार प्रकृति और फसल को रोज़ अमृतवेले योगदान देता रहा। 6 मास तक गन्ने की फसल बहुत ही अच्छी बढ़ रही थी। बीच में फसल पर मीलीबग नाम की कीट बढ़ने लगी, लगभग 40 प्रतिशत यह कीट बढ़ गई। मन में विचार आया कि फसल को बचाने हेतु रासायनिक दवाइयों का इस्तेमाल करूँ, परन्तु इसके लिये सेन्टर की बहन ने योग का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। तो हमने योग का प्रयोग शुरू किया जैसेकि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ...। पवित्रता के सागर परमात्मा से पवित्र किरणें मुझ आत्मा में समा रही हैं...। मेरे द्वारा पूरी खेती में किरणों के रूप में फैल रही हैं...। सारी कीट नष्ट हो रही है...। कभी कभी हम ऐसा भी संकल्प करते थे कि ज्ञान सूर्य परमात्मा बिन्दू के रूप में फसल के ऊपर किरणों की वर्षा कर रहे हैं... इससे इस फसल पर फैली हुई कीट नष्ट हो रही है... यह अनुभव करते थे। तो 8 दिन बाद प्रत्यक्ष रूप में उस कीट खाने वाले दूसरी मित्र कीट अपने आप तैयार हो गई और मिलीबग कीट को खा के खत्म कर दिया।

पड़ौसी किसानों ने कीट को नष्ट करने के लिए खेती में रासायनिक दवाइयों का इस्तेमाल किया था। परंतु वर्षा के कारण उन दवाइयों का असर कीट पर नहीं होने कारण वह कीट और ही ज्यादा बढ़ती गई और पूरी फसल का नुकसान हुआ।

शाश्वत यौगिक खेती पद्धति से पहले वर्ष में 13 हजार स्क्वेयर फुट एरिया में हमें 21 टन गन्ने की उपज मिली। दूसरे वर्ष 19 टन और तीसरे वर्ष 18 टन उपज मिली। इस पद्धति को अपनाने से पहले 15 टन से ज्यादा उपज नहीं मिलती थी। इस पद्धति से खर्चा तो बहुत ही कम हुआ परंतु उपज बढ़ गई। अभी मैं दूसरी जगह पर 2 एकड़ खेती में इस पद्धति को अपना रहा हूँ, सफलता बहुत अच्छी मिल रही है।

बी.के. अशोक माली

अंबप, कोल्हापुर (मो. 08698314929)

मैं 15 वर्षों से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का नियमित विद्यार्थी हूँ। मेरी खेती 35 गुंठे है, खेती में नया-नया प्रयोग करने में मुझे बड़ा आनन्द का अनुभव होता है। मैं

अपनी खेती में सेन्द्रिय, जैविक खाद का उपयोग कर योग का प्रयोग कर रहा हूँ। पिछले कुछ वर्ष से जमीन एवं फसलों में बहुत ही बदलाव हो रहा है, जिस प्रकार से संकल्प करेंगे उसी प्रकार फसलों में परिवर्तन होता है।

मैंने धान, गन्ना, पालक-सब्जियाँ, फल और केले आदि की फसलों पर इस योग का प्रयोग किया तो बहुत ही अच्छे परिणाम देखने को मिलने लगे, यह मेरा अनुभव है।
मैंने जी-9 केले की फसल ली थी जिसका उत्पादन एवं खर्चे की सूची निम्नलिखित है :-

फसल का नाम	: केली
बीज का प्रकार	: जी-9
कृषि का क्षेत्रफल (एकड़ में)	: 1.2
बीज बोने की तारीख	: 15/2/2014
फसल कटाई की तारीख	: 20/10/2014
रोग वा बीमारियों का विवरण	: करप्पा
कौनसी खाद दी गई थी	: गोमूत्र, छांछ, अंब्र
योग के प्रयोग का समय	: अमृतवेला, कर्म करते भी बीच-बीच में योग एवं नुमाशाम
रोज़ कुल कितने घण्टे योग	: 4 घण्टे

खेती पद्धति	परम्परागत खेती का परिणाम	शाश्वत यौगिक खेती का परिणाम
उपज की मात्रा	14 हजार प्रति एकड़ 1.2	14,300/- प्रति एकड़ 1.2
बीज का खर्च	11,400/-	11,400/-
जुताई का खर्च	5 हजार	5 हजार
खाद का खर्च	30 हजार	15 हजार
फसल संरक्षण का खर्च	10 हजार	5 हजार
अन्य खर्च	2 हजार	1,500/-
मुनाफा	82,600/-	1,11,100/-

बी.के. वसंत बालकृष्णा चौगुले
हुपरी, जि. कोल्हापुर (मो. 09673274303)

ग्राम विकास प्रभाग के अन्तर्गत यौगिक खेती का प्रयोग करने के लिये प्रो. श्रीकांत नरगट्टे भाई ने 2 एकड़ जमीन मुझे दी है, मैं उसकी देखभाल के लिए निमित्त हूँ। जमीन पथरीली होने के कारण जमीन की ताकत बहुत ही कम है। शुरूवात में हम सभी ने मिलकर केले का प्लॉट लगाया। वह फसल बहुत अच्छी आयी और उस केले का टेस्ट भी बहुत अच्छा था। एक एकड़ में 12 टन का उत्पादन हुआ। इस खेती की जमीन में पूरी सेन्द्रिय खाद ही डालते थे। अपने भाई-बहनें योग में रहकर काम करते थे। दूसरे एक एकड़ में गेहूँ का प्लॉट था, वह फसल भी बहुत अच्छी मिली थी। यह फसल आम के बगीचे के बीच में थी, तो वहाँ पर भी 7 क्विंटल गेहूँ उत्पादन हुआ। उसकी गुणवत्ता सामान्य गेहूँ से अच्छी थी।

अभी इस साल उसी खेत में गन्ने की फसल है। गन्ना भी बहुत अच्छा है, देखने जैसी फसल है। सेन्टर की बहनें बीच-बीच में योग के लिये आती रहती हैं। हमने यौगिक खेती करते यह अनुभव किया कि मोर, साँप, बन्दरों आदि का उस क्षेत्र में बहुत आतंक होते हुए भी उस प्लॉट में फसल को कभी खराब नहीं किया और कभी भाई-बहनों को किसी भी प्रकार से नुकसान नहीं पहुँचाया है।

इस खेती में शिवबाबा का झण्डा लहराने से यहाँ का पूरा वातावरण ही अलग-सा लगता है और देखने वाले सभी भावनात्मक दृष्टि से सोचते हैं और रासायनिक खाद की तुलना में यौगिक खेती का उत्पादन भी लगभग उतना ही हुआ है परंतु खर्चा कम है। हमने किसी भी हालत में यूरिया, सल्फेट ऐसे कोई भी घातक रासायनिक खाद नहीं डाली है। इसकी जगह केंचुवे की खाद, गोमूत्र, जीवामृत, अमृत पानी देते रहते हैं।

मैं रोज़ खेती में जाकर परमात्मा को याद करके अच्छे पवित्र वायब्रेशन्स फसल को देने का योगाभ्यास करता हूँ। पौधों पर भी योग के प्रयोग करते हैं, इससे पौधों में परिवर्तन दिखाई देता है, यह हमने प्रैक्टिकल अनुभव किया है।

सबसे पहले मैं बतायी गई योग विधि द्वारा प्रकृति के पाँचों तत्वों को योगदान देता हूँ। उसके बाद खेती की फसल को भी परमात्मा से शक्तियाँ लेकर खेती में प्रवाहित करता हूँ...। यह अनुभव करता हूँ कि यह खेती परमात्मा की है, मैं तो निमित्त बनकर परमात्मा के आदेशानुसार कर्म करता हूँ। फसल को योगदान देते समय संकल्प करता हूँ कि मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ...। परमात्मा से सारी शक्तियाँ पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद की किरणें पूरे खेती में

किरणों के रूप में फैल रही हैं...। पौधे शान्ति, प्रेम, आनंद का अनुभव कर रहे हैं...। अनाज में सात्विकता, पौष्टिकता बढ़ रही है...। इस खेती में कोई भी जंगली जानवर, पशु-पंछी आदि फसल को नुकसान करने वाली कीट इत्यादि की प्रवेशता नहीं होगी। यह शुद्ध सात्विक अन्न जो भी खायेगा उसका तन निरोगी और मन शक्तिशाली बनेगा...। परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनने के लिये प्रकृति के पाँचों तत्वों को धन्यवाद देता हूँ...। प्रतिदिन ऐसे सकारात्मक संकल्प करने से मनोबल बढ़ता है, समाधान मिलता है।

अत: अन्त में मैं सभी कृषको को यह सन्देश देना चाहता हूँ कि आप सभी परमात्मा पिता की याद में रहकर यह यौगिक खेती करने का प्रयास करें क्योंकि इस यथार्थ और वास्तविक विधि से खेती करने से ही आपकी खेती सुजलाम् सुफलाम् होगी।

बी.के. रघुनाथ भाई

अक्कलकोट, सोलापुर (मो. 09922161355)

17 अगस्त, 2008 में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में साप्ताहिक कोर्स करने के बाद मैं यहाँ का नियमित विद्यार्थी बन गया। राजयोग का अभ्यास करने से जीवन में बहुत खुशियाँ और उमंग-उत्साह बढ़ने लगा। अगस्त, 2009 में कुमारों की भट्ठी में मेरा मधुबन आना हुआ। इसी बीच, शाश्वत यौगिक खेती पुस्तिका प्राप्त हुई जिससे प्रेरणा लेते हुए, सन् 2009 से ही हमने अपने खेती में शाश्वत यौगिक पद्धति से खेती करना शुरू किया। सबसे पहले जून, 2009 से हमने 6 एकड़ में से 2 एकड़ में हरी खाद (ताग वा ढैंचा) की बुआई की। उसे 60 दिन के बाद काटकर जमीन में गाड़ दिया, जिसका सेन्द्रिय खाद जमीन में तैयार हुआ। फिर नवम्बर से उसी प्लॉट में 2 एकड़ खेती में गन्ना लगाया, समय प्रति समय आने वाली अन्य अनावश्यक घास निकालकर प्लॉट को स्वच्छ रखते गये।

घर में सभी सदस्य सहयोगी होने कारण रोज़ मुरली क्लास होता है और घर खेती के बीच में है। तो सवेरे की क्लास के बाद बाबा द्वारा जो भी शिक्षायें सुनते, उन्हीं श्रेष्ठ सकारात्मक चिंतन के साथ खेती में काम करते हैं जिससे सकारात्मक विचारों का प्रभाव वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाता है। परिणाम-स्वरूप इस खेती के गन्ने से जो गुड़ बनाया उसमें यह अनुभव किया कि रासायनिक खादों के इस्तेमाल की तुलना में इसका उत्पादन ज्यादा मिला। एक टन गन्ने से 600 लीटर रस और उससे 150 किलो गुड़ सामान्यतया बनता है। लेकिन बाबा की इस

खेती से पहले वर्ष 170 से 180 किलो गुड़ बना और सबसे कमाल की बात कि हर साल इसमें बढ़ोतरी होती रही। जनवरी 2014 में औसत 190 से 200 किलो गुड़ बना, यह चमत्कारिक अनुभव देखने को मिला।

सभी प्रकार के अनाज के बीज संस्कार की विधि अनुसार बुआई करते हैं। गन्ने की खेती के बीच में हम तूअर, मूंग, उड़द, तिल, बाजरा, मूँगफली एवं सोयाबीन यह मिक्स फसल लेते हैं। सन् 2013 में एक एकड़ गन्ने में सिर्फ मात्र मुट्ठी भर तूअर के बीज प्रयोग के तौर पर बीच-बीच में बोये, जिसका परिणाम ऐसे हुआ उस प्लॉट के बाजू में एक छोटा-सा तालाब है जो खास पंछियों और जीव-जन्तुओं को पानी के लिये 2009 में ही बनाया गया। जिसमें 16 लाख लीटर पानी 12 ही मास रहता है। उसके चारों ओर नारियल, नीम, इमली, पीपल, बरगद, अमरूद, सीताफल, रामफल, आंवला, अंजीर के पेड़ लगाये हैं, वहाँ पेड़ पर पंछियों को घर बनाने के लिये और पानी पीने की व्यवस्था हो, ऐसी शुभ भावना थी। और साथ ही हमने देखा कि दूसरे किसान ज्वार के, बाजरे के, चावल के खेत में पंछियों को आने नहीं देते हैं लेकिन हमने 20 गुंठा जमीन केवल पंछियों के लिये रखी जिसमें सीजन अनुसार खरीफ में चावल, रबी में ज्वार और बाजरा खाने के लिये रखी। इसके फलस्वरूप पंछियों के लिये पीने के लिये पानी और खाने के लिये अनाज मिलने से जो तूअर है उसके ऊपर जो आने वाली कीट है उसको किसी भी प्रकार का कीटनाशक स्प्रे नहीं करना पड़ा, और उस मुट्ठी भर तूअर के बीज से 100 किलो ग्राम तूअर (अरहर की दाल) का उत्पादन मिला और वो भी 90 प्रतिशत निरोगी।

सभी प्रकार के धान के लिये समय प्रति समय देशी गाय, बैल से मिलने वाला गोमूत्र और गोबर से जीवामृत बनाकर इस्तेमाल करते हैं। खेती में बीच-बीच में योग भट्ठी एवं ब्रह्माभोजन के निमित्त सेन्टर के सभी भाई बहनें आते हैं और अपनी शुभ भावना से श्रेष्ठ शुद्ध शक्तिशाली वायब्रेशन का योगदान देते रहते हैं। 2012 में जो गुड़ बना उसका लैब रिपोर्ट को देख सेन्द्रिय खेती का प्रमाण-पत्र, ऑर्गेनिक इण्डिया कॉउसिंल से रेकोग्नाइज़ महाराष्ट्र ऑर्गेनिक फॉर्मिंग फेड्रेशन से प्राप्त हुआ। एवं 2013 में अक्कलकोट से आदर्श किसान पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। यौगिक पद्धति की खेती से निकलने वाली सभी फसलों का सेन्द्रिय अन्न के प्रमाणीकरण होने के कारण इसका मार्केट रेट से भाव ज्यादा मिलता है।

ब्र.कु. गेंदलाल गंगाधर मोहने

रामटेक, जि.नागपुर (मो. 09960806831)

मैं सन् 2012 में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के सम्पर्क में आया। मैं हाईस्कूल में अध्यापक हूँ, मेरा आम का बगीचा 12 साल का हो गया था। लगभग आधे बगीचे में आम के पेड़ों पर फल-फूल नहीं आते थे। इस बात से मैं बहुत परेशान था। मैंने अकोला के कृषि विद्यापीठ के एग्रोनॉमी साइंटिस्ट को भी दिखाया। जिला परिषद अधीक्षक के साथ वैज्ञानिकों की पूरी टीम वहाँ आई। उन्होंने जो दवाई दी उनका छिड़काव किया गया। फिर भी परिणाम नहीं मिला। नागपुर के कृषि विभाग को भी बताया उनके द्वारा बताई गयी दवाई भी डाली उससे भी कुछ फायदा नहीं मिला। जिसने जो बताया वो किया कोई परिणाम नहीं मिला।

नवम्बर 2012 में रामटेक सेवाकेन्द्र पर जब एक दिन की ब्रह्माकुमारीज़ की शाश्वत यौगिक खेती की ट्रेनिंग अटैण्ड की, तब अपनी प्रॉब्लम मैंने वहाँ की दीदी जी को बताई कि आधे पेड़ों पर इतना जतन करने के बाद भी आम नहीं आ रहे हैं। दीदी जी ने कहा सब अच्छा होगा, भगवान पर विश्वास रखो और अच्छा सोचो तब से मैंने अपने में पॉजिटीविटी रखी और मेडिटेशन का 7 दिन का बेसिक कोर्स भी किया। मेडिटेशन का अभ्यास कर शुद्ध वायब्रेशन अपने खेत को दिये। साथ में दीदी के साथ सेवाकेन्द्रों के भाई बहनों ने भी संगठित योग का प्रयोग किया। मुझे उस समय बड़ा अचम्भा हुआ जब उसी सीजन में सभी 175 पेड़ों पर आम आये, फसल अच्छी रही। उस बगीचे में दशहरी, लंगड़ा, आम्रपाली और राजापुरी आम लगाये हुए थे। उस साल मुझे एक लाख 80 हजार का मुनाफा हुआ, जबकि पहले 40-50 हजार ही उस बगीचे से आमदनी होती थी। उस साल बर्फ के साथ ओले भी गिरे, मौसम इतना खराब था, तेज आंधी-तूफान के चलने पर भी उन पेड़ों से एक भी आम नहीं गिरा। परमात्म शक्ति से वे पेड़ इतने सशक्त थे कि विपरीत परिस्थिति को झेलने में सक्षम रहे। अत: मेरी किसान भाइयों से यही अपील है कि अपने खेत में सेन्द्रिय खाद डालें और राजयोग का अभ्यास कर पौधों को परमात्म शक्तियों की सकाश दें। अपनी तकलीफ दूर करें, अच्छी उपज लें।

बी.के. अशोक भाई - उमरेड़

जि. नागपुर (मो. 09226002949)

मुझे इस संस्था का ज्ञान सन् 1981 में प्राप्त हुआ। पहले हम अपनी खेती ठेके पर देते थे लेकिन अनाज की पैदावार कम होने से ठेकेदार पैसे ठीक से दे नहीं पा रहे थे इसलिए दो-चार साल से खेती का कोई ठेकेदार भी नहीं मिल रहा था। पिछले 30 सालों से खेती में रासायनिक खाद और कीटनाशक प्रयोग करके सोयाबीन, मिर्च, चना, तुअर, आदि का उत्पादन लिया जा रहा था। जिसके कारण साल दर साल उत्पादन में कमी होने लगी थी और खर्च बढ़ने लगा, साथ में खेती की जमीन भी निकृष्ट यानी बंजर होने लगी। जब हमें ग्राम विकास प्रभाग के अन्तर्गत शाश्वत यौगिक खेती का ज्ञान एक सेमीनार से प्राप्त हुआ। तो उसे समझकर, निमित्त बहन के कहने से इस पद्धति को अपनाते हुए पिछले तीन साल से शाश्वत यौगिक खेती करनी शुरू कर दी है।

पहले ही साल साढ़े चार एकड़ में धान की खेती में बिना रासायनिक खाद एवं कीटनाशक का प्रयोग किये मुझे काफी फायदा हुआ जो निम्नलिखित है :-

अनाज	प्रति एकड़ खर्चा	उत्पादन कुल	उत्पादन मूल्य	शुद्ध मुनाफा
धान	10,000/-	25 क्विंटल	50,000/-	40,000/-
गेहूँ	6,000/-	13 ,,	24,000/-	18,000/-
सोयाबीन	10,000/-	7 ,,	38,500/-	28,500/-
चना	6,000/-	5 ,,	24,000/-	18,000/-

प्रति एकड़ में 40 हजार से 60 हजार का नेट फायदा हुआ है। हमने खेती में देशी गाय के गोबर की खाद और गोमूत्र का प्रयोग किया। साथ में नीम का अर्क और दर्शपर्णी अर्क का प्रयोग कीट नियंत्रण के लिये किया। बाबा के कमरे में बैठ अमृतवेले 4 से 4.30 बजे के बीच में 10 मिनट और नुमाशाम 7 से 7.30 बजे के बीच 10 मिनट योग के वायब्रेशन खेती के पेड़-पौधों को देते रहते हैं जिससे फसल को बढ़ने में अच्छी मदद मिलती है, फलस्वरूप उपज एवं गुणवत्ता में 15 से 20 परसेन्ट बढ़ोतरी हमें मिली है। हमने अनुभव किया कि यौगिक पद्धति से हमारी घाटे की खेती फायदे में परिवर्तन हुई है, साथ-साथ खेती की जमीन भी बंजर से उपजाऊ बनी है। सप्ताह में दो बार सेन्टर के 10-12 भाई-बहनों का समूह आकर खेती में योगदान देने की सेवा देते हैं। सेन्टर की मुख्य बी.के. रेखा बहन के मार्गदर्शन में यह खेती का कार्य सुचारू रूप से

चल रहा है। इस खेती से उत्पादित अनाज सेन्टरों पर उपयोग में लाया जाता है और बचे हुए अनाज को बी.के. परिवार के भाई-बहनें खरीद लेते हैं। यह शाश्वत यौगिक खेती प्यारे बाबा की ईश्वरीय सौगात है जिससे तन-मन स्वस्थ और उत्साहित रहता है और बीमारियों पर होने वाले खर्च में भी बहुत सारी कटौती हो गयी है जिससे प्यारे बाबा का एकनामी और एकानामी का मन्त्र जीवन में दृढ़ हो गया है।

प्रकृति के पाँचों तत्वों को शुद्ध एवं पवित्र बनाने की सेवा का आनंद अनुभव होता रहता है। देश के किसानों को ईश्वरीय शक्ति से जोड़ने की महान सेवा के लिये निमित्त बाबा ने बनाया है, इस बात की खुशी एवं सन्तुष्टि रहती है।

भूमि व फसल को सशक्त करने के लिये यौगिक खेती की पुस्तक में दी गई विधि का प्रयोग करते हैं।

ब्र.कु. उज्जवला संभाजी पाटील

मु.पो. मोरले, ता. शिरोल, जि. कोल्हापुर

मेरी 15 गुंठा खेती है। सन् 2011 में मैंने अपने खेत में मूँगफली बोई थी। मैंने फसल लगाते वक्त परमात्मा को याद कर बीज बोया था। भाव यह था कि यह खेती परमात्मा की है और मूँगफली के दाने परमात्म शक्ति से भरे हुए हैं। मेरी यह खेती की भूमि नदी किनारे है तो ज्यादा बरसात आने पर वहाँ बाढ़ आ जाती है लेकिन फिर भी परमात्मा पर पूरा निश्चय रखकर विश्वास के साथ यह मूँगफली की फसल उगाई गई थी।

मैं दिन में दो बार और अमृतवेले 15 मिनट अपनी फसल को सकाश देती थी। मैं संकल्प करती थी कि मेरे खेत में मूँगफली की फसल बहुत अच्छी हो रही है... यही दृश्य मेडिटेशन में हमेशा देखती रहती थी। फसल बहुत अच्छी थी। मैं पिछले 4 साल से राजयोग का अभ्यास कर रही हूँ। सन् 2011 में बरसात के दिनों में बाढ़ में पूरा खेत डूब गया। 15 दिन तक बाढ़ का पानी खेत में रहा, फसल उसमें डूबी रही। ऐसे समय में भी मेरा परमात्मा पर पूरा निश्चय था कि यह फसल ईश्वर की है। उसकी शक्तियों का कवच खेत पर है। मुझे बिल्कुल संशय नहीं आया, भाव ये था कि परमात्मा रक्षक हैं इसलिए इस खेती को कुछ नहीं होगा, ऐसा मन में दृढ़ विश्वास था। उस समय मैंने लगातार सकाश दिया। जब धरती सूख गई तब बड़ा आश्चर्य हुआ। बाढ़ के

कारण मेरे आस-पास के खेतों की फसल पूरी तरह से नष्ट हो गई थी लेकिन फिर भी मेरे खेत में चार बोरी मूँगफली निकली। मेरी खुशी का पारावार नहीं रहा। मैंने एक बोरी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर भगवान को अर्पित की। सारा गाँव उस फसल को देखने आया और कहने लगे कि ऐसा कैसे हो सकता है! तो यह है शुद्ध संकल्पों का कमाल जिसका परमात्मा रक्षक हो उसका बाल बांका नहीं हो सकता है।

बी.के. श्रीकांत भाई (नरगट्टे सर)

कादरगा-हुपरी, कोल्हापुर (मो. 09731607484)

मैंने भारतीय सेना में सन् 1974-1990 तक सेवा की। सन् 1989, सितम्बर में मुझे ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ। फरवरी, 1990 में अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक महासम्मेलन में माउण्ट आबू जाने का अवसर मिला। तब ज्ञान की गहराई का पता चला। उसके बाद हर दिन ज्ञान मुरली का आनंद मिलता रहा और अनोखे अनुभव भी होते रहे। इसी दौरान 'आदर्श सेनानी' का प्रमाण-पत्र भी प्राप्त हुआ।

जब इस ईश्वरीय विद्यालय के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा 'शाश्वत यौगिक और जैविक खेती का प्रयोग' सामने आया तब सन् 2010 से यौगिक खेती का प्रयोग अपनी 10 एकड़ खेती में आरम्भ किया। हर साल बहुत ही सुन्दर अनुभव होने लगे। कुछ अनुभव यहाँ व्यक्त कर रहा हूँ।

फरवरी, 2010 में एक एकड़ खेती में 200 ऑवलें के पेड़ आदरणीय ब्रह्माकुमारी बहनों के कर कमलों द्वारा लगवाये। शुरू में सभी पेड़ अच्छे थे, पर बाद में सूख गये। सभी कहने लगे, यह प्लॉट फेल हुआ। मुझे भी ऐसा ही दिखाई दे रहा था कि डेढ़ लाख रुपये खर्च करके आंवला प्लांटेशन किया लेकिन फेल हुआ। दूसरी तरफ अंतरात्मा कहने लगी, यदि राजयोग का प्रयोग किया जाये तो जरूर ठीक हो जायेगा। फिर हमने हर दिन अमृतवेला तथा नुमाशाम योग द्वारा सभी पेड़ों को सकाश दिया, उन पेड़ों से बातें करनी शुरू की। ड्रिप द्वारा पानी की व्यवस्था भी की। अप्रैल मास में सभी पेड़ पुन: हरे-भरे हुए और अब वह बगीचा पाँच साल का हुआ। पिछले तीन साल से आंवलें का उत्पादन शुरू हुआ। पिछले साल 2.5 टन आंवला हुआ और इस साल चार टन से 50 हजार रुपये मिले। साल का खर्च हुआ केवल छ: हजार पाँच

सौ रुपये, कोई भी रासायनिक खाद या जहरीली कीटनाशक दवाई का उपयोग नहीं किया, वह खर्चा भी बच गया।

इस दौरान हमें भारत के कई ब्रह्माकुमारीज़ स्थानों पर जाना हुआ। अहमदाबाद, मैसूर आदि सेन्टरों पर जाने से बड़ी प्रेरणा मिली। ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा किये जाने वाले विश्व व्यापी कार्य को स्पष्ट विस्तार से समझा। यह कोई साधारण मनुष्य का कार्य नहीं, जरुर कोई महाशक्ति का कार्य है। तो दो एकड़ खेती शाश्वत यौगिक खेती के प्रयोग करने हेतु स्थाई रूप में सेवा में लगाने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। वह स्थान 'दादी प्रकाशमणी वनराई' के नाम से जाना जाता है। वहाँ पर 'शिव फॉर्म हाऊस' बना हुआ है। उस खेत में नारियल, केला, गन्ना, गेहूँ, 100 आम के पेड़ लगाये गये हैं।

मोर और बन्दर भी योग की भाषा समझने लगे – इस साल जुलाई में डेढ़ एकड़ मकई की बुवाई की थी। अगले ही दिन 10-12 मोरों का झुण्ड आया, मकई चुगने लगे। देखने वाले कहने लगे, अब तो ये सारा खेत खा जायेंगे। हमने योग द्वारा उन्हें पेट भर खाने का संकल्प दिया, उन्हें भगाया नहीं। छ: दिन के बाद मकई के सभी बीज अच्छी तरह से उग आये, खेती खाली नहीं रही। इसका मतलब वे मकई के बीज नहीं खा रहे थे, कीड़े खा रहे थे।

मकई तीन मास में तैयार हुई तो सभी कहने लगे, अब बन्दर आकर विध्वंस करेंगे लेकिन हमने योग द्वारा ईश्वर से कहा, 'जैसे हम आपके बच्चे हैं वैसे बन्दर भी आपके बच्चे हैं, उन्हें पेट भर खाने दो। घर के ऊपर पानी की टंकी रखी है, पानी भी पीकर जाएँ लेकिन पूरी खेती को खराब न करें' इस सकारात्मक सोच का असर ऐसा हुआ कि बन्दर आते तो थे लेकिन एक या दो मकई के भुट्टे लेकर चले जाते थे। इन जानवरों से फसल का कोई नुकसान नहीं हुआ तथा 48 हजार की मकई बैंगलूर के एक कंपनी ने 65 हजार रु. प्रति टन के हिसाब से खरीदी। उसमें मुख्य फसल गन्ने की है जिसमें करीबन 150 टन गन्ना होगा जिससे तीन लाख रुपये मुनाफा मिलने की सम्भावना है।

हमारे खेत में लगभग एक हजार पेड़ हैं जिसमें 210 आम के, 55 चीकू, 90 नारियल, 200 मोर आंवला, 220 नीम तथा अन्य फल देने वाले हैं। आस-पास कलराठी जमीन है और इस इलाके में शुगर फैक्ट्री का प्रदूषण भी बड़ा है लेकिन इन सब पेड़ों की वजह से वहाँ का पर्यावरण बहुत ही सुन्दर और हराभरा है। योग का शक्तिशाली वातावरण दिव्यता की अनुभूति कराता है। ऑक्सीजन की मात्रा भी अधिक है। सभी लोग सुख और शान्ति की अनुभूति करते हैं।

योग कक्ष के पास में एक नीम्बू का पेड़ है जिसमें इस साल करीबन तीन हजार नीम्बू लगे हैं, ऐसे नीम्बू का स्वाद खट्टा होता है लेकिन यह मीठा भी है। पपीते के पेड़ को साढ़े चार से 5 किलो वजन तक के फल लगे हैं। वहाँ के हर फल जैसेकि नारियल, चीकू, आम, शरीफा, केले सभी बहुत ही मीठे और स्वादिष्ट हैं।

कोई भी मानव अन्न-पानी के बिना जीवन नहीं जी सकता। अत: इस 'शाश्वत यौगिक, जैविक खेती को अवश्य एवं गम्भीरता से प्रयोग में लाने का प्रयास करें ताकि पुन: धरती माँ को स्वच्छ, शक्तिशाली बनाकर मानव जाति का संहार होने से बचाया जाये। सुन्दर, स्वर्णिम, सुखमय संसार की स्थापना के कार्य में सहयोगी बनें।'

बी.के. दत्ता भाई सम्पत राव नेटके

लासूरगांव, ता. वैजापुर, जि. औरंगाबाद मो. : 08055759459

मैं 25 साल से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का विद्यार्थी हूँ। परमात्मा पिता तो हमें रोज मुरली में श्रीमत देते हैं कि बच्चे, तुम्हें राजयोगी बनना है तो पहले प्रयोगी बनना पड़ेगा। तो मैंने सन् 2012 से यौगिक खेती में योग का प्रयोग करना शुरू किया। पहले एक एकड़ यानी 40 गुंठा में कपास की खेती की। सर्व प्रथम कपास के बीजों को 8 दिन बाबा के कमरे में रखा और अमृतवेले बाबा से सप्तरंगी किरणें लेकर उस बीज को शक्तिशाली बनाया।

फिर शाश्वत यौगिक खेती की पुस्तिका के विधि अनुसार बीजामृत बनाकर बीजों को ऊपर लेप के रूप में लगाया। उसके बाद बाबा की याद में कपास का बीज एक एकड़ में लगा दिया। 15 दिन के बाद जीवामृत की खाद का पानी की तरह छिड़काव किया। रोज़ अमृतवेले 10 मिनट खेत एवं कपास को इमर्ज करके बाबा से शक्तिशाली किरणें लेकर कपास को देता रहा। ऐसे 50 दिन तक रोजाना नुमाशाम का योग कपास की खेती में ही किया।

फिर दशपर्णी अर्क बनाकर उसको तीन बार कपास के ऊपर स्प्रे किया। तो सचमुच बाबा की कमाल यह देखी कि कपास की ऊंचाई 6 फुट से लेकर 7 फुट तक चली गई। रिजल्ट में एक एकड़ 40 गुंठा में कपास का उत्पादन 21 क्विंटल हुआ और खर्चा बीज का एक हजार रुपये, खाद का एक हजार रुपये ऐसे कुल खर्चा दो हजार रुपये हुआ और उससे उत्पादन 21 X 4,500 रुपये = 94,500 रुपयों का हुआ। तो फायदा भी हुआ, प्रकृति की सेवा भी हुई, खुशी

भी हुई तो यह क्या है? किसकी कमाल कहेंगे! इसमें मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह रहा कि मुझे उस समय धूप की बहुत तकलीफ थी। रात को भी लाइट के किरणों से भी आँखों को तकलीफ होती थी। तो मेरा योग भी ठीक से नहीं लगता था लेकिन जब से यह प्रयोग प्रकृति (खेती) के ऊपर करने लगा, तब से मेरा योग भी अच्छा लगने लगा और समझ में आया कि जब बीमारी में योग नहीं लगता है तो ऐसे प्रयोग करना चाहिए। इसका परिणाम तन और मन पर अच्छा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे सारे ईश्वरीय परिवार का भी सहयोग मिलने लगता है इसलिए मैं परमात्म पिता का बहुत ही आभारी हूँ और किसान भाइयों से अनुरोध करता हूँ कि ऐसी खेती करने का अनुभव करके देखना चाहिए।

बी.के. दर्शना कारापुरकर

मापसा, गोवा (मो. 09881287201)

सन् 2009 में मैं ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू, राजस्थान में ग्राम विकास प्रभाग की मीटिंग के लिये गई थी। वहाँ मुझे शाश्वत यौगिक खेती के अन्तर्गत कई अनोखी बातें जानने को मिली। जैसेकि मनुष्य के समान पेड़-पौधे, पशु-पंछी भी भावनाओं को समझते हैं। स्वार्थ भाव और रासायनिक खाद के इस्तेमाल से प्राप्त अनाज जहरीला होता है। जैसे एक बच्चे की अच्छी परवरिश के लिये भोजन के साथ स्नेह और प्यार की जरूरत होती है, वैसे ही पेड़-पौधों को जैविक खाद के साथ अगर राजयोग के अभ्यास द्वारा परमात्म शक्ति के शुद्ध, शक्तिशाली प्रकम्पन्न दें तो उनसे बहुत अच्छी उपज प्राप्त होती है। उत्पादन ज्यादा मिलने के साथ-साथ क्वालिटी अच्छी होती है, आकार बढ़ता है, चमक आती है और पौष्टिकता भी ज्यादा मिलती है। जमीन में सूक्ष्म जीवाणु बढ़ते हैं। पर्यावरण में शुद्ध और शक्तिशाली प्रकम्पन्न फैलने से कीट या रोग नियंत्रण प्राकृतिक पद्धति से होता है। साथ में यह भी सुना कि जमीन चाहे कैसी भी हो, बीज चाहे कैसा भी हो लेकिन जहाँ परमात्म शक्ति है, वह खेती तो होनी ही है। यह सुनकर मैंने तुरंत फैसला कर लिया कि आज के बाद मैं अपनी खेती में कभी भी रासायनिक खाद का इस्तेमाल नहीं करूँगी।

मधुबन से आते ही सबसे पहले मैंने एक चीकू के पेड़ पर योग का प्रयोग करना शुरू किया। वह काफी पुराना वृक्ष था लेकिन एक भी चीकू उस पर नहीं लगता था। रोज़ सवेरे

अमृतवेले 10/15 मिनट घर में बैठकर ही इस पेड़ के लिये विशेष योगदान देना (शुद्ध संकल्प से प्रकम्पन्न देना) शुरू किया। यह संकल्प दिया कि तुम कितने अच्छे पेड़ हो, कितने बड़े हुए हो, कितनी अच्छी छाँव देते हो। हम यह भी जानते हैं कि तुम पर कोई फल नहीं लगता इसलिये तुम दु:खी हो और हमारे परिवार वाले भी तुमसे नाराज़ हैं। उन्होंने तुम्हें काटने का फैसला किया है लेकिन अब तुम बिल्कुल घबराओ नहीं। प्रकृतिपति परमात्मा स्वयं तुम्हारे लिये इस धरती पर आये हैं। देखो, तुम्हारे ऊपर उनसे कितनी पवित्र, शुद्ध, शक्तिशाली किरणें फैल रही हैं। इस तरह के संकल्पों के साथ मैंने रोज़ मन-बुद्धि से यह चित्र देखना शुरू कर दिया कि पूरे पेड़ पर बहुत सारे चीकू लगे हैं।

कुछ महीने के बाद जब चीकू का मौसम आया तो पूरे पेड़ पर बड़े-बड़े चीकू लगे। यह देखकर मुझे और मेरे परिवार को भी बड़ा आश्चर्य हुआ और खुशी भी हुई। फिर मैंने चावल की खेती पर योग का प्रयोग किया। बीज को 5 दिन राजयोग द्वारा शुद्ध-शक्तिशाली प्रकम्पन्न देकर उन्हें खेत में अंकुरित होने के लिये थोड़ी-सी जगह पर डाल दिया। ऐसे वक्त पर कबूतर और चिड़ियों का झुण्ड बीजों को चुगने के लिये आता है लेकिन उनसे संकल्प शक्ति से दोस्ती कर उनको बताया कि यह शाश्वत यौगिक खेती है जिसे देखकर दूसरे किसानों को भी परमात्म शक्ति का अनुभव होगा और पर्यावरण शुद्ध रखने में मदद मिलेगी। इसके लिये आपको हमारी खेती पर बीज नहीं चुगना है और सचमुच आस-पास के किसान यह देखकर चकित हो गये कि यह छोटे-छोटे पंछी आस-पास की खेती के बीज चुगकर चले गये, हमारी खेती में उन्होंने कोई नुकसान नहीं किया।

इस बार मैंने खेती में कोई रासायनिक खाद नहीं डाली सिर्फ गाय का गोबर डाला। इस वजह से पड़ोसी किसान महिलायें कहने लगी कि अगर रासायनिक खाद नहीं डालोगी तो खेती में धान नहीं उगेगा। साल भर के अनाज का क्यों नुकसान करती हो? क्या साल भर चावल खरीदकर खाओगी? इन बातों को सुनकर मेरा मन घबरा गया। कई तरह के अशुद्ध विचार चलने लगे कि अगर ठीक से धान नहीं उगा तो क्या होगा? सब लोग मुझे हंसेंगे। क्या करूँ समझ में नहीं आ रहा था। मन व्यर्थ से भरा हुआ होने के कारण परमात्मा की याद से खेती में शुद्ध-शक्तिशाली प्रकम्पन्न फैलाने मुश्किल हो गये। मेरे व्यर्थ और चिंताग्रस्त विचारों का असर पूरी खेती पर दिखने लगा। खेती धीरे-धीरे झुकने लगी, सूखने लगी और मैंने जान लिया कि अब तो यह खेती खत्म हुई। मायूस होकर मैंने कोल्हापुर की ब्रह्माकुमारी मनीषा बहन को फोन किया जिन्होंने यौगिक खेती के लिये प्रेरित किया था। मेरी बातों को सुनकर उन्होंने कहा कि सबसे

पहले अपने व्यर्थ संकल्पों को रोक दो। खेती आपकी नहीं, परमात्मा की है। स्वयं भगवान इस खेती का रक्षक है। ऐसी भावना से मन को हल्का कर, पूरी फसल को दृष्टि देकर यह चित्र देखो कि सारी फसल हरीभरी हुई है और बहुत अच्छे से बढ़ रही है। ये बातें सुनकर मेरा मन फिर से निर्भय, निश्चिंत हो गया और फसल को परमात्म शक्ति के प्रकम्पन्न देने शुरू किये। इसके साथ ही पूरी खेती में सप्त-धान्यांकुर अर्क का छिड़काव किया जो सात तरह के अनाजों को अंकुरित करके बनाया जाता है जिसके लिये खर्चा भी बिल्कुल कम होता है। धैर्य और परमात्म शक्ति का असर बहुत जल्दी ही देखने को मिला। सारी फसल 15 दिन होते होते फिर से हरी-भरी हो गई, खुशी से झूमने लगी। इस तरह संकल्प शक्ति की करामात के कई अनुभव प्राप्त हुए।

कृषि-कृषक और समाज को स्वस्थ-खुशहाल बनाने वाली इस यौगिक खेती के प्रसार हेतु गोवा सरकार के कृषि विभाग के सहयोग से ब्रह्माकुमारी सेन्टर पर एक दिन का प्रशिक्षण शिविर रखा गया। जिसमें कृषि विभाग के संचालक और कई कृषि अधिकारी शामिल थे। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद अधिकारी श्री संजीव मयेकर जी ने कहा, ऐसा कभी हो सकता है क्या? सिर्फ अपने संकल्पों से अच्छी फसल कैसे ले सकते हैं? क्या आप हमें सरकारी जमीन पर यह खेती करके दिखा सकते हो? परमात्म शक्ति के अनुभव से हमने तुरंत हाँ कर दी।
दूसरे ही दिन निमित्त ब्रह्माकुमारी बहन और कुछ राजयोग के अभ्यासियों का एक ग्रुप लेकर हम उस जमीन पर गये। उस एक एकड़ जमीन पर सिर्फ 12 दिन के चावल के पौधे एस.आर.आई पद्धति से लगाये हुए थे। उसी से ही करीबन 300 चौरस मीटर का एक प्लॉट दिखाकर हमें कहा कि आज से यह प्लॉट ब्रह्माकुमारीज़ का माना यौगिक खेती का है। आपको यहाँ कोई खाद नहीं डालनी है। आप संकल्प शक्ति से कैसे खेती करते हैं, वो करके दिखाओ।

सबसे पहले हम लोगों ने परमात्मा पिता का लाल, पीला झण्डा इस खेती में लगाया। इससे भी खेती को बहुत फायदा होता है क्योंकि लाल रंग पॉजिटिव एनर्जी को खींचती है और पीले रंग को देखकर, उसे फूल समझकर कीट उस पर अपने अण्डे देते हैं। जब हवा में झण्डा लहराता है तो ये अण्डे जमीन पर गिर जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं और फसल की कीटों से रक्षा हो जाती है।

फिर रोज़ सवेरे और शाम घर बैठे ही 10-15 मिनट शुद्ध-शक्तिशाली प्रकम्पन उस प्लॉट को देने शुरू किये। कोई भी प्रकार की खाद नहीं डाली। खेती में 15 दिन में एक बार जाकर प्रकम्पन देते थे। धीरे-धीरे धान के पौधे बड़े हुए और तीन महीने बाद फसल काटने लायक हुई तो वो अधिकारी बोले कि चलो पूरी खेती में चक्कर लगाते हैं। वो बहुत खुश दिखाई

दे रहे थे। चक्कर लगाते हुए जब यौगिक खेती के प्लॉट पर आये तो बोले, देखो **''तुम्हारी खेती कैसी दिखती है!''** मैंने देखा कि सचमुच यौगिक खेती के इस प्लॉट में धान थोड़ा कम दिखाई दे रहा था। उनकी खेती में बहुत ज्यादा धान दिखाई दे रहा था। फिर भी 'जो होगा, अच्छा होगा', इस ज्ञान से और परमात्म निश्चय से मैंने सिर्फ इतना कहा कि जो ईश्वर की इच्छा। फसल 8 दिन बाद काटी गई, धान का वजन किया गया तो पाया कि उनके हर एक प्लाट के एक स्क्वेयर मीटर में उन्होंने 500 ग्राम धान पाया और इस यौगिक खेती के एक स्क्वेयर मीटर में 700 ग्राम धान हुआ। यह देखकर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। वो बोले कि हमने तो कई अच्छी रासायनिक खादें डाली थी और इन्होंने कुछ नहीं डाला। जरूर तौलने में कुछ गड़बड़ हुई होगी इसलिए फिर से तौलकर देखो। फिर से तौला गया तो उतना ही वजन मिला। उनकी रासायनिक खेती में सारी फसल पर कीट लगी थी पर यौगिक खेती में कहीं भी कीट नहीं लगी थी। कई जगह पर उनकी फसल जमीन पर गिर गई थी पर यौगिक खेती का एक पौधा भी जमीन पर नहीं गिरा था। रासायनिक खाद वाला बहुत सारा धान खाली निकला, अन्दर दाना भरा ही नहीं इसलिए वज़न कम पाया गया लेकिन यौगिक खेती का एक-एक दाना भरपूर था इसलिए वज़न ज्यादा मिला।

इस तरह जब उनको पता चला कि यौगिक खेती में कम खर्चे में ज्यादा उपज मिलती है, क्वालिटी अच्छी होती है, टेस्ट भी अच्छा होता है, फसल चमकदार बनती है, पौष्टिकता भी ज्यादा होती है, जमीन में जीवाणु भी बढ़ते हैं तो उन्होंने निर्णय लिया कि जब तक मैं यहाँ हूँ तब तक इस फार्म में कोई भी रासायनिक खाद वा कीटनाशक दवाई नहीं डाली जायेगी। फिर इस क्षेत्रिय अधिकारी ने अपने सारे कर्मचारियों के लिये शाश्वत यौगिक खेती की ट्रेनिंग रखी और वहीं पर ट्रेनिंग सेन्टर शुरू किया। फिर उस फार्म पर यौगिक-जैविक पद्धति से कई तरह की सब्जियाँ, फल-फूल, गन्ना, नारियल के पौधे उगाए गये जिसका परिणाम बहुत अच्छा दिखाई दिया। पूरे गोवा में यह सरकारी फार्म यौगिक खेती का उदाहरण बन गया।

गोवा के मुख्य शहर पणजी में शिवजयंती के दिन बहुत बड़ी जगह में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के साथ ''शाश्वत यौगिक खेती'' का स्टॉल भी लगाया गया। स्टॉल के बाजू में ही उस सरकारी फार्म के कुछ सब्जियों के पौधे अच्छी तरह डिज़ाइन करके लगाये थे। प्रदर्शनी का उद्घाटन गोवा के राज्यपाल के हाथों हुआ। जब वे इस यौगिक खेती के स्टॉल पर आये तो यौगिक खेती के बारे में विस्तार से सुना और साथ में यौगिक पौधे भी देखे, बड़े प्रभावित हुए और राजभवन के बगीचे के कर्मचारियों के लिये ट्रेनिंग शुरू कर दी और यहाँ के कुछ पौधे भी अपने

बगीचे में लगवाये।

किसानों को दु:खी-अशान्त करने का एक कारण हैं व्यसन। व्यसनों के कारण किसानों के परिवार दु:खदाई जीवन जी रहे हैं। मेरे ससुर जी इज्जतदार सफल किसान होते हुए भी मेरे पति शराब और तम्बाकू के व्यसनाधीन थे। दिन-रात व्यसनों में डूबे रहने से वो खेती से तो दूर ही रहते थे पर अच्छी-खासी नौकरी से भी हाथ धोना पड़ा। उनके गलत व्यवहार और अपशब्दों से पूरा परिवार परेशान था। मेरी हालत तो पिंजरे में फंसे पंछी की तरह थी। घर की इज्जत की वजह से ना मैं घर छोड़कर जा सकती और ना ही इस शराबी के अत्याचार को सहन कर पाती थी। समाज सेविका और उप-सरपंच होने के कारण एक दिन जब गोवा के मुख्यमंत्री और उनके साथियों के साथ हमारे घर पर ही विशेष सभा थी, तब मेरे शराबी पति अस्त-व्यस्त कपड़े और हाथ में शराब की बोतल लेकर अन्दर आये और नशे में उनके साथ गलत व्यवहार किया तब मैं शर्म से पानी-पानी हो गई। परिवार की कोई भी जिम्मेवारी उठाने के लिये वो नाकामयाब थे। तंग होकर दो बार आत्महत्या का भी प्रयास किया पर छोटे-छोटे तीन बच्चों की स्मृति से इरादा बदल दिया।

उनको व्यसनों से छुड़ाने के कई उपाय किये जैसकि हवन किया, तीर्थयात्रायें की, उपवास किये, मंत्र जाप किया, किसी माता के अन्दर देवी आती है तो उनके पास भी ले गई, 300 सीढ़ियाँ चढ़कर एक देवी के मन्दिर में मुर्गे की बलि भी चढ़ाई पर फिर भी व्यसन नहीं छूटे। फिर 7 हजार रुपये भरकर कृपा फाउण्डेशन (शराब छुड़ाने वाली संस्था) में भी रखा लेकिन जिस दिन वे वहाँ से बाहर आये तो सबसे पहले सीधे दारू की दुकान में गये। इस परेशानी की हालत में भगवान ने मुझे ब्रह्माकुमारीज़ विद्यालय का रास्ता दिखाया। यहाँ सिखाये जाने वाले राजयोग के अभ्यास से स्वयं के विचारों का परिवर्तन हुआ। भय, चिंता से मुक्त हो गई। यौगिक खेती करने से आंतरिक शक्तियों का प्रयोग करना सीखा तो परमात्म शक्तियों के अनुभव होते गये तब मैंने अपने पति पर भी योग का प्रयोग करना शुरू किया। करीबन 3 महीने प्रयोग करने के बाद उनके संस्कार बदलने लगे और एक दिन जब मैंने सहज ही उनसे पूछा कि क्या आप राजयोग का 7 दिन का कोर्स करेंगे? तो उन्होंने तुरंत हाँ कर दी। जिस दिन से कोर्स शुरू किया उन्होंने शराब पीना बन्द कर दिया। धीरे-धीरे तम्बाकू भी छूट गयी। राजयोग से आत्म जागृति हुई, परमात्मा से सम्बन्ध जुट गया और 4 साल में उनका ऐसा परिवर्तन हुआ कि आज वो घर के, खेती के हर कार्य में सहयोग देते हैं। इतना ही नहीं घरों के नज़दीक ही गीता पाठशाला में ईश्वरीय महावाक्य (मुरली) भी सुनाते हैं। आज मेरा घर जैसे स्वर्ग बन गया है।

आज एक ओर जहाँ हजारों अन्नदाता किसान कर्ज, प्राकृतिक आपदाओं, भय, चिंता, मानसिक तनाव की वजह से रोगी, व्यसनाधीन होते दिखाई दे रहे हैं, आत्महत्या जैसे मार्ग को अपना रहे हैं, वहीं दूसरी और शाश्वत यौगिक खेती करने वाले हजारों किसान राजयोग के अभ्यास से सहनशक्ति, समाने की शक्ति, परखने की शक्ति, निर्णय शक्ति को बढ़ाकर धैर्य, निर्भयता, अर्न्तमुखता जैसे गुणों को धारण कर व्यसनों से मुक्त, निश्‍चित और खुशहाल जीवन जी रहे हैं और समाज को भी शुद्ध, शक्तिशाली और पौष्टिक अन्न प्रदान करके दुआयें प्राप्त कर रहे हैं। आइये हम भी खुशहाल जीवन की ओर कदम बढ़ाएँ ताकि सारी धरती गोकुल गांव बन जाये, स्वर्ग बन जाये।

बी.के. इनाशुयो फर्नांडिस

गोवा, मडगांव (मो. 09423058643)

मैं कैथेलिक परिवार से हूँ, मैं बचपन से ही माँ बाप के साथ खेती कर रहा हूँ। अभी मैं ब्रह्माकुमारीज़ का नियमित विद्यार्थी हूँ। एक दिन अचानक हमारी निमित्त राखी दीदी ने मुझसे कहा कि आप खेती करते हो, तो आप छोटी-सी जगह पर यौगिक खेती जरुर करो, इसके लिए आपको परमात्मा की किरणों द्वारा पवित्रता के वायब्रेशन लेकर धरती को शुद्ध शक्तिशाली बनाना है। तो मैंने कहा दीदी मैं जरूर ऐसी खेती करूँगा। मैंने तब से लेकर मन में दृढ़तापूर्वक संकल्प करके योग अभ्यास चालू किया। सबसे पहले बीज को सात दिन तक योग कक्ष में रखकर उस पर योग किया। आठवें दिन उस बीज को जमीन में डालने के पहले सेन्टर के सभी भाई बहिनों के साथ शक्तिशाली योग किया। हमारे खेत में बहुत सारे कबूतर बीज खाने के लिए आते थे, हमारे पड़ोसी तो अपने खेतों में बीज डालकर 8-10 दिन उस पर निगरानी रखते थे, कबूतरों को खेत से भगाते रहते ताकि वो बीज न खायें। लेकिन मैंने बीज़ जमीन में डाला और शक्तिशाली योग किया और बाबा का झण्डा खेत में लगाकर घर चला गया। 8 दिन तक बहुत कार्यों में व्यस्त होने के कारण मैं खेती की तरफ नहीं जा सका फिर भी घर से वा सेन्टर से योग करता रहा। हमने खेत में जो भी बीज बोये थे, सब बीज उग आये। ऐसे अनुभव जैसे स्वयं परमात्मा ने हमारे खेत की रक्षा की हो। हमने खेत में केवल गाय का गोबर और गोमूत्र का ही इस्तेमाल किया था।

3-4 महीनों के बाद इस खेती से हमें डेढ़ एकड़ जमीन में 2 हजार किलोग्राम धान्य मिला। इससे पहले हमें रासायनिक खेती में महंगी-महंगी खादें डालने के बाद जितनी उपज मिलती थी, उतनी बिना खर्चे के पैदावार हुई तो मेरा निश्चय बढ़ गया, तब से लेकर मैं लगातार इसी विधि से गोबर और गोमूत्र के उपयोग के साथ, योग के प्रयोग की खेती कर रहा हूँ। खेत में परमात्मा शिव का झण्डा लगाया है, बीच-बीच में खेत पर जाकर योग करता हूँ। दूसरी बार की फसल से मुझे उसी जमीन से 3 हजार किलोग्राम अनाज मिला। जिससे मुझे 40 हजार रुपये का अधिक मुनाफा हुआ है, यही है यौगिक खेती की कमाल। अभी दूसरी फसलों पर भी मैं योग के प्रयोग कर रहा हूँ। हमारा शुभ संकल्प है कि इससे प्रेरणा लेकर हमारे किसान भाई राजयोग की सरल विधि को सीखकर अपनी थोड़ी जमीन पर भी योग के प्रयोग करके अपने खेतों में हरियाली और जीवन में खुशहाली लाकर अपने तन मन को स्वस्थ और समाज को सुखी, देश को समृद्ध बनाने में अपना योगदान देंगे।

बी.के. महेन्द्र ठाकुर, माइक्रोबायोलॉजिस्ट

गोंदिया, महा0 (मो. 08550925000)

मैंने मुम्बई में तीन साल एक कम्पनी में माइक्रोबीयल फर्मेन्टेशन्स पर काम किया। उसके बाद हमने जैविक खाद की फैक्ट्री अपने गाँव गोंदिया में डाली। इस यौगिक खेती के बड़े सुन्दर दो अनुभव हुए। उस समय हमने 120 एकड़ में केला बोया। फल अच्छा लगा मगर अन्त में एक समस्या आ गई। हमारे केले के पेड़ रोज बीच में से टूट कर गिरने लगे। हमने एग्रोनोमिस्ट को बुलाया तो उन्होंने कहा पौधे तनाव में है। कुछ उपाय नहीं, तो उस समय अपनी फसल बचाने का ऐसा कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। हमें ये संकल्प आया कि पॉजिटीव वायब्रेशन्स देकर क्या हम परिवर्तन कर सकते हैं? हमने योग का प्रयोग खेती पर शुरू किया। सुबह 4 बजे 4-5 लोग जाकर राउन्ड में चक्कर लगाते हुए परमात्मा पिता से सर्व शक्तियाँ लेकर पौधों को देना शुरू किया। 4-5 दिन में हमें बहुत अच्छा रिजल्ट मिला पेड़ो का टूट कर गिरना रूक गया, धीरे धीरे गिरना बन्द हो गया। जो गिर चुके थे वो तो चले गए। इस प्रकार करीब 100 एकड़ में हमारी वह फसल पूर्णतया बच गई।

दूसरा अनुभव पपीते का है, उस समय पपीते पर बहुत बीमारी आ रही थी। उसमें एक

बीमारी थी जो पत्तों को खराब करती है हमने एग्रोनोमिस्ट को बुलाया फसल बचाने के लिए तो कहा कि तीन स्प्रे करने होंगे उसके बगैर ये बीमारी नहीं जा सकती। खेती ज्यादा थी इसलिए तय हुआ कि हमें केमीकल के तीन स्प्रे करने हैं। चूंकि हमारे पास पिछला केले पर योग के प्रयोग का अनुभव था। स्प्रे खरीदे मगर छिड़काव नहीं किया और हमने हर क्यारी में, हर एरिये में जाकर योग के प्रकम्पन फैलाए, उन पेड़-पौधों के साथ जमीन को शक्तिशाली पॉजीटिव वायब्रेशन्स दिये। पीली पत्तियां जो सूखने को आई थी वह धीरे-धीरे हरी हो गई, फल भी अच्छा आया। उस पपीते को हमने अच्छे दाम में बिक्री किया। ग्रुप फार्मिंग वाले हमारे किसान मित्रों को इन चीज़ों पर विश्वास न होने से हमें मजाक में कहते ठाकुर साहब डूब जाओगे। स्प्रे कर लो।

उन्होंने अत्यधिक रसायन का इस्तेमाल किया, उनको फसल तो मिली लेकिन बीमारी और रसायन के प्रभाव से फल खाने योग्य नहीं रहा। उसे व्यापारियों ने खरीदा ही नहीं। पड़ौसी किसानों को पतीता काट कर उसी जमीन में फेंकना पड़ा।

आज 12 वर्षों से मैं शाश्वत यौगिक खेती कर रहा हूँ तब से मेरा विश्वास गहरा हुआ। जब हम जीवाणुओं को प्रसन्नचित्त, सन्तुलित वातावरण देते हैं तो लाभदायक जीवाणुओं में वृद्धि होती है। हमारे संकल्पों की शुद्ध भावनाओं को जीवाणु ग्रहण करते हैं तो उसमें विविध एन्जाइम्स, हार्मोन्स का श्रवण होता है जिससे पौधों में बॉयोकेमीकल चेंजेस आते हैं फलस्वरूप अच्छी सात्विक, पौष्टिक और अधिक उत्पत्ति हमें मिल पाती है। मैं हर किसान को बिना खर्च वाली इस पवित्र पद्धति से कृषि करने की सलाह देता हूँ। इससे सभी प्रसन्न और स्वस्थ बन सकते हैं।

ब्र.कु. ज्ञान सिंह भाई

गगसीना गाँव, हरियाणा (मो. 09416138161)

मैंने सन् 2008 में ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया था। उस सम्मेलन में रासायनिक खेती के दुष्परिणामों के बारे में जानकर मुझे आश्चर्य हुआ। इसके पहले भी मैं रासायनिक खेती के दुष्परिणामों को जानता तो था परन्तु यहाँ आने से इसके बारे में पूरी समझ मिली। कृषक अगर ऋषि बनकर कृषि करे तो यह बहुत उच्च कोटी की खेती हो सकती है। यह सब सुनने-समझने के बाद मुझे यौगिक खेती करने की प्रेरणा

मिली और मैंने निश्चय किया कि यौगिक खेती जरूर करनी ही है। मेरा तो अनुभव यह है कि जब से हमने यौगिक खेती शुरू की है तब से हमने प्रकृति के पाँचों तत्वों को शुभ भावना का दान करना शुरू किया है, जिसके फलस्वरूप अब तक मेरे शरीर में भी कोई बीमारी नहीं आई है इसलिए मैं ऋषि बनकर कृषि करने की प्रेरणा से ही आगे बढ़ रहा हूँ।

सबसे पहले 10 नवंबर 2011 को मैंने गेहूँ अनुसंधान निर्देशालय, करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुभाष गिल के मार्गदर्शन में दो एकड़ भूमि में विधिपूर्वक यौगिक खेती के तहत गेहूँ के फसल की बुआई की। और श्रेष्ठ संकल्प किया था कि इस खेती से जो शुद्ध अन्न निकलेगा, उससे परमपिता परमात्मा श्री-श्री शिवबाबा को भोग स्वीकार कराऊंगा। मेरी यह भावना पूरी हुई है और शिवबाबा ने भोग स्वीकार किया भी, इससे मैं बहुत खुश हूँ। मैंने अपने खेत में योग के प्रयोग किये और परिणाम भी बहुत सुंदर एवं अच्छे मिले। ये सब प्रयोग मैंने उपरोक्त वैज्ञानिक की देख-रेख में किये। इन वैज्ञानिकों के साथ विचार-विमर्श करने से पता चला कि पौधों में संवेदनायें होती हैं, वे भी अच्छे-बुरे विचारों पर प्रतिक्रिया देते हैं। बच्चों की तरह दुलारने से और फसलों को परमात्मा का प्यार तथा शक्ति प्रदान करने से पौधे बहुत सुंदर रूप से विकसित होते हैं, शक्तिशाली बनते हैं तो अन्न भी शुद्ध और पौष्टिक शक्तिशाली ही निकलेगा।

नियमित रूप से खेती में आधा घण्टा तथा अमृतवेले के समय में घर से फसलों को राजयोग के माध्यम से शुभ संकल्प और शक्तिशाली वायब्रेशन्स देता था। खेती में चक्कर लगाते समय और खेती में काम करते समय पौधों को प्यार से दृष्टि देता था। राजयोग के माध्यम से फसलों में शक्ति भरते हुए फसलों की कार्यक्षमता को बढ़ाता रहता था, संवेदनशील होकर हर पौधे का छोटे बच्चों समान ध्यान रखता था। इस सहज योग द्वारा परमात्मा से सातों गुणों के वायब्रेशन देने से फसलों में अद्भुत चमक देखने को मिली। ज्ञान में आने से पहले मैंने यह भी सुना हुआ था कि हमारी फसल को किसी की बुरी नज़र लग गई है, इस पर मैंने सोचा कि जब फसल को निगेटिव एनर्जी प्रभावित कर सकती है तो पॉजिटीव परमात्म शक्ति क्यों नहीं प्रभावित करेगी! इसी आधार पर खेती में योग के प्रयोग शुरू किये और सफलता 100 प्रतिशत मिली। ये प्रयोग देखकर कई किसान भाइयों ने भी यौगिक खेती करनी शुरू कर दी। इन प्रयोगों के आकड़े गेहूँ अनुसंधान निर्देशालय के वैज्ञानिक डॉ. सुभाष गिल द्वारा किये गए तथा उनका सांखिकी तौर पर विश्लेषण नीचे दी गई तालिका में उपलब्ध हैं।

यौगिक खेती द्वारा गेहूँ तथा बासमती चावल पर किये गये प्रयोग के तीन वर्षों के औसत परिणाम

उपचार का नाम	गेहूँ की उपज (क्विंटल/हेक्टेयर)	बासमती चावल (क्विंटल/हेक्टेयर)
यौगिक जैविक खेती	29.19 ,,	36.65 ,,
जैविक खेती	21.49 ,,	30.54 ,,
रासायनिक खेती	33.02 ,,	35.20 ,,
कंट्रोल (कोई खाद नहीं)	15.49 ,,	25.93 ,,
क्रांतिक मान (0.0)	2.85 ,,	2.22 ,,

इन परिणामों से वे बहुत खुश हुए तथा उनका कहना है कि यौगिक जैविक खेती के प्रयोग से न केवल अधिक उत्पादन लिया जा सकता है बल्कि अन्न की गुणवत्ता एवं शुद्धता भी बढ़ाई जा सकती है। शुद्ध अन्न का मन पर भी सीधे तौर पर प्रभाव पड़ता है। यौगिक अन्न को बाजार में भी अधिक भाव मिलते हैं तथा ग्राहक भी खुशी-खुशी यह अन्न खरीद लेते हैं। इस कारण से मैं बहुत खुश हूँ और मैंने यौगिक खेती करना बढ़ा दिया है।

बी.के. बलवीर सिंह यादव

नारनौल, हरियाणा (मो. 09717432955)

मैं यादव समाज से नारनौल, हरियाणा निवासी एक किसान हूँ। सन् 2000 से स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति लेकर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का एक विद्यार्थी बनकर श्रेष्ठ कर्मयोगी जीवन सफल कर रहा हूँ। सन् 2008 में ब्रह्माकुमारीज़ के अन्तर्गत ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मेलन में मैंने भाग लिया था। उसमें रासायनिक खेती के दुष्परिणामों के बारे में जानकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने समझा कि किसान अगर सच्चे अर्थ में राजऋषि बनकर खेती करे तो वह बहुत उच्च कोटि की खेती हो सकती है। यह सब सुनने के बाद मुझे यौगिक खेती करने की प्रेरणा मिली और मैंने निश्चय किया कि यौगिक खेती जरूर करनी है। जब से मैंने यौगिक खेती करना शुरू की है, तब से शरीर में कोई बीमारी नहीं आई। एक बार आंधी-

तूफान के दौरान ओले गिरे तो चारों तरफ नुकसान हुआ। मैं 150 कि.मी. की दूरी पर होते हुए भी वहाँ से ही बाबा की याद में खेती को इमर्ज कर सकाश देता रहा और हमारा इलाका ओलों से बच गया अर्थात् फसल को नुकसान नहीं हुआ। एक बार सरसों की फसल को सर्दी से नुकसान पहुँचा, मैं बाबा को याद कर फसल की सुरक्षा के लिए शुभ भावना करता रहा तो दूसरी बार जब यह सर्दी पड़ने का दौर आया तो फसल को कोई भी नुकसान नहीं हुआ। अमृतवेले के समय नियमित रूप से घर से फसलों को शुभ संकल्प और शक्तिशाली वायब्रेशन देता हूँ। ऐसे ही शाम को 6.30 से 7.30 बजे तक योग का प्रयोग करता हूँ। खेती में चक्कर लगाते समय और खेती में काम करते समय पौधों को प्यार से स्पर्श करते हुए दृष्टि देता हूँ। सहज योग द्वारा परमात्मा से सातों गुणों के वायब्रेशन देने से फसलों में अद्भुत चमक देखने को मिली है। कई किसान मुझसे इस चमत्कार के बारे में पूछते हैं तो मैं राजयोग की विधि से सिद्धि की प्राप्ति का मार्ग बताता हूँ और भगवान बाप को फरियाद नहीं बल्कि याद करने की बात बताता हूँ। वे आश्चर्यचकित होते हैं।

100 किलो सरसों में 35 किलो तेल और बाकी खली बनती है यह अपने आपमें एक अनोखा प्रयोग है। आज तक देखा गया है कि 28 से 32 किलो से ज्यादा तेल निकला ही नहीं है। गेहूँ, बाजरा, मूँग, तिल आदि भी अच्छी क्वालिटी के होते हैं। स्वादिष्ट और पौष्टिक भी होते हैं। सर्व प्रथम 8 दिन बाबा के कमरे में बीज रखकर उसे संस्कारित भी करते हैं, सारे ईश्वरीय परिवार का भी सहयोग मिलता है। मैं परमात्मा पिता शिव भोलेनाथ का बहुत-बहुत आभारी हूँ और किसान भाइयों से विनम्र अनुरोध करता हूँ कि ऐसी खेती करने का अनुभव करके देखें। जिससे देश ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में हत्या, आत्महत्या रोकने में सहयोग होगा और विश्व भाईचारे में रहेगा। जैसा अन्न वैसा मन, जैसा पानी वैसा वाणी, जैसा संग वैसा रंग और जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि बन जायेगी।

बी.के. उद्धव भाई - पिपराटा

जि. खरगोन, मध्य प्रदेश (मो. 09754705539)

मैं सन् 1984 से ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के सम्पर्क में आया और तब से ही योग के प्रयोग कर रहा हूँ। जब 25 अगस्त, 2009 में प्रकाशमणि दादी जी के स्मृति दिवस पर शान्तिवन,

मधुबन में आये हुए थे। तब दादी जानकी जी के वरदानी बोल सुनकर यौगिक खेती करने की प्रेरणा मिली। उसके बाद खरगोन सेवाकेन्द्र पर भी यौगिक खेती का कार्यक्रम निमित्त बहन ने रखवाया। उससे हमारी प्रेरणा में और प्रबलता आई और 6 एकड़ खेती को हमने पूर्णतया शाश्वत यौगिक खेती में परिवर्तित कर दिया।

शुरूआत अमृतवेले 15 मिनट योगदान देने से की। शाश्वत यौगिक खेती की पुस्तिका के आधार से जीवामृत, बीजामृत, अमृतपानी, घनजीवामृत आदि तैयार किये। हमने मकई, सोयाबीन, मूँगफली, अरहर, मूंग, उड़द, गेहूँ, चना आदि की फसलें ली। सन् 2012-13 में प्रति एकड़ 6 क्विंटल कपास का उत्पादन मिला। सन् 2013-14 में 20 किलो गेहूँ के बीज से 9 क्विंटल उत्पादन मिला। मूँगफली बीज़ 4 किलो बोये तो 2 क्विंटल की फसल हुई। तुअर के 2 किलो बीज बोने से 5 क्विंटल उत्पादन मिला। सोयाबीन के बीज 30 किलो बोने से 9 क्विंटल सोयाबीन का उत्पादन हुआ। इस समय शाश्वत यौगिक खेती की पद्धति हमारी भूमि और मानव समाज दोनों के लिये एक वरदान साबित हो रही है। हमने पाया कि यौगिक खेती करने वाली भूमि पर आते ही मन्दिर जैसी शान्ति का अनुभव होने लगता है, बहुत अच्छा एक सुकून-सा महसूस होता है, अपनापन फील होने लगता है। इससे किसान स्वावलम्बी भी हो जाता है क्योंकि खाद बनाना, दवाई बनाना तथा अन्य छोटे-मोटे काम खुद को ही योगयुक्त होकर करने पड़ते हैं जिससे जमीन, बीज, खाद, पानी, बुआई सबमें सशक्त प्रकम्पन्न फैल जाते हैं। साथ ही व्यक्ति तथा प्रकृति के ऊपर भी बहुत ही अच्छा प्रभावशाली सकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे सुख-शान्ति भरा जीवन व्यतीत करने में मदद मिलती है।

यौगिक खेती के अन्तर्गत हमने बाबा के संगीत द्वारा पेड़-पौधों के पत्तों को सिकुड़ने एवं झड़ने (पर्णगुच्छ) के रोग पर नियंत्रण पाया है। ऐसे ही 250 मि.ली. गाय के दूध, 2 चम्मच हल्दी में 15 मि.ली. पानी मिलाके स्प्रे करने से भी इस रोग पर कन्ट्रोल हुआ है। गुड़ के प्रयोग से अनाज की फसल पर और बेल वाली सब्जी तथा फल पर कीट नियंत्रण करने में भी सफलता मिली है। प्रति एकड़ में बाबा का एक एक झण्डा लगाने से भी हर बात में बाबा की मदद का अनुभव होता है। यौगिक खेती की फसल से जो भूसा निकलता है उसे पशुओं को खिलाने से दूध उत्पादन में भी वृद्धि देखी गयी है। हमारी एक गाय पहले प्रतिदिन 3-4 लीटर दूध देती थी लेकिन जब उसे यौगिक भूसा खिलाने लगे तो वही प्रतिदिन 5-6 लीटर दूध देने लगी। फिर देखा कि योग के प्रयोग से अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि दोनों परिस्थितियों में अच्छी फसल होती है और कम खर्च बालानशीन भी होता है। पशु-पंछी भी हमारे मन की बातें सुनते-समझते हुए देखे जाते हैं।

बी.के. देवराज भाई, एम.ए. समाज शास्त्र

कठौली, ता. कुरुद, जिला धमतरी, छत्तीसगढ़ (मो. 08889292796)

मैं 7 साल से ईश्वरीय ज्ञान मार्ग में हूँ और 2 साल से ग्राम विकास प्रभाग के अन्तर्गत शाश्वत यौगिक खेती अभियान के सम्पर्क में आया। पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद परम कृषक परमपिता शिवबाबा पर सम्पूर्ण निश्चय रख यौगिक पद्धति से खेती करना शुरू कर दी। इस दौरान खेती में बहुत ही अनूठे अनुभव प्राप्त किये, परंतु समस्यायें भी विकराल रूप में आई लेकिन प्यारे शिवबाबा की मदद और निश्चय ने मुझे विजय दिला दिया। मुझे यह निश्चय तो था ही कि यौगिक खेती शुभ संकल्पों की खेती है, शुद्ध भावनाओं की खेती है और हमारे संकल्पों को प्रकृति सबसे अधिक ग्रहण करती है। धमतरी जिले की प्रमुख फसल धान है। इस वर्ष प्रकृति ने भी जैसेकि किसानों से मुख मोड़ लिया क्योंकि बारिश बहुत कम हुई, सारी फसल चौपट हो गई जिसके कारण किसान आत्महत्या भी कर रहे हैं क्योंकि लागत के अनुरूप प्राप्ति नहीं हुई।

मुझे यह बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि मैंने बहुत कम लागत में 3 एकड़ भूमि में 'शाश्वत यौगिक खेती' का प्रयोग किया। डेढ़ एकड़ के प्लॉट में पिछले वर्ष से 10 क्विंटल अधिक उत्पादन प्राप्त किया। दूसरे डेढ़ एकड़ के प्लॉट में पानी की कमी के कारण फसल अधिक नहीं रही परन्तु दूसरे किसानों के बराबर जरूर रही। कृषि के दौरान मेरे अनुभव निम्न बिन्दुओं में है।

जमीन सूख रही थी, पानी सिंचित करने की हमारी पूरी तैयारी थी लेकिन दीदी से चर्चा की तब उन्होंने निश्चय से कहा, आज बारिश होगी यह संकल्प करो और प्यारे बाबा को याद करो। सचमुच रात में जोरदार बारिश हुई और हमें 15 दिन राहत मिल गई। फसल पकने तक दो बार और पानी सिंचित करना पड़ा तब जाकर अच्छी फसल तैयार हुई। यह भी प्यारे बाबा का ही शुक्रिया कहेंगे।

दूसरा अनुभव, रबी की फसल काटने के पश्चात् जो वेस्ट पदार्थ (भूसा) बचता है उसे खेतों में ही जिस जगह जला दिया गया था वहाँ की फसल अच्छी रीति वृद्धि नहीं हो रही थी जिससे थोड़ा परेशान था। उस समय भगवान के यह महावाक्य याद आये कि बच्चे, दिल से भगवान को याद करो तो मुराद हांसिल होगी। सचमुच एक हफ्ते में ही फसल बहुत अच्छी तैयार होके लहराने लगी।

इस वर्ष अन्य किसानों ने अत्याधिक रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग किया, फिर भी

कीट खूब लगे थे और फसल उतनी अच्छी नहीं रही। मैंने अपनी खेती में कीटनाशक के रूप में गोमूत्र, नीम का तेल और करंज का तेल छिड़काव किया तो मेरी फसल बहुत अच्छी रही।

अब तो मुझे पक्का निश्चय हो गया कि पेड़-पौधों को जितना हम प्यार और शुभ संकल्प देंगे, प्रकृति भी हमें रिटर्न में बहुत कुछ देगी। जमीन और पौधों को विष (जहर) की नहीं, Wish यानी शुभ भावना की आवश्यकता है तभी किसान कम लागत में अधिक प्राप्ति करने से खुशहाल हो सकता है।

हमारे घर की बाड़ी में एक अमरूद का पेड़ है, जिसमें हर साल फल लगते हैं पर बहुत ही छोटे और वो भी गिर जाते हैं। इस बार अमरूद के पेड़ के पास प्रतिदिन जाकर प्यारे बाबा की याद में यह शुभ व श्रेष्ठ संकल्प करने लगा कि तुम इस बारी अच्छी तरह से बढ़ना...। मैंने पूरी निष्ठा के साथ उस पेड़ के नीचे खाद डालते हुए विजुवलाइजेशन किया कि फल बड़े हुए हैं... और हम सब खुशी से खा रहे हैं...। सचमुच 7 दिनों में ही आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिले। अमरूद बहुत बड़े-बड़े हो गये। मैं सबसे पहले प्यारे बाबा का शुक्रिया अदा किया क्योंकि ऐसी कमाल तो वही कर सकते हैं इससे और विश्वास बढ़ गया कि शुभ संकल्पों की शक्ति से खेती में भी नवीनता की जा सकती है।

इसी प्रकार एक और प्यारा-सा अनुभव मेरे पास है कि जब हमने कद्दू (कुम्हड़ा) के बीज बोये थे तो उसकी बेल तो बड़ी अच्छी लंबी बढ़ रही थी, उसमें फूल भी लग रहे थे पर वो फूल झड़ जाते थे इस कारण उसमें कोई फल नहीं लग रहे थे। हम सोचने लगे कि इसमें फल क्यों नहीं लग रहे हैं। फिर मुझे किसी अनुभवी से जानकारी मिली कि ये कद्दू नहीं फलेंगे क्योंकि इनमें परागण नहीं हो पाये हैं। जैसे ही ये बातें सुनी, उसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया और निश्चय किया कि जब धान की फसल को यौगिक पद्धति से तैयार कर सकते हैं तो ये क्यों नहीं कर सकते? उन पौधों के पास बैठ करके मैं बाबा की याद में शुभ संकल्प करने लगा और यह विजुवलाइजेशन (मनोचित्र) किया कि कद्दू के फल बढ़ रहे हैं...। फिर उन पौधों को यह स्वमान दिलाया कि आप अच्छे पौधे हो...। खूब फल रहे हैं..., आप हमें भी आनंद प्रदान कर रहे हैं...। तो देखा कि 10-15 दिन में 5-6 अच्छे और बड़े फल लगे, यह देखकर बहुत ही खुशी हुई। ऐसे छोटे-छोटे योग के प्रयोग बहुत अनुभव किये। मैंने देखा कि परमात्म स्मृति में रहकर के कोई भी कर्म करो तो उसमें परमात्मा की शक्ति भर जाने से सफलता अवश्य मिलती है।

बी.के. बसन्त भाई

कटक, हरिपुर, ढेंकानल, उड़ीसा (मो. 09438308976)

जब इस संस्था के तरफ से बताया गया कि राजयोग से प्राप्त की गयी शक्तियों को अपने व्यवहारिक क्षेत्र में कैसे प्रयोग कर सकते हैं, इसी लक्ष्य को लेकर रायपुर स्थित शान्ति सरोवर के कृषि क्षेत्र में 'शाश्वत यौगिक कृषि' विषय पर ट्रेनिंग दी गई। सौभाग्य से उसमें मुझे शामिल होने का सुअवसर मिला। वहाँ पर वरिष्ठ भाई बहनों के अनुभव सुन करके मैं आश्चर्यचकित हो गया। प्यारे शिवबाबा कहते हैं मास्टर प्रकृतिपति बनकर प्रकृति को अपने अधीन करना, यही है मुख्य पुरुषार्थ। तो मैं ऐसा पुरुषार्थ क्यों नहीं कर सकता! यह सोचकर उसी समय मैं इसे प्रैक्टिकल करके दिखाने की इच्छा अपने मन में ठान ली और घर लौटकर यौगिक पद्धति से खेती करने के लक्ष्य से अपनी खेती में बैंगन, टमाटर, पपीता, केला आदि लगाना शुरू किया। सबसे पहले भूमि अर्थात् खेत में बैठकर मास्टर प्रकृतिपति के स्वमान में स्थित होकर परमपिता परमात्मा शिव से शक्ति ले करके पूरी खेती के ऊपर सकाश के रूप में पवित्रता की किरणें डालकर उसे शुद्ध किया। कभी-कभी सूक्ष्मवतन में भी खेती को इमर्ज कर बापदादा के साथ सूक्ष्म शरीर द्वारा खेती को शान्त, पवित्र और शक्तिशाली वायब्रेशन से भरपूर किया। उसके बाद 'बीज' को योग से शुद्ध करके उन पौधों को मास्टर रचयिता हूँ, इस संकल्प के साथ लगाना शुरू किया। इस कार्य में मुझे परिवार वालों का अच्छा सहयोग मिला। मैं रोज़ पेड़, पौधों को दृष्टि देकर उन्हें पूछता था - हे वृक्षराज! आप सब कैसे हो? चैतन्य बीजरूप वृक्षपति शिवबाबा ने मुझे यहाँ भेजा है आप लोगों की सेवा के लिए। आप सब निरोगी और स्वस्थ जीवन बिताइए... मैं आप सबका परम मित्र हूँ... इस तरह से प्रकृति के साथ सुसंवाद करने से मुझे अनुभव होता था कि जैसे सारे पेड़-पौधे मुझे खुशी से और प्यार से देख रहे हैं...। अब यह अनुभव सिर्फ बताया जा सकता है लेकिन अनुभव नहीं कराया जा सकता है क्योंकि जैसे गुड़ खाने वाले ही उसकी मिठास का अनुभव कर सकते हैं...। एक बार 5 दिन के लिए मुझे कहीं बाहर जाना पड़ा तो मैं वहाँ से भी खेती को इमर्ज करके सकाश देता था। फिर मुझे लगता था जैसेकि वे मुझे ढूँढ़ रहे हैं, इधर-उधर देख रहे हैं कि मैं कहाँ हूँ। वापस आने के बाद मुझे लगा कि मैं उन्हों के साथ मिलन मना रहा हूँ। खेत के बीच में बाबा का झण्डा भी लगा रखा है।

अभी वर्तमान समय 2 एकड़ में धान की फसल ले रहे हैं और 2 गुंठे (66 स्क्वैयर फूट) में बैंगन, भिंडी, खीरा आदि सब्जियाँ लगा रखी है। मैं यही विश्वास रखता हूँ कि यौगिक खेती के द्वारा ही सारे जगत तथा किसान भाइयों का कल्याण होगा। योग के प्रयोग से परमात्म शक्ति

का अनुभव करते हुए हमारा प्रकृति के साथ सम्बन्ध बढ़ जाता है। इस बात को मैंने जब समझा तब सन् 2009 में यौगिक खेती करना शुरू किया। सबसे पहले धान पर सफल प्रयोग किया और आज भी कर रहा हूँ जिसके रासायनिक के तुलना में अच्छे परिणाम हैं। कम खर्च में ज्यादा उपज मिला है और उपज के रंग, रूप में भी परिवर्तन देखने को मिला है। यौगिक खेती की उपज पौष्टिक तत्वों से भरपूर होने कारण स्वयं के साथ समूचे संसार को बीमारियों से मुक्त तथा स्वस्थ बनाने का यह सफल प्रयास है।

बी.के. सौमगौड़ा भाई

पांडवपुरा, जि.मण्ड्या, कर्नाटक (मो. 09481442612)

मैं पिछले 11 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ का विद्यार्थी हूँ, मैं करीब 20 वर्षों से नैसर्गिक पद्धति से खेती करता आया हूँ। और मेरा शुरू से प्रकृति के साथ बड़ा ही प्रेम का व्यवहार रहा है। मैंने यह देखा कि वनस्पति में भी संवेदना के साथ महसूस करने की शक्ति होती है, उन संवेदनाओं के साथ मैंने वनस्पति के साथ गहरा सम्बन्ध जोड़ा है। जिसकी वजह से पाँचों तत्व हमेशा ही सहयोग देते रहते हैं।

2 वर्ष पूर्व मेरी मुलाकात मैसूर के ब्रह्माकुमार प्राणेश भाई जी से हुई, उन्होंने मुझे ग्राम विकास प्रभाग के अन्तर्गत चल रही सेवाओं के बारे में कुछ किसानों के प्रैक्टिकल अनुभवों सहित जानकारी दी। उनके मार्गदर्शन में (5 गुंठा) खेती के लिये शाश्वत यौगिक खेती पद्धति को अपनाया, इसका बहुत ही अच्छा परिणाम देखकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

अमृतवेले के योग में अपनी खेती के लिए विशेष सकाश देकर पवित्रता के वायब्रेशन्स फैलाता हूँ। सायंकालीन योग में शान्ति एवं प्रेम के वायब्रेशन्स से वायुमण्डल शक्तिशाली बनाता हूँ। बाबा के याद की शक्ति और हमारे मन की एकाग्रता की शक्ति का प्रकृति के ऊपर बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके जो प्रत्यक्ष प्रमाण हमने देखे हैं उन्हें शब्दों में बताना सम्भव नहीं है, इसे अनुभव करने से ही मालूम पड़ता है।

''शाश्वत यौगिक खेती'' पद्धति से मैं अपने खेत में टमाटर, भिंडी, बिन्स, बैंगन, मिर्च, पत्तागोभी की फसल ली। इसमें कोई भी कीट अथवा बीमारी नहीं आयी। हमने देखा है कि कहीं पर भी बिना रासायनिक खाद डाले पत्तागोभी की फसल होती ही नहीं, अगर हो भी गयी तो उसमें

कीड़े लग जाते हैं। लेकिन इस पद्धति को अपनाने से बहुत ही आश्चर्यजनक बात देखी कि केवल भगवान की स्मृति में रह शुभ भावना, शुभ कामना की दृष्टि वृत्ति रखते हुए कृषि कार्य करते हुए रूहानियत भरी मुस्कराहट से, स्नेह से, अपने वरदानी हस्तों से पेड़-पौधों को सहलाने, प्यार से निहारने मात्र से बहुत अच्छे, बड़े एवं रोगमुक्त स्वादिष्ट पत्तागोभी निकली। मैं पहले पत्तागोभी नहीं खाता था पर अभी खाने लगा हूँ तो बहुत अच्छी लगती है। अन्य लोग भी खाकर खूब खुश होते हैं।

टमाटर के पौधे तो मेरे बराबर 5 फीट ऊंचे बढ़ गये, इसमें एक खास बात बताते हुए बहुत खुशी होती है कि आज टमाटर तोड़ करके उसे अगर 10 दिन के बाद भी आप देखेंगे तो ऐसे लगेगा जैसेकि अभी तोड़े हैं, ताजे फ्रेश लगते हैं और स्वाद भी ताजे जैसा रहता है। जरा भी मुरझाया हुआ नहीं दिखाई देता है। रंग में भी कोई फर्क नहीं पड़ता है, लाल का लाल ही रहता है। सड़ता गलता नहीं है। शाश्वत यौगिक पद्धति में मैंने देखा कि इसमें फसलों की गुणवत्ता तथा स्वाद भी अच्छा हो जाता है। शाश्वत यौगिक पद्धति को अपनाने के बाद मेरी व्यक्तिगत रूचि कृषि की तरफ और ज्यादा बढ़ने लगी। मुझे बहुत खुशी होने लगी, सुख भासने लगा। मेरा आत्म-विश्वास बढ़ने लगा, साथ में इसी बहाने मेरा योग का चार्ट भी बढ़ने लगा।

मैं पहले नारियल, सुपारी, गन्ना, अनाज, सब्जियाँ... आदि की जैविक खेती करता था, उसमें अच्छी पैदावार तो होती थी पर कीड़े, नुशी आदि रोग लग जाते थे। लेकिन अब देखा कि इस यौगिक पद्धति से तो कमाल हो गया, फसल की पैदावार उतनी ही पर पौष्टिक और रोगमुक्त होती है। कोई कीड़ा आदि नहीं लगता है। बाबा के याद की शक्ति का प्रभाव दवा और दुआ का काम करता है। बाबा के ज्ञानयुक्त जीवन का प्रभाव जादू का काम करता है। तो इस प्रयोग से ऐसे कुदरती करामात देखने को मिलें।

सुपारी के झाड़ पर पहले पीले रंग का ग्रेस (हल्दी रोग) आता था जिससे सुपारी जितना बढ़ना चाहिए वैसा नहीं होता था तो अभी योग के प्रयोग से वो ग्रेस हरे रंग में बदल गया है, जिससे सुपारी की फसल बहुत अच्छी आ रही है।

पहले के नारियल में नुशी रोग लग जाता था तो नारियल की साइज छोटी हो जाती थी, वो भी अभी योग के प्रयोग से खत्म हो गया है, अभी तो नारियल बहुत अच्छे बड़े-बड़े लगते हैं और उसका पानी भी बहुत मीठा होता है।

एक बात और कि हमारे खेती में गन्ना तो 23 वर्षों से वही चल रहा है, उसे हर वर्ष में एक बार ऊपर से काटा जाता है और उसके पत्ते आदि को जलाने के बजाए उसी खेती में उसे

सड़ाते हैं जो बढ़िया खाद बन जाता है इसलिए पूरी खेती केंचुओं से भर जाती है और जमीन जैसे कि स्पंज-सा मुलायम हो गयी है।

हमने यह अनुभव किया है कि आज का किसान दिन-रात इतनी मेहनत करके भी पिछड़ा हुआ है। अन्य कोई व्यवसाय का सहारा न होने की वजह से किसानों का शोषण होता रहता है, कभी प्रकृति के तरफ से कुछ बाधायें आती हैं तो फसल पर असर आता है, जिससे पैदावार जितनी होनी चाहिए उतनी नहीं होती है और कभी फसल की पैदावार अच्छी होने के बाद उसको बाजार में अपेक्षित भाव न मिल पाने की वजह से उनकी आर्थिक स्थिति का विकास नहीं हो पाता है लेकिन इस शाश्वत यौगिक पद्धति में हमने देखा है कि कैसी भी परिस्थितियों में राजयोग के अभ्यास और उसके खेती पर प्रयोग से उचित सफलता पाई जा सकती है।

अत: मेरा अनुरोध है कि अनुभव के लिए किसान प्रारम्भ में अपनी खेती के एक कोने (हिस्से) में इस प्रयोग को करने का शुभारम्भ करें, निश्चित ही उन्हें उत्तम परिणाम मिलेंगे। इसकी अधिक जानकारी के लिए नजदीक के ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में अवश्य पधारें अथवा ग्राम विकास प्रभाग की तरफ से लिखी हुई 'शाश्वत यौगिक खेती' की पुस्तिका को ध्यान से पढ़े। इसके प्रति आपका विश्वास ही इस शाश्वत यौगिक खेती में सफलता दिलाने की पूँजी साबित होगा। सभी किसान भाई-बहनों के प्रति मेरी यही भावना एंव इच्छा है कि इस अभियान से जुड़कर स्व के साथ सर्व की, देश की उन्नति में भागीदार बनें।

बी.के. शेखर भाई

जमखंडी मधुरखंडी, कर्नाटक (मो. 09008818099)

मैं किसान परिवार से हूँ, शिक्षक की नौकरी छोड़कर किसान जीवन को अपनाया है और 31 वर्षों से ज्ञान में चल रहा हूँ। जब से ग्राम विकास प्रभाग का प्रारम्भ हुआ तब से इससे जुड़कर इसकी सेवा में रुचि रखता हूँ। एक एकड़ जमीन में हल्दी गांठ की फसल के लिए मैं हर रोज़ खेती में बैठकर योगदान देता था, बाबा के कमरे में 8 दिन तक हल्दी को योग के वायब्रेशन देकर बीज संस्करण किया, फिर बाबा की याद में ही वह बीज बोया।

बीच-बीच में कभी-कभी 15-15 दिन बाहर सेवा के लिए जाना पड़ता था तो अमृतवेले योग करने के बाद 10-15 मिनट वहीं दूर से ही खेती को इमर्ज करके सकाश देता रहता था। तो सचमुच उसका

असर वैसा ही दिखाई देता था जैसा योग में इमर्ज करके देखा था। यह देख बहुत हर्ष होता था और अटूट स्नेह बढ़ जाता था बाबा के प्रति और खेती के प्रति। इसका रिजल्ट हमने यह देखा कि आस-पास की खेती से हमारी खेती की फसल बहुत अच्छी आती थी।

मेरी यौगिक खेती की फसल में और दूसरी रासायनिक खेती की फसल में रात दिन का अन्तर स्पष्ट रूप से सबको दिखाई देता था। सब लोग मेरी खेती को देख प्रश्न पूछते थे कि इसमें क्या डाला है? कौन-सी खाद डाली है? मेरी युगल भी 28 साल से ज्ञान में है तो वह भी रोजाना खेती में काम करते समय बहुत अच्छी तरह से उसे सम्भालती थी, यानी पालना देती थी, साथ में योग के प्रयोग भी करती थी। कभी-कभी बीच में ब्रह्माकुमारी बहनें भी खेती में आकर योग करती थी। ऐसे शुद्ध प्रकम्पन्न से बहुत ही सुन्दर खेती हो गयी थी और उसमें शिवबाबा के लहराते हुए झण्डे को देखे लोग आश्चर्यचकित हो जाते थे और कहते थे कि हमें भी यह विधि सिखाओ। एक एकड़ जमीन में 40 क्विंटल की हल्दी की फसल निकली। इससे बाबा का नाम बाला होने जैसी सेवा हो गई और स्थूल रूप में अच्छा फायदा भी हुआ। ऐसे मीठे प्यारे बाबा का मैं दिल से बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। साथ में निमित्त बहनों को भी धन्यवाद देता हूँ।

पिछले साल बहुत बरसात हुई थी, जिसके कारण नॉनड्रिप वाली हमारे खेती में केंचुवे ज्यादा बढ़ गये थे, खेती के अन्दर पानी होने कारण केंचुवे ऊपर निकल आये थे और पानी सूखने के बाद फिर से नीचे जाते थे। एक्टिवेशन ज्यादा होने से हमारी फसल को बहुत अच्छी मदद मिली, सबसे अच्छी फसल आई। हल्दी की गाँठ को उबालने के बाद भी बड़ी-बड़ी गाँठ ही रही और सुखाने के बाद भी उनकी साइज में कोई फर्क नहीं पड़ा, बड़ी ही रही, गाँठ के अन्दर के रंग में तेल जैसी तेज चमक थी इसलिए मार्केट में रेट भी ज्यादा मिला क्योंकि हल्दी का भाव उसमें स्थित कुरकुमीन के प्रमाण पर निर्भर होता है।

बी.के. लक्ष्मण भाई - बेलगाम

ऐनापुर, कर्नाटक (मो. 09980618827)

सन् 1994 से पूरे परिवार सहित इस ईश्वरीय राजयोग की शिक्षा लेकर मैं ब्रह्माकुमार बना। पाँच साल पहले हमारे गाँव में शाश्वत यौगिक खेती के प्रति एक अभियान आया था। उस कार्यक्रम में किसी राजनीतिज्ञ ने भाषण किया और फिर सारे लोग चले गये। मुझे यह देखकर बहुत बुरा लगा क्योंकि कभी कोई कार्यक्रम ऐसे असफल नहीं हुआ था। तभी मुझे एक संकल्प आया कि मैंने खुद ही इस यौगिक खेती को अपनाया नहीं है तो सभी कैसे अपनायेंगे। तब से मैंने दृढ़ संकल्प किया कि

आज से इसकी ट्रेनिंग लूँगा और इसको जीवन में लाऊंगा।

सन् 2011 में अपनी खेती में पहले गेहूँ, सोयाबीन, चना, गन्ना तथा केले पर इसका प्रयोग आरम्भ किया तो बहुत अच्छे परिणाम मिले। सन् 2014 में अपनी 4 एकड़ जमीन में सोयाबीन बोये। उसमें दो एकड़ यौगिक खेती और दो एकड़ रासायनिक खेती थी। रासायनिक खेती में बहुत खाद डालनी पड़ी और बार-बार कीटनाशक दवाई भी छिड़कनी पड़ी। फिर भी 11 क्विंटल सोयाबीन प्राप्त हुए। इसकी तुलना में यौगिक खेती में हमने सबसे पहले जमीन शुद्धिकरण किया, बीज को भी परमात्म याद में संस्करण किया, फिर बुआई की। इसके बाद तीन बार उस खेती में जीवामृत छोड़ा, दो बार बायोडाईजेस्टर का पानी छोड़ा और बाबा की शक्तियों का भी प्रयोग किया गया। इसके बाद हमने सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य से निकलने वाली लाल किरणें और परमात्मा की लाल-सुनहरी किरणों को पौधों पर बिखेरते हुए अनुभव किया। इस प्रकार संकल्प करने से पौधों में बहुत वृद्धि हुई। संकल्प किया कि फूलों की अनेक शाखायें निकल रही हैं...। उनमें मोतियों जैसे दाने भर रहे हैं... ऐसा हर रोज़ संकल्प से विज़ूवलाइजेशन किया और सही में बहुत ही सुन्दर और अच्छी फसल आयी।

और एक बात, हर हफ्ते सेन्टर के सभी राजयोगी भाई-बहनें हमारे खेत पर आकर संगठित रूप में योग करते हैं। शुद्ध, शान्त एवं पवित्र किरणें पूरे वायुमण्डल में फैलाते हैं। आस-पास वाले किसान बाबा के झण्डे को देख पूछने आते थे। फिर हम उनको यौगिक खेती के बारे में समझानी देते थे। यह यौगिक खेती की पद्धति एक नये तरीके से सेवा करने का एक महत्वपूर्ण जरिया बन रहा है। यौगिक खेती से प्रति एकड़ साढ़े तेरह क्विंटल सोयाबीन की फसल हुई। जो रासायनिक खेती से डेढ़ क्विंटल ज्यादा हुई। अभी हमारे खेत में गन्ना, चना और केले पर योग के प्रयोग चालू हैं।

अन्त में सभी किसान भाई बहनों को यही सन्देश देना चाहता हूँ कि आप भी यौगिक पद्धति से खेती करने की विधि को अपनाओ और स्वयं के साथ परिवार को भी सुखी बनाओ।

बी.के. लक्ष्मण भाई, बीजापुर, कर्नाटक
सोयाबीन की खेती का लेबोरेट्री रिपोर्ट

AGMARK Approved [illegible]

'CHAITANYA' CONSULTANTS & LABORATORY

Analysis of : Food ,Oil, As per F.D.A.(Food adulteration Act) Water, Waste [illegible], Plant material, Cattle Feed, Industrial [illegible]

Mangalya' Plot No-20,Chanakyanagar, Nr. Mali Mangal Karyalaya, Kupwad [illegible] Sangli [illegible] Ph.:0233-2302987, Mob:-9860117877, [illegible]

Ref. No 393/A & B — ANALYTICAL REPORT — Date 21/11/2014

1. Sender's Name: -Shri. Laxman H. Devpuje
2. Kind of Article: - Soya bean (Whole)
3. Date of Receipt: -19/11/2014
4. Date of Analysis: -19/11/2014
5. Ref: - Loose sample

Sr.No.	Parameters	Unit	Organic	Non organic	Standards
1.	Moisture	%	9.69	11.35	< 16.0
2.	Total Ash	%	4.61	4.63	
3.	Total oil	%	14.43	14.28	--
4.	Protein	%	37.46	36.55	-
5.	Crude Fiber	%	3.4	3.8	-
6.	Carbohydrates	%	30.41	29.39	---
7.	Energy	Kcal/100gm	401.35	392.28	
8.	Foreign matter (by wt.)	%	Nil	0.16	< 1.0
9.	Other edible grains (by wt.)	%	Nil	Nil	< 6.0
10	Weevilled grains (by count)	%	Nil	2.0	< 10.0
11.	Damaged grains (by wt.)	%	4.95	18.0	< 5.0
12.	Uric Acid	mg/kg	Nil	Nil	< 100
13.	Aflatoxin	ug/kg	Absent	Absent	< 30.0

चित्तुर (आन्ध्र प्रदेश) सेन्टर के अन्तर्गत

किसानों के अनुभव (टीचर बहन : 09440420866)

1. हरिनाथ भाई, उम्र 55 वर्ष, चित्तुर

मैं काफी सालों से कृषि का व्यवसाय कर रहा हूँ। पिछले 10 साल से ज्ञान में चल रहा हूँ। हमारे यहाँ पर 100 एकड़ जमीन में किस्म-किस्म के आम के पेड़ हैं जैसेकि तोतापुरी आदि, तो जब से शाश्वत यौगिक खेती के बारे में सुना तो सन् 2012 में संकल्प आया कि बाबा के लिये हमारे गाँव में एक घर बनाकर सेवार्थ देना है। मैं अपनी खेती में हर रोज़ जाता था, गाँव से खेती लगभग 75 कि.मी. दूर होने के कारण एक ही बार 10 भाई-बहनों का ग्रुप आया था। वहाँ पर सबने मिलकरके एक घण्टा पॉवरफुल योग किया और संकल्प किया कि इस खेती की आमदनी से बाबा का घर बनेगा। फिर मैं रोज़ खेती में यही संकल्प दोहराता रहा। पूरी खेती में पेड़, पौधों को शान्ति का दान देता रहा। पवित्र ऊर्जा से वातावरण को शुद्ध शक्तिशाली बनाने का अनुभव किया। आम में जो कीट निर्माण होते थे वे इस बार नहीं हुए और अच्छे आम निकलें। बाबा का ही कमाल कहें या शाश्वत यौगिक खेती का कमाल कहें, पेड़ों को मेरी बात समझ में आयी और अच्छी भी लगी इसलिए कमाल की यानी उम्मीद से ज्यादा फसल मिली और उस साल आम के दाम भी बढ़ गये थे। फलों की क्वालिटी देखकर फैक्ट्री वालों ने अच्छे दामों में खरीदे। तो उसी वर्ष मैंने उन्हीं आमदनी से दो मंजिल का घर बनाकर बाबा की सेवा के लिए संस्था को समर्पित कर दिया। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ है कि पेड़-पौधे अपने मालिक से गहरा सम्बन्ध रखते हैं और सहयोग भी अच्छा देते हैं।

2. सेल्वी भाई, उम्र 65 वर्ष, चित्तुर

मैं तीन साल से ज्ञान में चल रहा हूँ। मेरा परिवार बहुत गरीबी में गुजर रहा था क्योंकि केवल कृषि पर आधारित है। 50-50 फुट का एक छोटा-सा जमीन है उसमें मैंने टमाटर बोये थे, तो शाश्वत यौगिक खेती के बारे में बहनों ने समझ दी। तब मैंने अच्छी तरह से समझ करके अटूट विश्वास के साथ काम किया और रोज़ योग करता रहा। गरीबी के कारण खेती में मैंने कुछ भी खर्चा नहीं किया, मैं अकेला ही काम करता था तो सचमुच कमाल है बाबा की, जो तीन गुना ज्यादा उपज मिली। तब से बाबा के ऊपर और इस शाश्वत यौगिक खेती की पद्धति पर मेरा विश्वास स्थिर हो गया। बाबा की कृपा से मेरी गरीबी दूर होती जा रही है। धन्यवाद।

3. गोपम्मा माता, उम्र 65 वर्ष, सालाबाद

मैं जि.कड़प्पा की निवासी हूँ, पिछले 10 सालों से ज्ञान में चल रही हूँ और मेरी बेटी खेती करती है, मेरे दामाद को बाबा पर इतना विश्वास नहीं है। पिछले साल 0.75 एकड़ की जमीन में रजनीगंधा लगाया है, बहुत यूरिया डाल रहे थे। फिर भी दिन में 2 किलो या 3 किलो फूल ही मिल रहे थे। मैंने यहाँ की बी.के.राजेश्वरी बहन को अपना यह सारा हाल बताया। तो वे स्कूल के लिये आते वक्त हर रोज़ यहाँ योग करने लगी। यही संकल्प था कि यहाँ के लोगों को बाबा का सन्देश देना है और यौगिक खेती के जरिए बाबा का कमाल दिखाना है। उपरोक्त योग विधि के साथ संकल्प करने लगी कि हे प्रकृति माता... मुझे सहयोग दो... 10 दिनों के बाद कमाल हुआ 5 किलो फूल निकले, फिर दिन-प्रतिदिन 6, 7, ऐसे 12 किलो तक फूल निकलने लगे। तो यह चमत्कार देख गाँव के सभी लोग आश्चर्यचकित होने लगे इसलिए इस बार भी हमने रजनीगंधा फूल ही लगाया है क्योंकि अब दामाद को भी बाबा पर विश्वास हो गया। इस बात के लिए मैं बहुत खुश हूँ, बाबा को बहुत-बहुत धन्यवाद।

4. जयम्मा बहन, उम्र 34 वर्ष, धनवंतरीपल्ली, जि. कड़प्पा

पिछले साल की बात है, हम ज्ञान में नहीं थे एक एकड़ जमीन में मौसम्मी की खेती कर रहे थे। पेड़ की ग्रोथ बहुत अच्छी थी, फूल भी निकलते थे लेकिन सवेरे-सवेरे देखते तो छोटी-छोटी केरी जमीन पर गिरी रहती, पेड़ पर एक केरी भी नहीं दिखाई देती थी। तो फोन पर एक वैज्ञानिक से सलाह लेकर मैं तरह-तरह के औषधियाँ इस्तेमाल करने लगी फिर भी निष्फल रही। एक दिन बी.के.राजेश्वरी बहन की सलाह से दशपर्णी अर्क बनाकर छिड़काव किया। जिस तरह से योग कॉमेन्ट्री हमको सिखायी गई, उसे रोज़ दोहराती रही। हर रोज़ माता जी खेती में बैठकर योग करती थी। बहन जी बहुत दूर रहती थी, वहीं से योग की सकाश दे रही थी। साइंटिस्ट ने कहा कि Some insect causing harm at early mornings. इसलिए हमने ज्वालामुखी योग का प्रयोग शुरू किया तो सचमुच कमाल है, तरह-तरह की रासायनिक दवाइयों से कुछ नहीं हुआ और योग के द्वारा उस रोग से छुटकारा मिल गया और फसल भी अच्छी निकली। अब हम ज्ञान में चल रहे हैं, इस बार हम यौगिक पद्धति से खेती करेंगे और योग का खेती पर प्रभाव अच्छा पड़े इसके लिए हमने मांसाहार छोड़ दिया है। गाँव में किसी को कुछ मदद चाहिए तो राजेश्वरी बहन के पास जाते हैं और योग की कॉमेन्ट्री सीखकर आते हैं, यह एक अद्‌भुत घटना है।

शाश्वत यौगिक शेती

बी.के. ज्ञानसौंदरी बहन

थंजावुर, तामिलनाडू (मो. 09442431859)

हमारे सेन्टर में आने वाले एक ईश्वरीय विद्यार्थी के घर के पीछे एक कटहल का बड़ा पेड़ था, 20 वर्ष से उस पेड़ में कोई फल नहीं लग रहा था इसलिए वह भाई इस पेड़ को कांटने वाला था। मैंने उसको कहा कि नहीं, इतने प्यार से पालना करके पेड़ को बढ़ाया है इसलिए इसे कांटो मत। अभी आप इस पेड़ के नीचे बैठ करके योग किया करो तो यह फल जरूर देगा। ऐसे कहते मैंने भी वहाँ बैठकर योग किया और बड़े प्यार से बाबा को याद कर अपने हाथ से पेड़ को वायब्रेशन देकर चली गयी, वो भाई वहाँ रोज़ योग करता रहा। थोड़े ही दिन में उस पेड़ में बहुत ही बड़े-बड़े कटहल के फल लगने लगे। उस किसान भाई का अन्दर ही अन्दर बहुत खुशी हुई और पहला कटहल का फल बाबा के घर ले आया और दिल से बाबा को धन्यवाद दिया।

बी.के. तेमसेन, यू.एन. (संयुक्त राष्ट्र)

इमेल : tamasin.ramsay@gmail.com

मैं हमेशा से ही आध्यात्म में रूचि रखती थी, और एक दिन मैं ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आई। और इस राजयोग केन्द्र के वातावरण की अलौकिकता मुझे पसंद आई, साथ ही बहनों के विचारों से मैं प्रभावित हुई। मैं समझती हूँ कि इस संस्था के सभी सदस्य मन्सा सेवा करते हैं। इससे एक आध्यात्मिक वातावरण बनता है। साथ ही मेरे कई प्रश्नों के मुझे तर्कसंगत किंतु अत्यंत गहन आध्यात्मिक उत्तर प्राप्त हुए। मुझे किसी संस्था से जुड़ना नहीं था लेकिन मैं आती रही, सहयोगी बनती रही और ऐसे ही 29 वर्ष कब बीत गये मालूम नहीं हुआ।

मैं सदा से ही प्रकृति प्रेमी रही हूँ। मैं जहाँ पली हूँ वहाँ सब्जियों का उत्पादन होता था और मैं स्वभाविक प्रकृति व पशु-पंछियों को प्यार करती थी। इसमें देखा गया है कि हमारे विचारों का बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है पर्यावरण पर। जब मैंने ग्राम विकास प्रभाग के बारे में सुना कि वे भारत के पारंपरिक गाँवों को संजोना चाहते हैं, क्योंकि यह भारत की जान है, आत्मा है। तो मैं इसमें रूचि लेने लगी क्योंकि मुझे पता था कृषि और भूमि के साथ समरसता से रहना चाहिए, ये मैंने बचपन से अनुभव किया हुआ था। फिर मुझे इस अध्ययन के बारे में पता चला, एक

शोधकर्ता के रूप से मुझे और दो नये प्रकार से रूचि आई। पहला तो मेरा खुद का कृषि के साथ सम्बन्ध था और दूसरा शोधकर्ता के रूप से भी अध्ययन को इकट्ठा करना भी आवश्यक था क्योंकि कैसे जैविक कृषि के साथ-साथ राजयोग/ध्यान के सभी पद्धतियों का समन्वेष किया जा सकता है। वैसे तो यह कोई नई बात नहीं है क्योंकि सन् 1960 में शोध किया गया था, प्रकृति पर्यावरण पर मानसिक तरंगों का क्या प्रभाव पड़ता है? किंतु आज के अति आधुनिक समय में इसका प्रयोग करना जबकि बहुत बड़ी चुनौती है। पूरे संसार के आहार आवश्यकता को सुधार करना बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। मुझे लगता है इन कारणों से ही मुझे इसमें रूचि हुई, भौतिकता व भावना का परस्पर सम्बन्ध और मन का धातु पर प्रभाव पड़ता है, इससे वास्तव में सुधार होता है।

पियारो नाम के एक भाई जो कि कृषक परिवार से हैं, वे भी ग्राम विकास प्रभाग से जुड़े हुए हैं और उन्होंने ये बातें समझकर रोम में यौगिक खेती की शुरूवात की। स्वीटज़रलैण्ड में भी अपने अपार्टमेन्ट की बालकनी में वे इसका प्रयोग कर रहे हैं। इस बार मैं ग्रीस गई थी तो वहाँ एक बहन थी, उन्होंने हमें फोटो भी भेजे थे दोनों पौधों के। एक जिसमें केवल जैविक खाद डाली थी और दूसरा जिसमें जैविक खाद और योग के प्रकम्पन दोनों फैलाये थे। तो एकदम स्पष्ट था और नतीजे खुद ही हमें बता रहे थे कि शाश्वत यौगिक खेती वाले पौधे में अधिक हरियाली थी, ज्यादा पत्ते थे, वह भी अच्छी सेहत के साथ। ऑस्ट्रेलिया में भी अभी यह शुरू कर रहे हैं। तो देखा गया कि किसी में उत्साह जगाना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन उत्साह को सहारा देना बड़ी बात है। लोग अभिभूत हैं, लोग स्वभाविक रीति से रूचि लेते हैं कि मन और प्रकृति का सीधा सम्बन्ध क्या है या भौतिक दुनिया और आध्यात्मिक दुनिया का क्या सम्बन्ध है? इतिहास में भी यह बातें देखने को मिली है। आप जानते ही होंगे महाराष्ट्र में किसानों की आत्महत्या की संख्या सबसे ज्यादा है - यह बहुत दु:खद है, परन्तु आश्चर्य की बात है कि यौगिक खेती की शुरूवात भी यहीं से ही हुई है। शाश्वत यौगिक खेती से किसान स्वस्थ तो रहता है, साथ-साथ उसका परिवार खुशहाल भी रहता है। जब परिवार को ऐसी मदद मिलती है तब पूरे समाज की मदद स्वत: होती है। फिर स्वास्थ्य पर भी इसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। किसान का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। यह पद्धति खर्चे को कम करने में भी बहुत मददगार है। लोग शुरू में इसे नहीं समझते लेकिन जब आप उन्हें धैर्य से समझाते हैं, शोध आदि बताते हैं तो उन्हें अधिक जानने का मन करता है।

बी.के. ज्योति बहन

बीजापुर , बेलगाम, कर्नाटक (मो. 09036876418)

मैं बचपन से इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ी हुई हूँ। सन् 2002 से ईश्वरीय सेवा में समर्पित हूँ। ईश्वर से जुड़कर मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझती हूँ क्योंकि इससे मेरे जीवन का हर पल सफल हो रहा है। केवल वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य भी उज्जवल हो रहा है।

ग्राम विकास प्रभाग के द्वारा चलाए गए किसान सशक्तिकरण अभियान का उद्घाटन 27-9-15 को बेलगाम से हुआ। इसमें बहुत नामीग्रामी लोगों ने भाग लिया जैसेकि मन्त्री सतीश जर्कीहोली, एम.पी. सुरेश अंगाडी, बाबागौडा पाटील, पूर्व केन्द्रिय मंत्री, ग्राम विकास और राजयोगिनी बी.के. अम्बिका दीदी आदि यहाँ से चार अभियान निकाले गये।

हमारे अभिमयान में हम 3 बहनें तथा 3 भाई थे। हमारे रथ को बहुत सुन्दर सजाया गया था। इसमें व्यसन-मुक्ति, स्वच्छ ग्राम, महिला सशक्तिकरण, जैसे अनेक पोस्टर लगाये गये थे। जैसे ही हम गाँव में पहुँचते थे तो वहाँ के नागरिक बहुत भावुक होकर पुष्प, तिलक, आरती तथा पैरों पर पानी डालकर नमन-वंदन करते हुए बैण्ड-बाजे के साथ हमारा भव्य स्वागत करते थे।

गाँव के कई लोग समझते थे कि ये सरकार की तरफ से बीज या खाद देने के लिए आये हैं। लेकिन जब हम शाश्वत यौगिक खेती के बारे में बोलना शुरू करते थे तब वे अनुभव करते थे कि अब तक जितनी भी प्रकार की क्रांतियाँ हो चुकी हैं उनसे नहीं बल्कि आध्यात्मिक क्रांति से किसानों का सम्पूर्ण सशक्तिकरण हो सकता है।

बारिश न होने के कारण तथा बहुत ज्यादा कर्जा लेने के कारण किसान निरूत्साहित थे। ज्ञान सुनकर वे समझे कि कोई भी मनुष्य हमारी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता है। केवल एक परमात्मा ही है जो सब समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। अनेकानेक समस्याओं वा परिस्थितियों के कारण लोग व्यसनों के अधीन हो रहे हैं। इनसे मुक्त होना चाहते हैं परन्तु नहीं हो पा रहे हैं। व्यसनमुक्ति के लिए हमने बताया कि कोई भी व्यसन एक विष है जो केवल व्यक्ति को ही नहीं अपितु उसके परिवार को भी दु:खी कर देता है। तम्बाकू ऐसा विष है जिसको चबाने से पूरे मुँह में कैन्सर हो जाता है तथा फेफड़े खराब हो जाते हैं। भले ही कम्पनियाँ बहुत जोर-शोर से विज्ञापन तो करती हैं परन्तु उसे खाने से जब कोई बीमार होता है तब कोई कम्पनी इलाज के लिये पैसा दे सकती है क्या? नहीं। तो क्यों पैसे के साथ-साथ हम स्वास्थ्य का

भी बलिदान दे रहे हैं? जब यह बात समझाई तो बहुत सारे लोगों ने नशा मुक्ति का वायदा भी किया।

एक छोटे-से गाँव में एक बुजुर्ग ने कहा कि पुराने समय में ग्वाले भी यदि कम्बल ऊपर फेंकते थे तो बारिश आनी शुरू हो जाती थी, इतनी ताकत थी उनके संकल्पों में परन्तु अब ऐसा क्यों नहीं हो रहा है, इसका क्या कारण है? हमने बताया कि पहले मनुष्य का मन बहुत शुद्ध, शान्त एवं सात्विक था। लेकिन आज के मनुष्यों का मन दूषित हो गया है इसलिए प्रकृति भी रूष्ट हो गयी है। अभी फिर से प्रकृति को शुद्ध और सात्विक बनायेंगे तो फिर से समय पर बारिश होगी। इन सबके साथ हम स्वच्छता तथा स्वास्थ्य के बारे में भी उनको समझाते थे, वे बहुत खुश होते थे।

गाँव में जाने से हमें वहाँ पर बच्चे, युवा, महिलायें, किसान, बुजुर्ग सब मिल जाते थे। उन सबको सहज रीति से एकत्रित करके आत्मा तथा सबके शिव पिता परमात्मा की पहचान देकर परिवर्तन के लिये मार्गदर्शन करते थे। हमने भी इस अभियान से बहुत कुछ सीखा, समझा। चार अभियानों के द्वारा 350 गाँवों में सन्देश पहुँचाया। हर गाँव से यही सुनने को मिला कि फिर से हमारे गाँव में आइये और हमें ज्ञान सुनाइये। इस प्रकार ये अभियान बहुत सफल रहे।

तपोवन, आबूरोड शाश्वत यौगिक खेती की तस्वीरें

यौगिक खेती हमारा विश्वास
मानव का होगा पूरा विकास

धरती माँ करती सबसे पुकार
यौगिक-जैविक खेती से अन्न करो तैयार

मेरे आंगन नाचे खुशी से मोर
लो आया यौगिक खेती का दौर

ग्राम विकास प्रभाग
स्वच्छता-सहयोग-समृद्धि

ग्राम विकास प्रभाग

राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रीसर्च फाउण्डेशन तथा प्रजापिता ब्रह्मा कुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय
अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय: पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

ब्र.कु. राजू
मुख्यालय संयोजक, ग्राम विकास प्रभाग
प्रजापिता ब्रह्मा कुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय
शान्तिवन-307 510 जिला सिरोही (राज.)
E-Mail : ruralwing@bkivv.org

ब्र.कु. सरला
राष्ट्रीय संयोजिका, ग्राम विकास प्रभाग
प्रजापिता ब्रह्मा कुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय
पीस पैलेस, जेल रोड, **मेहसाना-384002** (गुज.)
mehsana@bkivv.org